भारतीय अंक ज्योतिष और अष्टक वर्ग

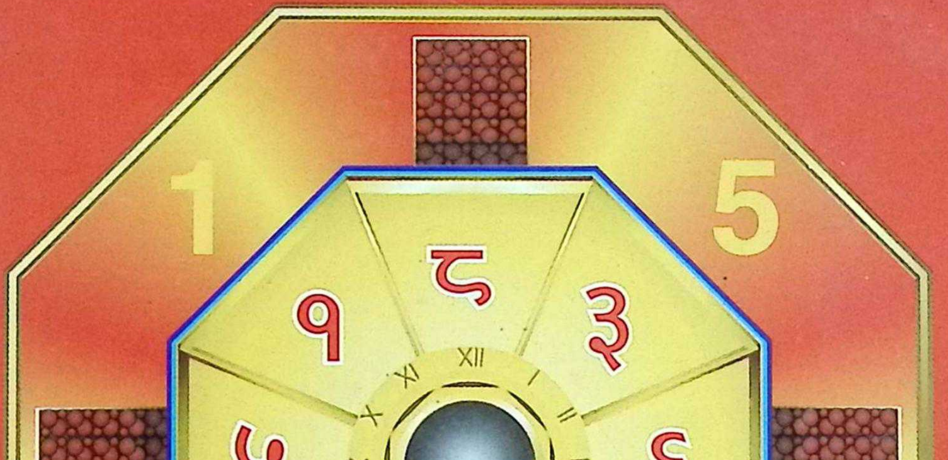

डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली

भारतीय अंक ज्योतिष और अष्टक वर्ग

साधारण गणित और एकदम सही भविष्य दर्शन, यह ऐसी विद्या है जिसके फल अनुमान पर नहीं, वास्तविकता पर आधारित होते हैं। ज्योतिष विद्या के प्रामाणिक विद्वान श्री 'श्रीमाली' की यह पुस्तक इतनी सरल और सहज है कि सामान्य पढ़ा-लिखा व्यक्ति भी अपने और अपने भविष्य के विषय में जान सकता है। आप भी जान लीजिए न।

हमारे ज्ञान तत्व सम्बन्धी
अन्य प्रकाशन

S–550 कौटिल्य अर्थशास्त्र

S–509 बोध कथाये

S–497 मनु स्मृति

S–362 हितोप्रदेश

S–348 पंचतंत्र

S–472 लोक व्यवहार, मैत्री कला और भाषण

S–473 विदुर नीति

S–474 सिंहासन बत्तीसी

S–441 चाणक्य सूत्र

S–391 चाणक्य नीति

S–430 वेताल कथाएं

S–409 भर्तृहरि शतक

S–398 जातक कथाएं–1

S–399 जातक कथाएं–2

S–750 तेनालीराम की कहानियां

S–768 नीति संग्रह

S–769 सर्वोत्तम सूक्तियाँ

S–779 कथासरित सागर

S–780 कथासरित सागर

भारतीय अंक ज्योतिष
और
अष्टक वर्ग

डॉ० नारायण दत्त 'श्रीमाली'

एकमात्र वितरक :
साहनी पब्लिकेशन्स
4777, डॉ0 मित्रा गली, रोशनारा रोड़, दिल्ली-7

प्रकाशक
साईं पॉकेट बुक्स,
मेन बजार, चौमूँ, जयपुर
7336, गांधी नगर, दिल्ली-31

एकमात्र वितरक :
साहनी पब्लिकेशन्स
4777, डॉ0 मित्रा गली,
रोशनारा रोड़, दिल्ली-7
दूरभाष : 23982006, 23970751

भारतीय कापीराइट एक्ट के तहत इस पुस्तक में प्रकाशित सामग्री एवं रेखाचित्रों के सर्वाधिकार प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं। कोई भी व्यक्ति/संस्था/समूह आदि इस पुस्तक की आंशिक या पूरी सामग्री किसी भी रुप में मुद्रित/प्रकाशित नहीं कर सकता। इस चेतावनी का उल्लंघन करने वाले को कानूनी तौर पर हर्जे-खर्चे व हानि में उत्तरदायी होंगे। सभी विवादों का न्यायक्षेत्र दिल्ली रहेगा।

E-mail : sahni@sahnipublications.com
Website : www.sahnipublications.com

मूल्य : 50.00 रुपये

संस्करण : 2004

लेजर : रावत कम्प्यूटर्स,
गांधी नगर, दिल्ली-31

मुद्रक : अरोड़ा ऑफसेट प्रेस

भारतीय अंक ज्योतिष 50/- रुपये

दो शब्द

भारतीय ज्योतिष में फलकथन हेतु जितनी भी विधियां हैं, उन सबसे मैं परिचित रहा हूं, और सभी विधियों को कसौटी पर कसने का प्रयत्न भी किया है। मेरे ज्योतिष जीवन का एक लम्बा समय इस प्रकार के कार्यों में व्यतीत ,हुआ है, मेरे संग्रह में सैकड़ों हजारों लाखों कुण्डलियां हैं, और उन सबसे मेरा निकट का परिचय रहा है। इसमें बुद्धिजीवी हैं तो श्रमजीवी भी, आदर्श के मानदण्ड स्थापित किये तो पतन की सीमाएं भी। राजनीतिज्ञ हैं, तो व्यापारी व्यवसायी भी दरिद्री निर्धन हैं, तो धनकुबेर भी। तात्पर्य यह कि लगभग सभी स्तर के, सभी मूल्यों से परिचित होने, एवं उनसे निकट सम्पर्क रखने का सौभाग्य मुझे मिला है।

हजारों लाखों पाठकों एवं मित्रों विद्वानों का आग्रह था, कि मैं 'अष्टकवर्ग' पर एक प्रमाणित पुस्तक लिखूं, जिसमें सूक्ष्म एवं सर्वांगपूर्ण विवेचन हो, तथा फलकथन की मौलिक पद्धति हो। इधर-उधर आने-जाने एवं अन्य लेखन कार्य में अत्यधिक व्यस्त रहते हुए भी इनकी आज्ञा शिरोधार्य कर अष्टकवर्ग पर जो पुस्तक लिखी वह आपके सामने प्रस्तुत है।

एक प्रकार से अष्टकवर्ग 'भारतीय अंक ज्योतिष' है, अतः जहां यह पुस्तक ज्योतिष प्रेमियों के लिए उपयोगी है, वहीं अंक ज्योतिषकारों (Numerologists) के लिए भी। उच्चस्तरीय विद्वान के लिए भी यह उतनी ही उपयोगी है, जितनी साधारण पढ़े-लिखे मजदूर के लिए। इस पद्धति के लिए मात्र जन्मकुण्डली ही पर्याप्त है, जिसके अंकों पर घटित कर हम सत्यफलकथन के सन्निकट पहुंचने में सक्षम हैं।

मैं प्रकाशक महोदय को धन्यवाद देता हूं, जिनके प्रयत्न से यह पुस्तक इतनी सुन्दर, सुसज्जित एवं शीघ्रता से पाठकों के हाथों में पहुंच सकी है।

एफ न्यू हाईकोर्ट कालोनी, —नारायण दत्त श्रीमाली
जयपुर (राजस्थान)

विषय-सूची

प्रवेश 12–14

अष्टवर्ग का महत्त्व। फलकथन के प्रकार। सर्वश्रेष्ठ प्रकार। लग्न विवेचन। लग्न को ग्रह के अनुसार महत्व क्यों? अष्टवर्ग का नामकरण। अष्टकवर्ग से लाभ। उदाहरण जन्म कुण्डली।

अष्टक वर्ग 14–41

अष्टक वर्ग। सूर्य। सूर्य का महत्व। जन्मकुण्डली में सूर्य अपने अष्टक वर्ग में कहां-कहां शुभफल प्रदान करता है। सूर्याष्टक रेखा योग।

चन्द्राष्टक वर्ग। चन्द्र का महत्व। जन्मकुण्डली में चन्द्र अपने अष्टक वर्ग में कहां-कहां शुभफल प्रदान करता है। चन्द्राष्टक रेखायोग।

भौमाष्टक वर्ग। भौम या मंगल। मंगल का महत्व। जन्मकुण्डली में मंगल अपने अष्टक वर्ग में कहां-कहां शुभफल प्रदान करता है। भौमाष्टक रेखायोग।

बुधाष्टक वर्ग। बुध। बुध का महत्व। जन्म कुण्डली में बुध अपने अष्टक वर्ग में कहां-कहां शुभफल प्रदान करता है। बुधाष्टक रेखायोग।

गुर्वष्टक वर्ग। गुरु। गुरु का महत्व। जन्मकुण्डली में गुरु अपने अष्टक वर्ग में कहां-कहां शुभफल प्रदान करता है। गुरु अष्टक रेखायोग।

शुक्राष्टक वर्ग। शुक्रा। शुक्रा का महत्व। जन्म कुण्डली में शुक्रा अपने अष्टक वर्ग में कहां-कहां शुभफल प्रदान करता है। शुक्राष्टक रेखायोग।

शन्याष्टक वर्ग। शनि। शनि का महत्व। जन्म कुण्डली में शनि अपने अष्टक वर्ग में कहां-कहां शुभफल प्रदान करता है। शन्याष्टक रेखायोग।

लग्नाष्टक वर्ग। लग्न। लग्न का महत्व। जन्म कुण्डली में लग्न अपने अष्टक वर्ग में कहां-कहां शुभफल प्रदान करता है। लग्नाष्टक रेखायोग।

समस्त ग्रहों का रेखायोग। उदाहरण जन्मकुण्डली पर घटित सूर्याष्टक, चन्द्राष्टक, भौमाष्टक, बुधाष्टक, गुर्वष्टक, शुक्राष्टक, शन्याष्टक एवं लग्नाष्टक। राश्यानुसार रेखायोग।

सर्वाष्टक वर्ग। रेखायोग। सर्वाष्टक वर्ग कुण्डली। रेखाफल, शून्य रेखा, एक, दो, तीन, चार, पांच, छः, सात, आठ, रेखाओं का पृथक-पृथक फल, फलकथन।

शोधन 41–58

त्रिकोण शोधन की आवश्यकता। शोधन से लाभ। त्रिकोण राशियां। चार त्रिकोण। प्रत्येक त्रिकोण की महत्ता। त्रिकोण, शोधनोपरांत सूर्याष्टक, शुक्राष्टक, शन्याष्टक, लग्नाष्टक। त्रिकोण शोधन के नियम। त्रिकोण शोधनोपरांत सर्वाष्टक वर्ग। त्रिकोण शोधनोपरांत सर्वाष्टक वर्ग कुण्डली।

एकाधिपत्य शोधन। एकापधित्य शोधन की अनिवार्यता। राशि। राशि-स्वामी।

एकाधिपत्य शोधन के नियम। एकाधिपत्य शोधनोपरांत सूर्याष्टक वर्ग, चन्द्राष्टक वर्ग भौमाष्टक वर्ग, बुधाष्टक वर्ग, गुर्वष्टक वर्ग, शुक्राष्टक वर्ग, शन्याष्टक वर्ग, लग्नाष्टक वर्ग, सर्वाष्टक वर्ग। एकाधिपत्य शोधनोपरांत सर्वाष्टक वर्ग कुण्डली।

गुणक 58–78

गुणक। गुणक की अनिवार्यता। प्रत्येक राशि के ज्योतिष सम्मत गुणक अंक। उदाहरण सूर्याष्टक, चन्द्राष्टक, मंगलाष्टक, बुधाष्टक, गुर्वष्टक, शुक्राष्टक, शन्याष्टक, लग्नाष्टक, सर्वाष्टक। राशिगुणक कुण्डली।

ग्रहगुणक। ज्योतिष सम्मत प्रत्येक ग्रह के गुणक अंक, गुणक अंक स्पष्ट करने के नियम। उदाहरण कुण्डली विवेचन ग्रह गुणक युक्त सूर्याष्टक, चन्द्राष्टक, भौमाष्टक, बुधाष्टक, गुर्वष्टक, शुक्राष्टक, शन्याष्टक, लग्नाष्टक, सर्वाष्टक वर्ग। ग्रहगुणक युक्त सर्वाष्टक कुण्डली। ग्रह गुणक बल । निष्कर्ष।

शोधन-चक्र सूर्याष्टक। शोधन चक्राष्टक। शोधन गुर्वष्टक। शोधन शुक्राष्टक। शोधन शन्याष्टक। शोधन लग्नाष्टक। शोधन सर्वाष्टक वर्ग।

भाव और ग्रह 78–83

भाव। भाव-विचार। द्वादश भाव। प्रत्येक भाव के पर्याय नाम। प्रत्येक भाव से विचारणीय विषय। सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि से विचारणीय विषय। विशेष अध्ययन। रेखाफल। निष्कर्ष।

सूर्याष्टक वर्ग 83–88

सूर्याष्टक वर्ग का महत्व। एक रेखा। दो रेखा। तीन रेखा फल। चार रेखा फल। पांच रेखा फल। छः रेखा फल। सात रेखाफल। आठ रेखा फल। सूर्याष्टक वर्ग में विचारणीय विषय। विशेष नियम। रेखा संख्या फल। स्वास्थ्य, पिता के विषय में जानकारी, पिता का मृत्यु समय ज्ञात करना, पिता से लाभ, सुख-दुख, पिता का भाग्योदय। पिता का एक्सीडेंट। शुभकार्य।

चन्द्राष्टक वर्ग 89–94

चन्द्राष्टक वर्ग का महत्व। रेखा अनुसार चन्द्रफल में परिवर्तन। गैस्टिक ट्रबल। जातक की आयु। मस्तिष्क शिथिलता। भाग्यहीनता। भाग्यवृद्धि। धन लाभ समय। कचि योग। माता के बारे में जानकारी। माता का शुभ समय। माता की मृत्यु तिथि ज्ञात करना। शुभकार्य समय। मतभेद। मातृ वियोग, पारिवारिक स्वजन मृत्यु। नक्षत्र नाम। विशेषफल। निष्कर्ष।

भौमाष्टक वर्ग 94–100

भौमाष्टक वर्ग का महत्व। रेखा अनुसार भौमफल में परिवर्तन। भाइयों से सहयोग। भाइयों की संख्या। भाइयों से सुख-दुख। धन प्रदायक योग। भूमियोग। कीर्तियोग। उच्चपद प्राप्ति समय। भाइयों की आयु। भाई-मृत्यु समय। मातृकष्ट समय। भाई की बाल्यावस्था में मृत्यु। सम्पत्ति लाभ। मातृ-सम्पत्ति सुख। राशि स्वभाव। भातृ विछोह। राजनीतिक सफलता। भातृ सुख न्यूनता। निष्कर्ष।

बुधाष्टक वर्ग 100–105

बुधाष्टक वर्ग का महत्व। रेखानुसार बुध फल में परिवर्तन। कुटुम्ब सुख। मामा सुख ननिहाल से लाभ या हानि। शिक्षा प्रसिद्ध, लेखन, कीर्ति आदि योग। सम्मान क्षति। वेदाध्ययन योग। ज्योतिष। योग उच्चतरीय सम्मान। ललित कलायोग। शिक्षा न्यूनता । उच्चपद प्राप्ति वाक्शक्ति। प्रत्येक ग्रह के संयोग से फल मे अन्तर। शुभफल प्राप्ति समय । आकस्मिक हानि, घाटा या दिवाला योग। श्रेष्ठ भाग्योदय समय निष्कर्ष।

गुर्वष्टक वर्ग 106–111

गुरु अष्टक वर्ग का महत्व । रेखानुसार गुरु फल में अन्तर। विद्वानयोग। दीर्घायु। प्रसिद्धि ख्याति, सम्मान। गजेटेड अधिकारी। सन्तान सुख। सन्तान हीनता। सन्तान बाधा। सन्तान के कार्यो से प्रसिद्धि। पुराजनीतिक सफलता। भातृ सुख न्यूनता। निष्कर्ष।

शुक्राष्टक वर्ग 112–116

शुक्राष्टक वर्ग का महत्व। रेखानुसार शुक्र फल में परिवर्तन। ऐश्वर्य योग। मान प्रतिष्ठा सम्मान योग। संगीत। परस्त्रीगामी। विवाह। कितने विवाह होंगे। विवाह कबहोगा ? रोमांस। पत्नी के रूपरंग स्वभाव आदि के बारे में जानकारी। चरित्र संदिग्धता। शयनपर्यक बिछाने की दिशा। राशियों की

दिशाएं। गृहस्थ जीवन। अंध पत्नी योग। सुसराल-दिशा। विवाह समय जानने की विधी। निष्कर्ष।

शनिअष्टक वर्ग 116–120

शन्याष्टक वर्ग का महत्व। रेखानुसार शनिफल में परिवर्तन। कंगाल योग। निर्धन योग। करोड़पति योग। एम0पी0 योग। मृत्युस्थान। मृत्यु किस रोग से होगी ? पागलपन। हिस्टीरिया। विवाह देरी से होने का कारण। विदेश यात्रा। कष्ट योग। जीवन मे कब कष्ट होगा ? मारक समय। निष्कर्ष।

सर्वाष्टक वर्ग 120–128

सर्वाष्टक वर्ग का महत्व। धनयोग। अपत्ययी योग। स्वास्थ्य योग। भाग्योदय योग। रेखानुसार भावफल। किस आयु में पूर्ण सुख मिलेगा। किस दिशा में व्यापार वृद्धि होगी। बाल्यावस्था, यौवनवस्था में से कौन-सी अवस्था कैसी रहेगी ? किस दिशा में भाग्योदय होगा। मंत्रीयोग। लखपति योग । निष्कर्ष।

आयु निर्णय 128–135

सही-सही उम्र ज्ञात करने की अचूक विधि। रेखानुसार आयु प्रदान। सूर्यष्टक, चन्द्राष्टक, भौमाष्टक, बुधाष्टक। गुर्वष्टक, शुक्राष्टक, शन्याष्टक, लग्नाष्टक किस प्रकार आयु देते हैं ? आयु योग। आयु संशोधन। सही-सही आयु ज्ञात करना। निष्कर्ष।

दशा विवेचन 135–143

अष्टक वर्ग दशा। सूर्याष्टक, चन्द्राष्टक, भौमाष्टक, बुधाष्टक, गरू अष्टक, शुक्राष्टक, शन्याष्टक दशा। दशापुष्ट नियम। विशेष जानकारी। सूर्य दशा ज्ञात करना। चन्द्र दशा, भौम दशा, बुधदशा, गुरुदशा, शुक्रदशा, शनिदशा। दशा निर्णय की दूसरी विधि। अन्तरदशा। दशाफल। तीसरी विधि। फलादेश। निष्कर्ष।

गोचर 143–162

गोचर। गोचर का तात्पर्य। गोचर में चन्द्रलग्न से किन-किन

स्थानों पर ग्रहों की शुभाशुभता। सूर्य शुभगोचर स्थान। वेध स्थान। सूर्य पर विशेष विचार। चन्द्र शुभ गोचर गोचरस्थान। वेध स्थान। मगंल शुभ गोचर स्थान। वेधस्थान। गुरु शुभ गोचर स्थान। वेधस्थान। शुक्र शुभ गोचर स्थान। वेधस्थान। शनि शुभ गोचर। वेधस्थान।

सूर्य का द्वादश राशियों में भ्रमण एवं राश्यानुसार फल।
चंद्र का द्वादश राशियों में भ्रमण एवं राश्यानुसार फल।
मंगल का द्वादश राशियों में भ्रमण एवं राश्यानुसार फल।
बुध का द्वादश राशियों में भ्रमण एवं राश्यानुसार फल।
गुरु का द्वादश राशियों में भ्रमण एवं राश्यानुसार फल।
शुक्र का द्वादश राशियों में भ्रमण एवं राश्यानुसार फल।
शनि का द्वादश राशियों में भ्रमण एवं राश्यानुसार फल।
राहु का द्वादश राशियों में भ्रमण एवं राश्यानुसार फल।

सूर्य रेखाफल	चंद्र रेखाफल
भौम रेखाफल	बुध रेखाफल
गुरु रेखाफल	शनि रेखाफल

ग्रहों का विशेष प्रभाव। प्रत्येक ग्रह शरीर के किस भाग में रोग प्रदान कर सकते हैं। सूर्य विशेष विचार। चंद्र विशेष विचार। भौम विशेष विचार। बुध विशेष विचार। गुरु विशेष विचार। शुक्र विशेष विचार। शनि विशेष विचार। निष्कर्ष।

राहु अष्टक वर्ग 163–165

राहु अष्टक वर्ग। मनामत। राहु के शुभ स्थान। राहु भ्रमण फल–राश्यानुसार।

उपग्रह 165–174

उदाहरण 175–177

नक्षत्र 178–190

नक्षत्रानुसार फल 191–198

प्रवेश

ज्योतिष का क्षेत्र अपने आप में एक विस्तृत क्षेत्र है, जिसे समझने के लिए ज्योतिर्विदों एवं विद्वानों नें कई विधियां निकाली हैं, जिससे कि सही एवं प्रामाणिक फलकथन किया जा सके।

फलकथन के लिए मुख्यरूप से तीन विधियां प्रचलित हैं–1. जन्म कुण्डली द्वारा, 2. चन्द्र कुण्डली द्वारा, 3. नवांश कुण्डली द्वारा।

जन्म कुण्डली से शरीर, शारीरिक स्थितियां आदि का विचार किया जाता हैं, जन्म राशि से व्यक्ति की मानसिक स्थितियों का ज्ञान किया जा सकता हैं, एवं नवांश कुण्डली से उसके जीवन की विभन्न समस्याओं का हल जाना जाता हैं।

जन्म राशि द्वारा जो भी फलकथन किया जाता हैं, वह स्थूल होता हैं, इसकी सूक्ष्मता के लिए गोचर पद्धति का आश्रय लिया जाता हैं, परंतु गोचर पद्धति भी अपने आप में स्थूल पद्धति हैं, मगर चुंकि यह आवश्यकता हैं, अतः इसे सूक्ष्मातिसूक्ष्म समझने के लिए 'अष्टकवर्ग' विधि अपनाई जाती हैं।

भारतीय ज्योतिष शास्त्र में मूलरूप से सात ग्रह–सूर्य, मंगल, बुघ, गुरु, शुक्र और शनि–ही माने हैं, पर इसके साथ ही माने जाते हैं, पर इसके साथ ही ज्योतिर्विदों ने लग्न को भी उतनी ही मान्यता दी, जितनी सूर्यादि ग्रह को । इस प्रकार उन्होंने सूर्यादि ग्रह को । इस प्रकार उन्होंने सूर्यादि सातग्रह और लग्न, इस प्रकार इन आठों की विवेचना को अष्टकवर्ग की संज्ञा दी ।

इस अष्टकवर्ग में सूर्य कूण्डली को सूर्याष्टक वग, चन्द्रकुण्डली को चन्द्राष्टक वर्ग। मंगल कुण्डली को मंगलाष्टक वर्ग, बुध कुण्डली को बुधाष्टक वर्ग, गुरु कुण्डली गुरु अष्टकवर्ग, शुक्र कुण्डली को शुक्राष्टक वर्ग, शनि कुण्डली को शनिअष्ट वर्ग

तथा लग्न कुण्डली को लग्नअष्टक वर्ग कहते हैं । इन आठों अष्टक वर्ग को सार्वाष्टक वर्ग कहते हैं।

जब हम सूर्याष्टक वर्ग कहते हैं, तो इसका अर्थ यह होता है कि सम्बन्धित में जन्मकुण्डली में सूर्य की क्या स्थिति है? उसका कितना बल है? और उसका अन्य ग्रहों से क्या सम्बन्ध है? परन्तु इसके साथ ही यह भी आवश्यक है कि इस वैज्ञानिक ढंग से समझें और मात्र प्राचीन रूढ़िग्रस्त नियमों के आधार पर ही इसका न तो विवेचन करें, न ही फलादेश करें।

आयु निर्णय में अष्टक वर्ग पद्धति ही प्रामाणिक मानी गई है, मेरी दृष्टि में अष्टक वर्ग का उपयोग जीवन की किसी घटना को ज्ञात करने एवं उसका सही-सही काल निर्णय में किया जा सकता है। उदाहरणार्थ मेष लग्न की कुण्डली में यदि शुक्र दूसरे भाव में स्थित हो, यह स्वतः ही एक धन प्रदायक योग है, क्योंकि ऐसी स्थिति में शुक्र स्वराशि का होकर धनभाव में स्थित होगा, तथा धनभाव का कारण ग्रह धनभाव (दूसरा भाव) में होने से विशेष धन प्रदायक भी बनेगा।

पर इस प्रकार का योग होने पर भी कई बार ऐसा देखा गया है कि व्यक्ति सामान्य जीवन यापक है, धनी नहीं है। मेरे केन्द्र के शोध विभाग में इस विभाग में दो व्यक्तियों की मेष लग्न की कुण्डलियां ली गई, तथा दोनों ही व्यक्तियों की कुण्डलियों में शुक्र दूसरे भाव में स्वराशिस्थ था, जबकि इन दोनों में एक दरिद्र या लगभग सामान्य जीवन व्यतीत कर रहा था, जबकि दूसरा लाखों में खेल रहा था।

इस गुत्थी को केवल अष्टक वर्ग ही सुलझा सका, दोनों की कुण्डलियों के अष्टक वर्ग स्पष्ट किए गए, तथा दोनों का शुक्राष्टक वर्ग देखा तो गुत्थी स्पष्ट हो गई, एक कुण्डली में शुक्र मात्र एक शुभ बिन्दु ही था, जबकि दूसरी कुण्डली में शुक्र के पास आठ शुभ बिन्दु थे।

इस प्रकार अष्टक वर्ग से प्रत्येक ग्रह की शुभाशुभता एवं ०नके बल को, उसके कारकत्व को ज्ञात किया जा सकता है, तथा तदनुरूप फल स्पष्ट किया जा सकता है।

अष्टक वर्ग में बिन्दु एवं रेखा इन दो प्रतीकों का उपयोग किया जाता है। कुछ विद्वान शुभता के लिए बिन्दु का प्रयोग करते हैं, और कुछ विद्वान रेखा का। मेरी राय में शुभता के लिए रेखा का उपयोग करना चाहिए, क्योंकि बिन्दू शून्य का पर्याय है, जबकि रेखा उपस्थिति का, अतः शुभता के लिए रेखा का तथा अशुभता प्रदर्शित करने के लिए बिन्दु का उपयोग किया जाना चाहिए।

आगे के पृष्ठों में अष्टक वर्ग को भली-भांति समझने के लिए एक उदाहरण जन्मकुण्डली का उपयोग किया जा रहा है, जिस पर कि अष्टक वर्ग प्रत्येक ग्रह के-स्पष्ट किये जायेंगं, वह जन्मकुण्डली निम्न है-

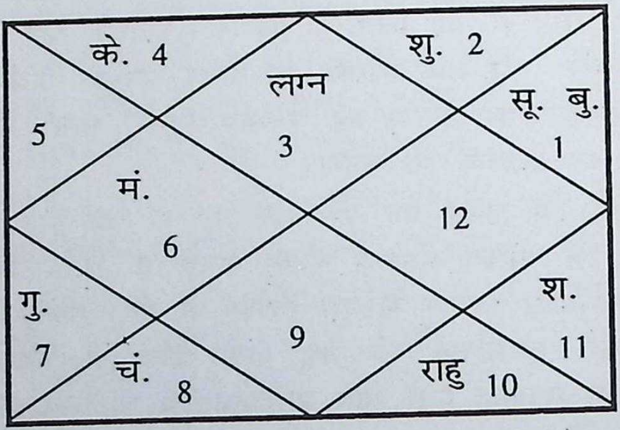

उदाहरण जन्मकुण्डली

अष्टक वर्ग

जन्मकुण्डली में प्रत्येक ग्रह अपने स्थान से आगे कुछ विशेष स्थानों पर ही शुभरेखा देता है, इसमें यह स्थान रखना चाहिए कि प्रत्येक ग्रह का अष्टक वर्ग बनाते समय गणना इस ग्रह से प्रारम्भ करनी चाहिए।

नीचे प्रत्येक ग्रह कहां-कहां शुभ रेखा प्रदान करता है, उसे स्पष्ट किया जा रहा है-

सूर्य

सूर्य अष्टक वर्ग में सूर्य अपने स्थान से 1, 2, 4, 7, 8, 9, 10 तथा 11 वें भाव में रेखा देता है।

चन्द्र अपने स्थान से 3, 6, 10 तथा 11वें भाव में रेखा देता है।

मंगल अपने स्थान से 1, 2, 4, 7, 8, 9, 10 तथा 11वें भाव में रेखा देता है।

बुध अपने स्थान से 3, 5, 6, 9, 10, 11 तथा 12वें भाव में रेखा देता है।

गुरु अपने स्थान से 5, 6, 9 तथा 11वें भाव में रेखा प्रदान करता है।

शुक्र अपने स्थान से 6, 7 तथा 12वें भाव पें रेखा देता है।

शनि अपने स्थान से 1, 2, 4, 7, 8, 9, 10 तथा 11वें भाव में रेखा देता है।

लग्न अपने स्थान से 3, 4, 6, 10, 11 तथा 12वें भाव में रेखा प्रदान करता है।

सूर्य की कुल रेखाओं का योग 48 होता है।

स्पष्टता के लिए सूर्याष्टक वर्ग में प्रत्येक ग्रह अपने-अपने स्थानों से कहां-कहां रेखा प्रदान करते हैं, उसे स्पष्ट कर रहे हैं-

चन्द्राष्टक वर्ग

रेखायोग 48

सर्य	1, 2, 4, 7, 8, 9, 10, 11
चंद्र	3, 6, 10, 11
मंगल	1, 2, 4, 7, 8, 9, 10, 11, 12
बुध	3, 5, 6, 9, 10, 11, 12
गुरु	5, 6, 7, 11
शुक्र	6, 7, 11

शनि	1, 2, 4, 7, 8, 9, 10, 11
लग्न	3, 4, 6, 10, 11, 12

चंद्र

चंद्र अष्टक वर्ग में चन्द्रमा अपने स्थान से 1, 3, 6, 10 तथा 11 वें स्थान को शुभ कर देता हैं ।

मंगल अपने स्थान से 2, 3, 5, 6, 9, 10 तथा 11 वें स्थान को रेखा देता हैं ।

बुध अपने स्थान से 1, 3, 4, 5, 7, 8, 10 तथा 11 वें स्थान को शुभ रेखा प्रदान करता हैं ।

गुरु अपने स्थान से 1, 4, 7, 8, 10, 11 तथा 12 वें स्थान को रेखा देता हैं ।

शुक्र अपने स्थान से 3, 4, 5, 7, 9, 10 तथा 11 वें स्थान को रेखा देता हैं ।

शनि अपने स्थान से 3, 5, 6 तथा 11 वें स्थान को रेखा देता हैं ।

लग्न अपने स्थान से 3, 6, 10 तथा 11 वें स्थान को रेखा देता हैं ।

सूर्य अपने स्थान से 3, 6, 7, 8, 10 तथा 11 वें स्थान को रेखा प्रदान करता हैं ।

स्पष्टता के लिए नीचे चन्द्राष्टक वर्ग स्पष्ट किया जा रहा है–

चन्द्राष्टक वर्ग

रेखायोग 49

चन्द्र–	1, 3, 6, 7, 10, 11
मंगल–	2, 3, 5, 6, 9, 10, 11
बुध–	1, 3, 4, 5, 7, 8, 10, 11
गुरु–	1, 4, 7, 8, 10, 11, 12
शुक्र–	3, 4, 5, 7, 9, 10, 11

शनि-	3, 5, 6, 11

लग्न-	3, 6, 10, 11

सूर्य-	3, 6, 7, 8, 10, 11

मंगल

मंगल अष्टक वर्ग में अपने स्थान से 1, 2, 4, 7, 8, 10 तथा 11 वे भाव में रेखा देता हैं ।

बुध अपने स्थान से 3, 5, 6 तथा 11 वें भाव में रेखा देता हैं।

गुरु अपने स्थान से 10, 11 तथा 12 वें स्थान पर देता हैं।

शुक्र अपने स्थान से 6, 8, 11, तथा 12, वें भाव में रेखा देता हैं।

शनि अपने स्थान से 1, 4, 7, 8, 9, 10, तथा 11 वें स्थान को रेखा देता हैं।

लग्न अपने स्थान से 1, 3, 6, 10, तथा 11 वें भाव में रेखा देता हैं।

सूर्य अपने स्थान के 3, 5, 6, 10, तथा 11 वें स्थान को रेखा देता हैं।

चन्द्र अपने स्थान से 3, 6, तथा 11 वें स्थान को रेखा देता हैं।

स्पष्टता के लिए मंगल अष्टक वर्ग में प्रत्येक ग्रह किस-किस स्थान को रेखा देते हैं, उसे स्पष्ट किया जा रहा हैं-

मंगल अष्टक वर्ग

रेखा योग 39

मंगल-	1, 2, 4, 7, 8, 10, 11

बुध-	3, 5, 6, 11,

गुरु-	6, 10, 11, 12

शुक्र-	6, 8, 11, 12

शनि–	1, 4, 7, 8, 9, 10, 11
लग्न–	1, 3, 6, 10, 11
सूर्य–	3, 5, 6, 10, 11
चन्द्र–	3, 6,11

बुध

बुध अष्टक वर्ग में बुध अपने स्थान से 1, 3, 5, 6, 9, 10, 11, और 12 वें स्थान में रेखा देता हैं।

गुरु अपने स्थान से 6, 8, 11, 12, वें स्थान में रेखा देता हैं।

शुक्र अपने स्थान में 1, 2, 3, 4, 5, 8, 9, और 11 वें स्थान में शुभ रेखा प्रदान करता हैं।

शनि अपने स्थान से 1, 2, 4, 7, 8, 9, 10, और 11 वें स्थान में रेखा देता हैं।

लग़्न अपने स्थान से 1, 2, 4, 6, 8, 10, 11 वें स्थान में रेखा देता हैं।

सूर्य अपने स्थान से 5, 6, 9, 10, 11 वें स्थान में रेखा देता हैं।

चन्द्र अपने स्थान से 2, 4, 3, 8, 10, 11 वें स्थान में रेखा देता हैं।

मंगल अपने स्थान से 1, 2, 4, 7, 8, 9, 10, 11 वें स्थान में रेखा देता हैं।

बुध अष्टक वर्ग में कौन ग्रह कहां-कहां रेखा देता हैं, स्पष्टता के लिए नीचे दिया जा रहा हैं।

बुध अष्टक वर्ग

रेखायोग 54

बुध–	1, 3, 5, 6, 9, 10, 11, 12
गुरु–	6, 8, 11, 12
शुक्र–	1, 2, 3, 4, 5, 8, 9, 11

शनि-	1, 2, 4, 7, 8, 9, 10, 11
लग्न-	1, 2, 4, 6, 8, 10, 11
सूर्य-	5, 6, 9, 11, 12
चन्द्र-	2, 4, 6, 8, 10, 11
मंगल-	1, 2, 4, 7, 8, 9, 10, 11

गुरु

गुरु अष्टक वर्ग में गुरु अपने स्थान से 1, 2, 3, 4, 7, 8, 10, और 11 वें स्थान में रेखा देता हैं।

शुक्र अपने स्थान से 2, 5, 6, 9, 10 और 11 वें स्थान में रेखा देता हैं।

शनि अपने स्थान से 3, 5, 6, 12 वें स्थान में रेखा देता हैं।

लग्न अपने स्थान से 1, 2, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 10, 11 वें स्थान में रेखा देता हैं।

सूर्य अपने स्थान से 1, 2, 3, 4, 7, 8, 9, 10, 11 वें स्थान में रेखा देता हैं।

चन्द्र अपने स्थान से 2, 5, 7, 9, 11 वें स्थान में रेखा देता हैं।

मंगल अपने स्थान से 1, 2, 4, 7, 8, 10, 11 वें स्थान में रेखा देता हैं।

बुध अपने स्थान से 1, 2, 4, 5, 6, 9, 10, 11 वें स्थान में रेखा देता हैं।

गुरु अष्टक वर्ग में कौन ग्रह कहां-कहां रेखा देता हैं, स्पष्टता के लिए निम्न देखिए-

गुरु अष्टक वर्ग

रेखा योग 56

गुरु-	1, 2, 3, 4, 7, 8, 10, 11,
शुक्र-	2, 5, 6, 9, 10, 11

शनि-	3, 5, 6, 12
लग्न-	1, 2, 4, 5, 6, 7, 9, 10, 11
सूर्य-	1, 2, 3, 4, 7, 8, 9, 10, 11
चन्द्र-	2, 5, 7, 9, 11
मंगल-	1, 2, 4, 7, 8, 10, 11
बुध-	1, 2, 4, 5, 6, 9, 10, 11

शुक्र

शुक्र अष्टक वर्ग में शुक्र अपने स्थान से 1, 2, 3, 4, 5, 8, 9, 10, 11 वें स्थान में रेखा देता हैं।

शनि अपने स्थान से 3, 4, 5, 8, 9, 10, 11 वें स्थान में रेखा देता हैं।

लग्न अपने स्थान से 1, 2, 3, 4, 5, 8, 9, 11 वें स्थान में रेखा देता हैं।

सूर्य अपने स्थान से 8, 11, 12 वें स्थान में रेखा देता हैं।

चन्द्र अपने स्थान से 1, 2, 3, 4, 5, 8, 9, 11, 12 वें भाव में रेखा देता हैं।

मंगल अपने स्थान से 3, 5, 6, 9, 11, 12 वें स्थान को रेखा देता हैं।

बुध अपने स्थान से 3, 5, 6, 9, 11 वें स्थान में रेखा देता हैं।

गुरु अपने स्थान से 5, 8, 9, 10, 11 वें स्थान में रेखा देता हैं।

शुक्र अष्टक वर्ग में कौन ग्रह कहां-कहां रेखा देता हैं, स्पष्टता के लिए निम्न देखिए-

शुक्र अष्टक वर्ग

रेखायोग 52

शुक्र-	1, 2, 3, 4, 5, 8, 9, 10, 11

शनि-	3, 4, 5, 8, 9, 10, 11
लग्न-	1, 2. 3, 4, 5, 8, 9, 11
सूर्य-	8, 11, 12
चन्द्र-	1, 2, 3, 4, 5, 8, 9, 11, 12
मंगल-	3, 5, 6, 9, 11, 12
बुध-	3, 5, 6, 9, 11
गुरु-	5, 8, 9, 10, 11.

शनि

शनि अष्टक वर्ग में शनि अपने स्थान से 3, 5, 6, 11 वें स्थान में रेखा देता हैं ।

लग्न अपने स्थान से 1, 3, 4, 6, 10, 11 वें स्थान में रेखा देता हैं।

सूर्य अपने स्थान से 1, 2, 4, 7, 8, 10, 11 वें स्थान में रेखा देता हैं।

चन्द्र अपने स्थान से 3, 6, 11 वें स्थान में रेखा देता हैं।

मंगल अपने स्थान से 3, 5, 6, 10, 11, 12 वें स्थान में रेखा देता हैं।

बुध अपने स्थान से 6, 8, 9, 10, 11, 12 वें स्थान में रेखा देता हैं।

गुरु अपने स्थान से 5, 6, 11, 12 वें स्थान में रेखा देता हैं।

शुक्र अपने स्थान से 6, 11, 12 वें स्थान में रेखा देता हैं।

शनि अष्टक वर्ग में कौन ग्रह अपने स्थान से कहां-कहां रेखा देता हैं, इसका विवरण नीचे दिया जा रहा हैं-

शनि अष्टक वर्ग

रेखायोग 39

शनि-	3, 5, 6, 11
लग्न-	1, 3, 4, 6, 10, 11

सूर्य- 1, 2, 4, 7, 8, 10, 11

चन्द्र- 3, 6, 11

मंगल- 3, 5, 6, 10, 11, 12,

बुध- 6, 8, 9, 10, 11, 12,

गुरु- 5, 6, 11, 12,

शुक्र- 6, 11, 12

लग्न

लग्न अष्टक वर्ग में लग्न अपने स्थान से 3, 6, 10, 11 वें स्थान में रेखा देता हैं।

सूर्य अपने स्थान से 3, 4, 6, 10, 11, 12 वें स्थान में रेखा देता हैं।

चन्द्र अपने स्थान से 3, 6, 10, 11 वें स्थान में रेखा देता हैं।

मंगल अपने स्थान से 1, 3, 6, 10, 11 वें स्थान में रेखा देता हैं।

बुध अपने स्थान से 1, 2, 4, 6, 8, 10, 11 वें स्थान में रेखा देता हैं।

गुरु अपने स्थान से 1, 2, 4, 5, 6, 7, 9, 10, 11 वें स्थान में रेखा देता हैं।

शुक्र अपने स्थान से 1, 2, 3, 4, 5, 8, 9, 11 वें स्थान में रेखा देता हैं।

शनि अपने स्थान से 1, 3, 4, 6, 10, 11वें स्थान में रेखा देता है।

स्पष्टता के लिए विवरण नीचे दिया जा रहा है-

लग्न अष्टक वर्ग

रेखायोग 49

लग्न- 3, 6, 10, 11

सूर्य- 3, 4, 6, 10, 11, 12

चंद्र- 3, 6, 10, 11

मंगल- 1, 3, 6, 10, 11

बुध- 1, 2, 4, 6, 8, 10, 11

गुरु- 1, 2, 4, 5, 6, 7, 9, 10, 11

शुक्र- 1, 2, 3, 4, 5, 8, 9, 11

शनि- 1, 3, 4, 6, 10, 11

ऊपर जो सात ग्रह एवं लग्न आठों के जो अष्टक वर्ग बताया है, उस सब का रेखा योग निम्न है-

सूर्य अष्टक वर्ग-48

चन्द्र अष्टक वर्ग-49

मंगल अष्टक वर्ग-39

बुध अष्टक वर्ग-54

गुरु अष्टक वर्ग-56

शुक्र अष्टक वर्ग-52

शनि अष्टक वर्ग-39

लग्न अष्टक वर्ग-49

इन सबका कुल योग 386 होता है, अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति की जन्म कुण्डली में शुभ रेखा योग 386 ही होगा।

अब आगे उदाहरण कुंण्डली (जो पीछे दी गई है) के माध्यम से समझने का प्रयत्न किया जायेगा, कि किस प्रकार जन्मकुण्डली से प्रत्येक ग्रह के रेखाष्टक बनते हैं।

जानकारी के लिए उदाहरण जन्मकुण्डली पुनः पृष्ठ 23 पर दे रहा हूं।

निम्नायुक्त जन्मकुण्डली में लग्न मिथुन राशि का है। सूर्य मेष राशि में, चन्द्र वृश्चिक राशि में, मंगल कन्या राशि में, बुध मेष राशि में, गुरु तुला राशि में, शुक्र वृष राशि में तथा शनि कुंभ राशि में है।

इस जन्मकुण्डली को आधार बनाने पर सूर्य अष्टक वर्ग इस प्रकार बनाया जायेगा।

सूर्य अष्टक वर्ग में सूर्य अपने स्थान से 1, 2, 4, 7, 8, 9, 10 तथा 11वें स्थान को रेखा देता है-

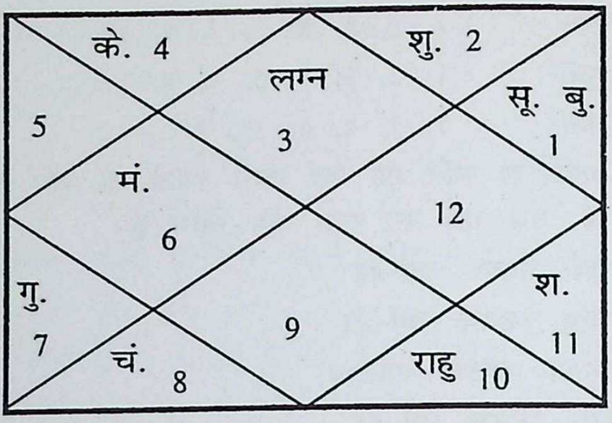

चूंकि सूर्य मेष राशि में है, अतः पहली रेखा मेष को (1) दूसरी रेखा वृष को (2) तीसरी रेखा कर्क को (4) चौथी रेखा तुला को (7) पांचवी रेखा वृश्चिक को (8) छठी रेखा धनु को (9) सातवीं रेखा मकर को (10) तथा आठवीं रेखा कुंभ (11) को देगा, जिसका कि चित्र इस प्रकार बनेगा-

सूर्याष्टक वर्ग

सूर्य से—

राशि	रेखा
1	।
2	।
3	0
4	।
5	0
6	0
7	।
8	।

9	1
10	1
11	1
12	0

चन्द्र से

उदाहरण जन्मकुण्डली वृश्चिक राशि में है, और चंद्रमा सूर्याष्टक वर्ग में 3, 6, 10, 11वें स्थान में रेखा देता है, अतः चन्द्र मकर (3) मेष (6) सिंह (10) कन्या (11) में रेखा देगा, अतः चन्द्र से गणना करने पर रेखाएं इस प्रकार दी जायेगी–

राशि	रेखा
1	1
2	0
3	0
4	0
5	1
6	1
7	0
8	0
9	0
10	1
11	0
12	0

मंगल से

चूंकि मंगल कन्या राशि में है, और सूर्याष्टक वर्ग में मंगल 1, 2, 4, 7, 8, 9, 10, 11वें स्थानों पर रेखा देता है, अतः कन्या से गणना करने पर कन्या (1) तुला (2) धनु (4) मीन (7) मेष (8) वृष (9) मिथुन (10) कर्क (11) राशियों में ही रेखा देगी, अतः मंगल से गणना करने पर रेखाएं इस प्रकार दी

जाएगी–

राशि	रेखाएं
1	।
2	।
3	।
4	।
5	0
6	।
7	।
8	0
9	।
10	0
11	0
12	।

बुध से

बुध जन्म कुण्डली में मेष राशि में है और सूर्याष्टक वर्ग में बुध 3, 5, 6, 9, 10, 11, 12वें स्थानों में रेखा देता है, इस प्रकार मेष से गणना करने पर मिथुन (3) सिंह (5) कन्या (6) धनु (9) मकर (10) कुम्भ (11) तथा मीन (12) में रेखाएं दी जाएगी। अतः बुध से गणना करने पर रेखाएं इस प्रकार दी जाएगी।

राशियां	रेखाएं
1	0
2	0
3	।
4	0
5	।
6	।

7	0
8	0
9	0
10	।
11	।
12	।

गुरु से

जन्म कुण्डली में गुरु तुला राशि में है, तथा सूर्याष्टक वर्ग में गुरु 5, 6, 9, 11वें स्थान में रेखा देता है, अतः तुला से गणना करने पर कुंभ (5) मीन (6) मिथुन (9) सिंह (11) राशियों में रेखा दी जाएगी, तब रेखा चक्र निम्न प्रकारेण होगा।

राशि	रेखा
1	0
2	0
3	।
4.	0
5	।
6	0
7	0
8	0
9	0
10	0
11	।
12	।

शुक्र से

जन्मकुण्डली में शुक्र वृष राशि में है, तथा सूर्याष्टक वर्ग में शुक्र 6, 7, 12वें स्थानों में रेखा देता हैं, इस प्रकार तुला (6)

वृश्चिक (7) तथा मेष (11) राशियों को ही रेखा मिलेगी, एवं रेखा चक्र इस प्रकार बनेगा–

राशि	रेखा
1	।
2	0
3	0
4	0
5	0
6	0
7	।
8	।
9	0
10	0
11	0
12	0

शनि से

जन्म कुण्डली में शनि कुंभ राशि में है, तथा सूर्याष्टक वर्ग में शनि 1, 2, 4, 7, 8, 9, 10, 11 स्थानों पर रेखा देता है, इस प्रकार कुंभ से गणना करने पर कुंभ (1) मीन (3) वृष (4) सिंह (7) कन्या (8) तुला (9) वृश्चिक (10) धनु (11) राशियों में रेखा दी जाएगी।

राशि	रेखा
1	0
2	।
3	0
4	0
5	।
6	।

7	I
8	I
9	I
10	0
11	I
12	I

लग्न से

सूर्याष्टक वर्ग में लग्न अपने स्थान से 3, 4, 6, 10, 11, 12 स्थानों पर रेखा देता है, चूंकि लग्न मिथुन है, अतः मिथुन से गणना करने पर सिंह (3) कन्या (4) वृश्चिक (6) मीन (10) मेष (11) वृष (12) में रेखाएं दी जायेंगी, इस प्रकार देखने पर रेखा विवरण इस प्रकार होगा–

राशि	रेखाएं
1	I
2	I
3	0
4	0
5	I
6	I
7	0
8	I
9	0
10	0
11	0
12	I

ऊपर के पृष्ठों में सूर्याष्टक वर्ग के अन्तर्गत सभी ग्रहों का रेखा विवरण देखा, अब इनमें से प्रत्येक राशि की रेखाओं का योग कर एक स्थान पर लिखने से 'सूर्याष्टक वर्ग' बनता है।

उदाहरणार्थ ऊपर के रेखा विवरणों में मेष राशि को केवल सूर्य, चन्द्र, मंगल, शुक्र एवं लग्न ने ही रेखा दी है, अतः इनका योग पांच हुआ, फलस्वरूप सूर्याष्टक वर्ग में मेष राशि में 5 का अंक लिखा जायेगा, जिसका तात्पर्य होगा सूर्याष्टक वर्ग में मेष राशि को 5 शुभ रेखाएं मिली हैं, इसी प्रकार प्रत्येक राशि की रेखाओं की गणना करनी चाहिए। गणना करने पर सूर्याष्टक वर्ग निम्न प्रकारेण होगा–

सूर्याष्टक वर्ग

राशि	रेखायोग
मेष	5
वृषभ	4
मिथुन	3
कंर्क	2
सिंह	5
कन्या	5
तुला	4
वृश्चिक	4
धनु	4
मकर	3
कुंभ	4
मीन	5
कुल रेखा योग	48

इसी प्रकार चन्द्राष्टक वर्ग, मंगल अष्टक वर्ग, बुध अष्टक वर्ग, गुरु अष्टक वर्ग, शुक्र अष्टक वर्ग, शनि अष्टक वर्ग तथा लग्न अष्टक वर्ग बनाना चाहिए।

पीछे दी गई उदाहरण कुण्डली को आधार बनाने पर अष्टक वर्ग निम्न प्रकारेण बनेंगे–

चन्द्राष्टक वर्ग

राशि	रेखायोग
मेष	5
वृष	3
मिथुन	4
कर्क	5
सिंह	5
कन्या	4
तुला	4
वृश्चिक	6
धनु	1
मकर	6
कुंभ	4
मीन	2
कुल रेखा योग	49

भौमाष्टक वर्ग

राशि	रेखायोग
मेष	4
वृष	1
मिथुन	4
कर्क	2
सिंह	5
कन्या	6
तुला	3
वृश्चिक	2
धनु	3
मकर	2

कुंभ	3
मीन	4
कुल रेखा योग	39

बुद्धाष्टक वर्ग

राशि	रेखायोग
मेष	4
वृष	4
मिथुन	5
कर्क	3
सिंह	6
कन्या	8
तुला	2
वृश्चिक	2
धनु	6
मकर	3
कुंभ	4
मीन	7
कुल रेखा योग	54

गुरु अष्टक वर्ग

राशि	रेखायोग
मेष	6
वृष	4
मिथुन	5
कर्क	7
सिंह	2
कन्या	5
तुला	5

वृश्चिक	3
धनु	6
मकर	5
कुंभ	4
मीन	4
कुल रेखा योग	56

शुक्र अष्टक वर्ग

राशि	रेखायोग
मेष	2
वृष	4
मिथुन	6
कर्क	5
सिंह	5
कन्या	5
तुला	3
वृश्चिक	4
धनु	4
मकर	4
कुंभ	7
मीन	3
कुल रेखा योग	52

शनि अष्टक वर्ग

राशि	रेखायोग
मेष	5
वृष	1
मिथुन	3
कर्क	3

सिंह	3
कन्या	4
तुला	2
वृश्चिक	4
धनु	2
मकर	4
कुंभ	4
मीन	4
कुल रेखा योग	39

लग्न अष्टक वर्ग

राशि	रेखायोग
मेष	5
वृषभ	3
मिथुन	4
कर्क	6
सिंह	4
कन्या	5
तुला	1
वृश्चिक	5
धनु	2
मकर	5
कुंभ	5
मीन	4
कुल रेखा योग	49

सर्वाष्टक वर्ग

जब आठों ग्रहों के अष्टक वर्ग बन जाये, तो फिर मेष राशि की कुल रेखाओं का योग करना चाहिए इसी प्रकार वृष

आदि अन्य राशियों में जो रेखाएं आई हों, उनकी गगना कर लिखने से सर्वाष्टक वर्ग बनता है।

पीछे उदाहरण में जन्मकुण्डली के जो अष्टक वर्ग बनाये हैं, उन्हें देखने पर पता चलता है कि–

सूर्याष्टक वर्ग	में मेष राशि में	शुभ	रेखाएं हैं	5
चन्द्राष्टक "	"	"	"	5
मंगल अष्टक वर्ग		"	"	4
बुध "	"	"	"	4
गुरु "	"	"	"	6
शुक्र "	"	"	"	2
शनि "	"	"	"	5
लग्न "	"	"	"	5
			कुल योग	36

इस प्रकार सर्वाष्टक वर्ग में मेष राशि में रेखा संख्या होगी 36, वृष राशि में 24 आदि–आदि।

नीचे सर्वाष्टक वर्ग प्रत्येक राशि में निम्न रेखा संख्या होगी–

सर्वाष्टक वर्ग

राशि	रेखाएं
मेष	36
वृष	24
मिथुन	34
कर्क	33
सिंह	35
कन्या	42
तुला	24
वृश्चिक	30
धनु	28
मकर	32

कुम्भ	35
मीन	33
कुल रेखा योग	386

सर्वाष्टक वर्ग कुण्डली

सर्वाष्टक वर्ग तैयार होने पर "सर्वाष्टक वर्ग कुण्डली" बनाई जाती है। पीछे उदाहरण कुण्डली की लग्न राशि मिथुन है, अतः लग्न भाव में मिथुन राशि की रेखाष्टक रेखाएं 34 लिखीं पर कर्क राशि के भाव में कर्क राशि को रेखाएं इसी प्रकार जन्मकुण्डली में जिस-जिस भाव में जो राशियां हैं, रेखाष्टक की राशि से सम्बन्धित रेखाओं को उसी भाव में लिखी जाएगी।

इस प्रकार सर्वाष्टक वर्ग कुण्डली तैयार होती है-

सर्वाष्टक रेखा कुण्डली

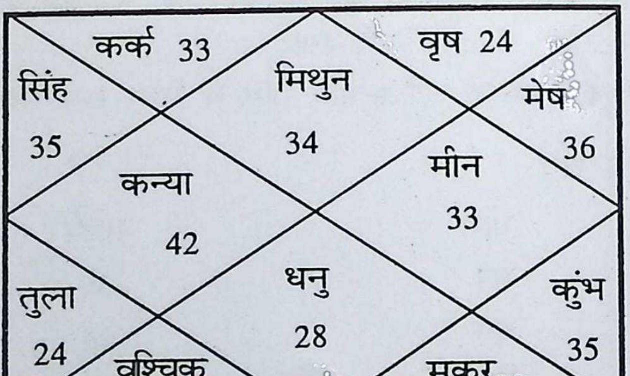

रेखाफल

फल कथन में इन रेखाओं का अत्यधिक महत्व है। गोचर तो इनकी उपयोगिता असंदिग्ध है। रेखा-फल निम्न प्रकारेण है-

एक रेखा-कष्ट

दो रेखा-अर्थक्षय

तीन रेखा-क्लेश

चार रेखा-सम (न शुभ न अशुभ)

पांच रेखा-सुख

छः रेखा-धनागम

सात रेखा-अत्यन्त सुख

आठ रेखा-पूर्ण एवं समस्त प्रकार का सुख। उदाहरणार्थ सूर्य अष्टक वर्ग को ही लें। उदाहरण जन्म कुण्डली में सूर्याष्टक वर्ग में मेष राशि में पांच रेखाएं हैं, जिनका फल है-सुख।

अतः गोचर पद्धति से भ्रमण करते समय जब भी सूर्य मेष राशि में करेगा, तब वह सूर्य जातक को सुखदायक ही होगा, इसी प्रकार अन्य ग्रहों के भ्रमण करते समय रेखाओं की संख्या के अनुसार फलकथन करना चाहिये। उदाहरण जन्मकुण्डली के प्रत्येक ग्रह का प्रत्येक राशि में भ्रमण करते समय रेखाओं को आधार बनाकर ज्ञात करने पर निम्न फल स्पष्ट होगा-

सूर्याष्टक वर्ग

राशि	रेखायोग	फलकथन
मेष	3	सुख
वृषभ	4	सम
मिथुन	3	क्लेश
कर्क	2	अर्थक्षय
सिंह	5	सुख
कन्या	5	सुख
तुला	4	सम
वृश्चिक	4	सम
धनु	4	सम
मकर	3	क्लेश
कुम्भ	4	सम
मीन	5	सुख

चन्द्राष्टक वर्ग

राशि	रेखायोग	फलकथन
मेष	5	सुख
वृष	3	क्लेश
मिथुन	4	सम
कर्क	5	सुख
सिंह	5	सुख
कन्या	4	सम
तुला	4	सम
वृश्चिक	6	धनागम
धनु	1	कष्ट
मकर	6	धनागम
कुम्भ	4	सम
मीन	2	अर्थक्षय

मंगल अष्टक वर्ग

राशि	रेखायोग	फलकथन
मेष	4	सम
वृष	1	कष्ट
मिथुन	4	सम
कर्क	2	अर्थक्षय
सिंह	5	सुख
कन्या	6	धनागम
तुला	3	क्लेश
वृश्चिक	2	अर्थक्षय
धनु	3	क्लेश
मकर	2	अर्थक्षय
कुम्भ	3	क्लेश
मीन	4	सम

बुध अष्टक वर्ग

राशि	रेखायोग	फलकथन
मेष	4	सम
वृष	4	सम
मिथुन	5	सुख
कर्क	3	क्लेश
सिंह	6	धनागम
कन्या	8	पूर्णसुख
तुला	2	अर्थक्षय
वृश्चिक	2	अर्थक्षय
धनु	6	धनागम
मकर	3	क्लेश
कुम्भ	4	सम
मीन	7	अत्यन्त सुख

गुरु अष्टक वर्ग

राशि	रेखायोग	फलकथन
मेष	6	धनागम
वृष	4	सम
मिथुन	5	सुख
कर्क	7	अत्यन्त सुख
सिंह	2	अर्थक्षय
कन्या	5	सुख
तुला	5	सुख
वृश्चिक	3	क्लेश
धनु	6	धनागम
मकर	5	सुख
कुंभ	4	सम
मीन	4	सम

शुक्र अष्टक वर्ग

राशि	रेखायोग	फलकथन
मेष	2	अर्थक्षय
वृष	4	सम
मिथुन	6	धनागम
कर्क	5	सुख
सिंह	5	सुख
कन्या	5	सुख
तुला	3	क्लेश
वृश्चिक	4	सम
धनु	4	सम
मकर	4	सम
कुम्भ	7	अत्यन्त सुख
मीन	3	क्लेश

शनि अष्टक वर्ग

राशि	रेखायोग	फलकथन
मेष	5	सुख
वृष	1	कष्ट
मिथुन	3	क्लेश
कर्क	3	क्लेश
सिंह	3	क्लेश
कन्या	4	सम
तुला	2	अर्थक्षय
वृश्चिक	4	सम
धनु	2	अर्थक्षय
मकर	4	सम
कुंभ	4	सम
मीन	4	सम

लग्न अष्टक वर्ग

राशि	रेखायोग	फलकथन
मेष	5	सुख
वृष	3	क्लेश
मिथुन	4	सम
कर्क	6	धनागम
सिंह	4	सम
कन्या	5	सुख
तुला	1	कष्ट
वृश्चिक	5	सुख
धनु	2	अर्थक्षय
मकर	5	सुख
कुंभ	5	सुख
मीन	4	सम

उपर्युक्त तालिका सामने होने पर यह तुरन्त ही ज्ञात हो सकता है, कि कोई भी ग्रह भ्रमण करते समय किस राशि में रहने पर क्या फल देगा यह स्पष्ट देखा जा सकता है।

इस प्रकार का फलकथन पूर्णतः सही एवं प्रामाणिक होता देखा गया है।

शोधन

सर्वाष्टक वर्ग या भिन्नाष्टक वर्ग बनने के बाद उसका शोधन किया जाता है। यह शोधन दो प्रकार से किया जाता है-

1. त्रिकोण शोधन
2. एकाधिपत्य शोधन

त्रिकोण शोधन

पूरी जन्मकुण्डली में चार त्रिकोण होते हैं-

(क) मेष, सिंह, धनु

(ख)वृष, कन्या, मकर

(ग) मिथुन, तुला, कुंभ

(घ) कर्क, वृश्चिक, मीन

त्रिकोण शोधन के लिए एक त्रिकोण की तीनों राशियों की रेखा देखनी चाहिए, इन तीनों राशियों में जिस राशि की सबसे कम रेखा-संख्या हो, उसे सबसे बडी रेखा-संख्या में से घटाकर रखना चाहिए।

उदाहरणार्थ-उदाहरण जन्मकुंडली का सूर्याष्टक वर्ग ले जिसमें

	मेष	सिंह	धनु	राशियों में
	5	5	4	रेखा संख्या है तो
अतः	4	4	4	घटाया, क्योंकि

इन तीनों में चार ही सबसे छोटी संख्या है, तो शेष रहे

1	1	0	अतः

त्रिकोण शोधन के उपरांत मेष की रेखा सिंह की 1 तथा धनु की 0 रही ।

इसी प्रकार अन्य त्रिकोणों का भी शोधन किया जा रहा है—

सूर्याष्टक वर्ग में

प्रथम त्रिकोण

मेष	सिंह	धनु
5	5	4
4	4	0
1	1	0

दूसरा त्रिकोण

वृष	कन्या	मकर
4	5	3

3	3	3
1	2	0

तीसरा त्रिकोण

मिथुन	तुला	कुम्भ
3	4	4
3	3	3
0	1	1

चौथा त्रिकोण

कर्क	वृश्चिक	मौन
2	4	5
2	2	2
0	2	3

अब त्रिकोण शोधन के उपरांत सूर्याष्टक वर्ग निम्नरूपेण बना।

सूर्याष्टक वर्ग

(त्रिकोण शोधनोपरांत)

राशि	रेखा संख्या
मेष	1
वृष	1
मिथुन	0
कर्क	0
सिंह	1
कन्या	2
तुला	1

वृश्चिक	2
धनु	0
मकर	0
कुंभ	1
मीन	3

इसी प्रकार अन्य ग्रहों के भी त्रिकोण शोधन करने पर फल निम्न प्रकार बना–

चन्द्राष्टक वर्ग

(त्रिकोण शोधनोपरांत)

राशि	रेखा संख्या
मेष	4
वृष	0
मिथुन	0
कर्क	3
सिंह	4
कन्या	1
तुला	0
वृश्चिक	4
धनु	0
मकर	3
कुंभ	0
मीन	0

भौमाष्टक वर्ग

(त्रिकोण शोधनोपरांत)

राशि	रेखा संख्या
मेष	1
वृष	0

मिथुन	1
कर्क	0
सिंह	2
कन्या	5
तुला	0
वृश्चिक	0
धनु	0
मकर	1
कुंभ	0
मीन	2

बुधाष्टक वर्ग

(त्रिकोण शोधनोपरांत)

राशि	रेखा संख्या
मेष	0
वृष	1
मिथुन	3
कर्क	1
सिंह	2
कन्या	5
तुला	0
वृश्चिक	0
धनु	2
मकर	0
कुंभ	2
मीन	5

गुर्वष्टक वर्ग

(त्रिकोण शोधनोपरांत)

राशि	रेखा संख्या
मेष	4
वृष	0
मिथुन	1
कर्क	4
सिंह	0
कन्या	1
तुला	1
वृश्चिक	0
धनु	4
मकर	1
कुंभ	0
मीन	1

शुक्राष्टक वर्ग

(त्रिकोण शोधनोपरांत)

राशि	रेखा संख्या
मेष	0
वृष	0
मिथुन	3
कर्क	2
सिंह	3
कन्या	1
तुला	0
वृश्चिक	1
धनु	2

मकर	0
कुंभ	4
मीन	0

शन्याष्टक वर्ग

(त्रिकोण शोधनोपरांत)

राशि	रेखा संख्या
मेष	3
वृष	0
मिथुन	1
कर्क	0
सिंह	1
कन्या	3
तुला	0
वृश्चिक	1
धनु	0
मकर	3
कुंभ	2
मीन	1

लग्नाष्टक वर्ग

(त्रिकोण शोधनोपरांत)

राशि	रेखा संख्या
मेष	3
वृष	0
मिथुन	3
कर्क	2
सिंह	2
कन्या	2

तुला	0
वृश्चिक	1
धनु	0
मकर	2
कुंभ	4
मीन	0

नियम

ऊपर उदाहरण जन्मकुंण्डली से सभी ग्रहों के अष्टक वर्गों का त्रिकोण शोधन किया। इस त्रिकोण शोधन में निम्न नियम हमेशा स्मरण रखने चाहिए।

(1) त्रिकोण की तीनों राशियों में जो रेखा-संख्या हो उसमें सबसे कम रेखा-संख्या को बाकी की दो राशियों में से भी धटाकर शेष लिखना चाहिए।

(2) यदि त्रिकोण की तीन राशियों में से किसी एक राशि की रेखा-संख्या शून्य 0 हो तो तीनो राशियों में से शून्य धटा देना चाहिए अर्थात् वे रेखाएं ज्यों-की-त्यों रहेंगी।

(3) यदि तीनों ही राशियों में समान संख्या हो तो फिर त्रिकोण शोधनोपरांत तीनों ही राशियों में शेष शून्य ही रहेगा।

त्रिकोण शोधनोपरांत सर्वाष्टक वर्ग बना लेना चाहिए, इस "त्रिकोण शोधनोपरांत सर्वाष्टक वर्ग" में आठों ग्रहों (सात ग्रह व लग्न) की मेष राशि की रेखा का योग मेष राशियों का योग मेष राशि में, तश इसी प्रकार अन्य राशियों का योग भी कर देना चाहिए ।

उदाहरण-जन्मकुण्डली का त्रिकोण शोधनोपरांत सर्वाष्टक वर्ग इस प्रकार होगा ।

त्रिकोण शोधनोपरांत सर्वाष्टक वर्ग

राशि	रेखा संख्या
मेष	16

वृष	2
मिथुन	12
कर्क	12
सिंह	15
कन्या	20
तुला	2
वृश्चिक	9
धनु	8
मकर	10
कुंभ	13
मीन	12
योग	131

इस प्रकार त्रिकोण शोधनोपरांत रेखा योग 131 आया । इसके बाद त्रिकोण शोधनोपरांत सर्वाष्टक कुण्डली बना लेनी चाहिए । उदाहरण जन्मकुंडली की रेखा संखया 12 लग्न में लिखी जायेगी, एवं शेष रेखाएं भी अपनी राशियों में लिखी जायेगी ।

त्रिकोण शोधनोपरांत सर्वाष्टक कुंडली

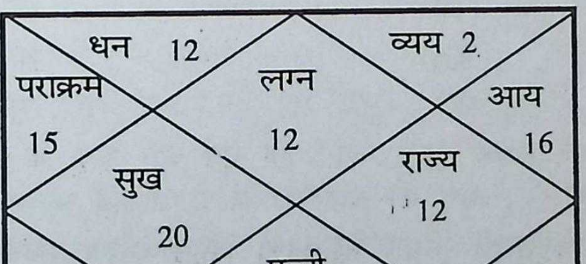

एकाधिपत्य शोधन

त्रिकोण शोधन के उपरांत ही एकाधिपत्य शोधन किया जाता हैं । एकाधिपत्य शोधन का आधार ग्रह एंव उनकी राशियां हैं । चूंकि सूर्य और चन्द्रमा को छोडकर अन्य सभी ग्रह दो-दो राशियों के स्वामी हैं, उन्हीं का एकाधिपत्य शोधन रोता है, इस नियम के अनुसार कर्क और सिंह क्रमशः चन्द्र और सूर्य हैं।

पाठको जानकारी हेतु राशि एवं उनके स्वामियों की जानकारी दी जा रही है-

राशि	स्वामी
मेष	मंगल
वृष	शुक्र
मिथुन	बुध
कर्क	चन्द्र
सिंह	सूर्य
कन्या	बुध
तुला	शुक्र
वृश्चिक	मंगल
धनु	गुरु
मकर	शनि
कुंभ	शनि
मीन	गुरु

इस प्रकार पाठक देखेंगें, कि सूर्य और चन्द्र के अतिरिक्त सभी ग्रह (राहु-केजु को छोडकर) दो-दो राशियों के स्वामी हैं ।

एकाधिपत्य शोधन रेतु निम्न नियम स्मरण रखने चाहिए-

एक ग्रह की दो राशियों में से-यदि किसी एक राशि में भी शून्य आ जाय, तो दूसरी राशि में भी शून्य रख दिया जाता है।

(2) यदि एक ग्रह की दोनों राशियों में से किसी भी राशि में कोई ग्रह न हो तो अल्प रेखा संख्या को अधिक रेखा-संख्या में से घटाकर शेष अधिक रेखा संख्या में से नीचे लिखें और

अल्प संख्या को वही रखें ।

(3) यदि एक ग्रह की दोनों राशियों में से एक राशि में ग्रह हो और दूसरी राशि ग्रह हीन हो तथा ग्रह युक्त राशि वाली रेखा संख्या, ग्रहहीन राशि वाली रेखा संख्या से कम हो, तो कम संख्या वहीं रहेगी तथा ग्रह हीन राशि वाली रेखा संख्या में से न्यून संख्या घटाकर शेष जो बचे वह ग्रह हीन राशि के नीचे रखना चाहिए।

(4) यदि दो राशियों में से एक राशि में ग्रह हो तथा उस ग्रह युक्त राशि में दूसरी राशि की अपेक्षा रेखा ज्यादा हो तो ग्रह हीन राशि में 0 तथा ग्रह युक्त राशि में वही रेखा संख्या लिखी जायेगी।

(5) यदि दोनो राशि में ग्रह हो तो संख्या (रेखा संख्या) ज्यों-की-त्यों रहेगी ।

(6) यदि दोनो राशियां ग्रह हीन हो तथा संख्या बराबर हो तो दोनो ही राशियों के नीचे 0 लिखा जायेगा ।

(7) यदि दो राशियों में से एक राशि ग्रह युक्त हो और तथा दूसरी राशि ग्रह हीन हो, पर दोनो राशियों की रेखा संख्या बराबर हो, तो ग्रह हीन राशि के नीचे शून्य एवं ग्रह यूक्त राशि के नीचे वही रेखा संख्या लिखी जायेगी ।

(8) ये नियम त्रिकोण शोधन के उपरांत लागू किये जाते हैं, एवं एकाधिपत्य शोधन किया जाता है-

अब उक्त नियमों को पूर्व उदाहरण जन्मकुण्डली पर लागू करते हैं ।

त्रिकोण शोधनोपरांत सूर्याष्टक वर्ग लें ।

जन्मकुण्डली में मेष व वृश्चिक दोनों राशियों में ग्रह हैं, अतः यहां नियम संख्या 5 लागू होगा, तथा मेष की रेखा संख्या 1 तथा वृश्चिक की रेखा संख्या 2 ज्यों की त्यों रहेगी ।

वृष एवं तुला दोनों ही राशियों का स्वामी शुक्र है तथा जन्मकुण्डली में दोनों ही राशियों में ग्रह है, अतः यहां भी नियम 5 लागू होगा एंव वृष की रेखा संख्या 1 तुला की रेखा संख्या

1 ज्यों की त्यों रहेगी ।

मिथुन एंव कन्या का स्वामी बुध है । जन्मकुण्डली में राशि में ग्रह नहीं, पर ग्रह युक्त राशि संख्या की रेखा संख्या ज्यादा है, अतः यहां नियम 4 लागू होगा । इस प्रकार मिथुन राशि में 0 तथा कन्या राशि में भी 0 रेखा लिखी जायेगी । क्योंकि यहां नियम 1 भी लागू होगा ।

कर्क तथा सिहं राशियों की रेखा संख्या ज्यों की त्यों रहेगी।

धनु तथा मीन दोनों गुरु की राशियां है तथा जन्मकुण्डली में दोनों ही राशियों में कोई ग्रह नहीं है, नर धनु राशि में 0 रेखा है, अतः नियम 1 लागू करते हुए दोनों ही राशियों में रेखा संख्या 0 होगी ।

मकर तथा कुंभ में भी नियम संख्या 1 लागू होने से दोनों राशियों में 0 लिखा जायेगा ।

इस प्रकार एकाधिपत्य शोधन के उपरांत सूर्याष्टक वर्ग इस प्रकार बनेगा-

सूर्याष्टक वर्ग

(एकाधिपत्य शोधनोपरांत)

राशि	रेखा संख्या
मेष	1
वृष	1
मिथुन	0
कर्क	0
सिंह	1
कन्या	0
तुला	1
वृश्चिक	2
धनु	0
मकर	0

कुंभ	0
मीन	0

चन्द्राष्टक वर्ग

(एकाधिपत्य शोधनोपरांत)

राशि	रेखा संख्या
मेष	4
वृष	0
मिथुन	0
कर्क	3
सिंह	4
कन्या	0
तुला	0
वृश्चिक	4
धनु	0
मकर	0
कुंभ	0
मीन	0

भौमाष्टक वर्ग

(एकाधिपत्य शोधनोपरांत)

राशि	रेखा संख्या
मेष	0
वृष	0
मिथुन	0
कर्क	0
सिंह	2
कन्या	5
तुला	0

वृश्चिक	0
धनु	0
मकर	0
कुंभ	0
मीन	0

बुधाष्टक वर्ग

(एकाधिपत्य शोधनोपरांत)

राशि	रेखा संख्या
मेष	0
वृष	0
मिथुन	0
कर्क	1
सिंह	2
कन्या	5
तुला	0
वृश्चिक	0
धनु	2
मकर	0
कुंभ	0
मीन	3

गुरु अष्टक वर्ग

(एकाधिपत्य शोधनोपरांत)

राशि	रेखा संख्या
मेष	0
वृष	0
मिथुन	0
कर्क	4

सिंह	0
कन्या	1
तुला	0
वृश्चिक	0
धनु	3
मकर	0
कुंभ	0
मीन	1

शुक्राष्टक वर्ग

(एकाधिपत्य शोधनोपरांत)

राशि	रेखा संख्या
मेष	0
वृष	0
मिथुन	2
कर्क	2
सिंह	3
कन्या	1
तुला	0
वृश्चिक	0
धनु	0
मकर	0
कुंभ	0
मीन	0

शन्याष्टक वर्ग

(एकाधिपत्य शोधनोपरांत)

राशि	रेखा संख्या
मेष	3

वृष	0
मिथुन	0
कर्क	0
सिंह	1
कन्या	3
तुला	0
वृश्चिक	1
धनु	0
मकर	1
कुंभ	2
मीन	0

लग्नाष्टक वर्ग

राशि	रेखा संख्या
मेष	3
वृष	0
मिथुन	1
कर्क	2
सिंह	2
कन्या	2
तुला	0
वृश्चिक	1
धनु	0
मकर	0
कुंभ	4
मीन	0

इस प्रकार एकाधिपत्य शोधनोपरांत सभी अष्टक वर्ग बन जाने पर मेषादि राशियों की (प्रत्येक राशि की अलग-अलग) रेखा-संख्या गिनकर एक स्थान पर लिखने से सर्वाष्टक वर्ग बनता

है।

उदाहरण जन्मकुण्डली का सर्वाष्टक वर्ग निम्न प्रकार से होगा–

सर्वाष्टक वर्ग

(एकाधिपत्य शोधनोपरान्त)

राशि	रेखा संख्या
मेष	11
वृष	1
मिथुन	3
कर्क	12
सिंह	15
कन्या	17
तुला	1
वृश्चिक	8
धनु	5
मकर	1
कुम्भ	6
मीन	4

सर्वाष्टक कुण्डली

(एकाधिपत्य शोधनोपरांत)

उदाहरण जन्मकुण्डली का लग्न मिथुन है, अतः मिथुन है, अतः मिथुन की रेखा संख्या 3 लग्न में लिखी अन्य अपनी-अपनी राशियों में लिखने पर सर्वाष्टक कुण्डली निम्न होगी–

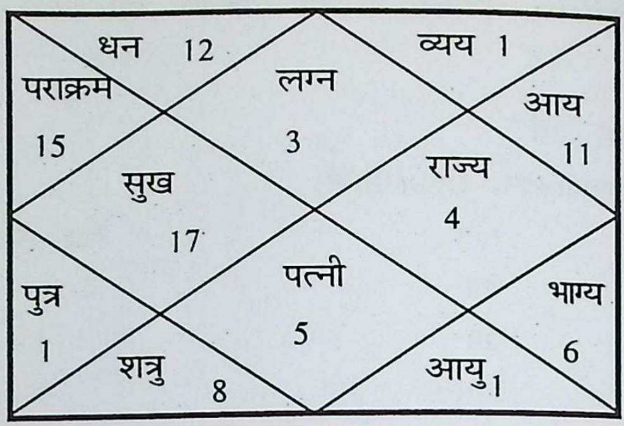

गुणक

त्रिकोण शोधन एवं एकाधिपत्य शोधन के बाद राशि गुणक बनाया जाता है। प्रत्येक राशि के गुणक अंक निर्धारित है, जो कि निम्न है–

राशि	गुणक अंक
मेष	7
वृष	10
मिथुन	8
कर्क	4
सिंह	10
कन्या	5
तुला	7
वृश्चिक	8
धनु	9
मकर	5
कुम्भ	11

मीन	12

राश़ि गुणक स्पष्ट करने के लिए त्रिकोण शोधनोपरांत जो रेखाएं स्पष्ट हुई हैं उनका उपयोग किया जाता है, उदाहरण सूर्य अष्टक वर्ग (त्रिकोण शोधननेपरांत) में मेष राशि की ऐसी संख्या एक है, इसे मेष राशि के गुणक अंक 7 से गुणा करने पर योगफल 7 आया, अतः सूर्याष्टक वर्ग में मेष राशि का गुणक अंक 7 होगा। शून्य से गुणा करने पर योगफल शून्य ही रहता है। पूर्व उदाहरण जन्मकुण्डली के त्रिकोण शोधनोपरांत जो रेखा आई है, उनसे राशि गुणक अंक से गुणा करने प़र फल निम्न प्रकार स्पष्ट होगा–

सूर्याष्टक वर्ग

(राशि गुणक अंक)

राशि	गुणक अंक
मेष	7
वृष	10
मिथुन	0
कर्क	0
सिंह	10
कन्ंया	10
तुला	7
वृश्चिक	16
धनु	0
मकर	0
कुंभ	11
मीन	36

चन्द्राष्टक वर्ग

(राशि गुणक अंक)

राशि	गुणक अंक
मेष	28
वृष	0
मिथुन	0
कर्क	12
सिंह	40
कन्या	5
तुला	0
वृश्चिक	32
धनु	0
मकर	15
कुंभ	0
मीन	0

भौमाष्टक वर्ग

(राशि गुणक अंक)

राशि	गुणक अंक
मेष	7
वृष	0
मिथुन	8
कर्क	0
सिंह	20
कन्या	25
तुला	0
वृश्चिक	0
धनु	0

मकर	5
कुंभ	0
मीन	24

बुधाष्टक वर्ग

(राशि गुणक अंक)

राशि	गुणक अंक
मेष	0
वृष	10
मिथुन	24
कर्क	4
सिंह	20
कन्या	25
तुला	0
वृश्चिक	0
धनु	18
मकर	0
कुंभ	22
मीन	60

गुरु अष्टक वर्ग

(राशि गुणक अंक)

राशि	गुणक अंक
मेष	28
वृष	10
मिथुन	8
कर्क	16
सिंह	0
कन्या	5

तुला	7
वृश्चिक	0
धनु	36
मकर	5
कुंभ	0
मीन	12

शुक्राष्टक वर्ग

(राशि गुणक अंक)

राशि	गुणक अंक
मेष	0
वृष	0
मिथुन	24
कर्क	8
सिंह	30
कन्या	5
तुला	0
वृश्चिक	8
धनु	18
मकर	0
कुंभ	44
मीन	0

शन्याष्टक वर्ग

(राशि गुणक अंक)

राशि	गुणक अंक
मेष	21
वृष	0
मिथुन	8

कर्क	0
सिंह	10
कन्या	15
तुला	0
वृश्चिक	8
धनु	0
मकर	15
कुंभ	22
मीन	12

लग्नाष्टक वर्ग

(राशि गुणक अंक)

राशि	गुणक अंक
मेष	21
वृष	0
मिथुन	24
कर्क	8
सिंह	20
कन्या	10
तुला	0
वृश्चिक	8
धनु	0
मकर	10
कुंभ	44
मीन	0

इसके उपरांत वर्ग बनाने के लिए प्रत्येक अष्टक के मेष राशि के गुणक अकों का योग मेष राशि के गुणक अकों का योग मेष राशि के गुणक अंक होगें, इसी प्रकार अन्य राशियों कें भी गुणक अंक ज्ञात कर लेने चाहिए।

पूर्व उदाहरण कुण्डली में सर्वाष्टक वर्ग के गुणक अंक निम्न होगें-

सर्वाष्टक वर्ग

(राशि गुणक अंक)

राशि	गुणक अंक
मेष	112
वृष	20
मिथुन	96
कर्क	48
सिंह	150
कन्या	100
तुला	14
वृश्चिक	72
धनु	72
मकर	50
कुंभ	143
मीन	144

राशि गुणक कुण्डली

पुर्व उदाहरण में राशि गुणक कुण्डली निम्न होगी, चूंकि पूर्व उदाहरण में जन्म लग्न मिथुन है, अतः लग्न में मिथुन गुणक अंक 96 लिखे होंगक, इसी प्रकार आगे अपनी-अपनी राशियों के गुणक अंक लिख दिये जायेंगे-

राशि गुणक कुण्डली से यह ज्ञान हो जाता हैं, कि कौन-सी राशि कितनी बलवान है तथा परस्पर दो राशियों में से कौन राशि कितनी अधिक बलवान है या कमजोर है, अस्तु ।

राशि गुणक स्पष्ट करने के बाद ग्रह गुणक स्पष्ट करने चाहिये । ग्रह गुणक के लिए भी प्रत्येक ग्रह गुणक अंक निर्धारित हैं, जो कि निम्न हैं-

ग्रह गुणक अंक

सूर्य	5
चन्द	5
मंगल	8
बुध	5
गुरु	10
शुक्र	7
शनि	5

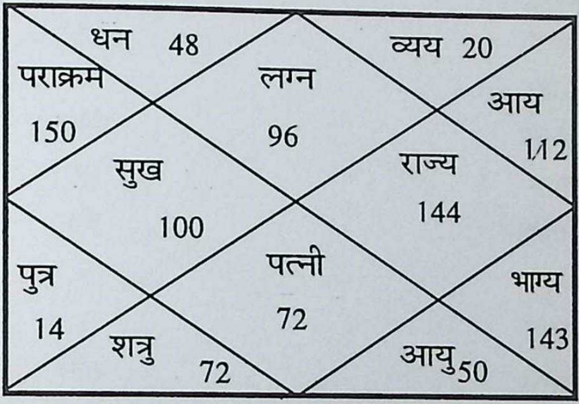

ग्रह गुणक स्पष्ट करने के लिए एकाधिपत्य शोधनोपरांत रेखाओं का उपयोग किया जाता है।

पर इसके साथ ही जन्म कुण्डली में यह भी देख लेना चाहिए कि किस राशि में एक से अधिक ग्रह हैं।

ग्रह गुणक स्पष्ट करने के लिए निम्न स्मरण रखने चाहिए-

(1) जिस राशि में ग्रह हो, उस ग्रह के गुणक अंक का उस राशि में स्थित रेखा संख्या से गुणा करने पर जो अंक आते हैं, वे उस ग्रह के गुणक अंक होंगे।

(2) यदि एक राशि में एक से अधिक ग्रह हों तो उन दोनों

(या ज्यादा भी) ग्रह के गुणक अंक जोड़ कर उस राशि में स्थित रेखा से गुणा करना चाहिए।

(3) ग्रह गुणक योग का आधार एकाधिपत्य शोधनोपरांत रेखाएं होती हैं।

अब इन नियमों को उदाहरण कुण्डली पर लागू करें-उदाहरण कुण्डली में निम्न राशियों में अग्रांकित ग्रह हैं-

राशि	ग्रह
मेष	सूर्य, बुध
वृष	शुक्र
मिथुन	x
कर्क	x
सिंह	x
कन्या	मंगल
तुला	गुरु
वृश्चिक	चंद्र
धनु	x
मकर	x
कुभ	शनि
मीन	x

अब एकाधिपत्य शोधनोपरांत सूर्याष्टक वर्ग देखा। इसमें मेष राशि में 1 रेखा है तथा जन्म कुण्डली में मेष राशि में सूर्य बुध ग्रह हैं। सूर्य के गुणक अंक 5 तथा बुध के गुणक अंक 5 का योग 10 हुआ, जिसे 1 रेखा से गुणा करने पर मेष राशिं का ग्रह गुणक अंक 10 आया।

वृष में शुक्र है, जिसके गुणक अंक 7 हैं, तथा सूर्याष्टक वर्ग में वृष राशि में 1 रेखा है, अतः 1 का 7 से गुणा करने पर वृष राशि का ग्रह गुणक 7 हुआ।

कन्या राशि में मंगल ग्रह आवश्यक है, पर रेखा योग 0 है, अतः कन्या राशि या बुध का ग्रह गुणक 0 रहा।

तुला राशि में गुरु है, जिसके गुणक अंक 10 है, तथा तुला राशि में 1 रेखा है, अतः तुला राशि में ग्रह गुणक अंक 10 हुए।

वृश्चिक राशि में चन्द्रमा है, जिसके गुणक अंक 5 है, तथा रेखा 2 है, अतः $5 \times 2 = 10$ ग्रह गुणक हुए।

कुंभ राशि में शनि है, पर रेखा शून्य है, अतः कुंभ राशि या शनि के ग्रह गुणक शून्य रहे।

इस प्रकार यह सूर्याष्टक वर्ग बना। आगे भी इसी प्रकार अन्य अष्टक बना लेने चाहिए।

पूर्व उदाहरण कुण्डली में ग्रह गुणक निम्न प्रकारेण होंगे-

सूर्याष्टक वर्ग

(ग्रह गुणक युक्त)

राशि	ग्रह गुणक
मेष	10
वृष	7
मिथुन	0
कर्क	0
सिंह	0
कन्या	0
तुला	10
वृश्चिक	10
धनु	0
मकर	0
कुंभ	0
मीन	0

चन्द्राष्टक वर्ग

(ग्रह गुणक युक्त)

राशि	ग्रह गुणक
मेष	40
वृष	0
मिथुन	0
कर्क	0
सिंह	0
कन्या	0
तुला	0
वृश्चिक	20
धनु	0
मकर	0
कुंभ	0
मीन	0

भौमाष्टक वर्ग

(ग्रह गुणक युक्त)

राशि	ग्रह गुणक
मेष	0
वृष	0
मिथुन	0
कर्क	0
सिंह	0
कन्या	0
तुला	0
वृश्चिक	40
धनु	0

मकर	0
कुंभ	0
मीन	0

बुधाष्टक वर्ग

(ग्रह गुणक युक्त)

राशि	ग्रह गुणक
मेष	0
वृष	0
मिथुन	0
कर्क	0
सिंह	0
कन्या	40
तुला	0
वृश्चिक	0
धनु	0
मकर	0
कुंभ	0
मीन	0

गुर्वष्टक वर्ग

(ग्रह गुणक युक्त)

राशि	ग्रह गुणक
मेष	0
वृष	0
मिथुन	0
कर्क	0
सिंह	0
कन्या	8

तुला	0
वृश्चिक	0
धनु	0
मकर	0
कुंभ	0
मीन	0

शुक्राष्टक वर्ग

(ग्रह गुणक युक्त)

राशि	ग्रह गुणक
मेष	0
वृष	0
मिथुन	0
कर्क	0
सिंह	0
कन्या	8
तुला	0
वृश्चिक	0
धनु	0
मकर	0
कुंभ	0
मीन	0

शन्याष्टक वर्ग

(ग्रह गुणक युक्त)

राशि	ग्रह गुणक
मेष	30
वृष	0
मिथुन	0

कर्क	0
सिंह	0
कन्या	24
तुला	0
वृश्चिक	5
धनु	0
मकर	0
कुंभ	10
मीन	0

लग्नाष्टक वर्ग

(ग्रह गुणक युक्त)

राशि	ग्रह गुणक
मेष	30
वृष	0
मिथुन	0
कर्क	0
सिंह	0
कन्या	16
तुला	0
वृश्चिक	5
धनु	0
मकर	0
कुंभ	20
मीन	0

इस अष्टक वर्ग के उपरांत सर्वाष्टक वर्ग योग व सर्वाष्टक कुंडली बनानी चाहिए। उदाहरण, कुण्डली का सर्वाष्टक वर्ग तथा सर्वाष्टक कुण्डली निम्न होगी–

सर्वाष्टक वर्ग

(ग्रह गुणक युक्त)

राशि	ग्रह गुणक
मेष	110
वृष	7
मिथुन	0
कर्क	0
सिंह	0
कन्या	136
तुला	10
वृश्चिक	40
धनु	0
मकर	0
कुम्भ	30
मीन	0

अब आगे सर्वाष्टक कुण्डली बनाई जाती है-(पृष्ठ .69 पर)

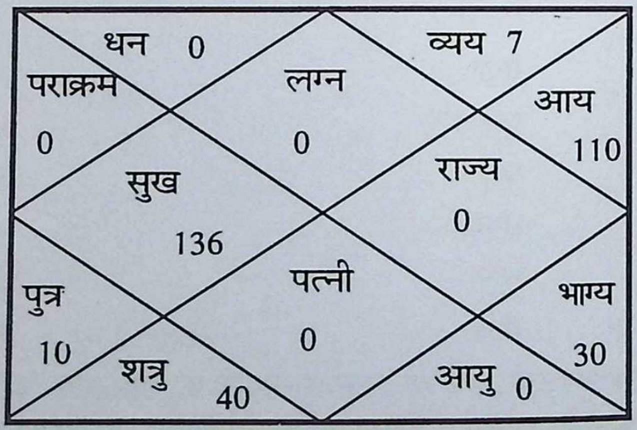

इसके उपरांत ग्रह बल निकालना चाहिए। यदि किसी राशि में ग्रह अकेला है, तो उसका ग्रह बल वही होगा, पर एक से अधिक ग्रह एक साथ बैठे हों तो प्रत्येक ग्रह का बल 'ग्रह गुणक अंक' के आधार पर अनुपात से निकालना चाहिए।

उदाहरणार्थ पूर्व उदाहरण कुण्डली में सूर्य बुध साथ में है, सूर्य के ग्रह गुणक अंक 5 तथा बुध के ग्रह गुणक अंक 5 कुल 10 हुए, चूंकि ये दोनों मेष राशि में हैं अतः मेष राशि में आये, ग्रह गुणक अंक 110 में 10 का भाग दिया, तो एक भाग 10 आये।

अब सूर्य के ग्रह गुणक 5 हैं, अतः 11 × 5 = 55 गुणक अंक सूर्य के हुए, बुध के भी ग्रह गुणक अंक 5 हैं, अतः 11 × 5 = 55 गुणक अंक बुध के भी हुए।

पूर्व उदाहरण कुण्डली के प्रत्येक ग्रह का गुणक बल निम्न प्रकारेण है-

ग्रह गुणक बल

सूर्य	55
चन्द्र	40
मंगल	136
बुध	50
गुरु	10
शुक्र	14
शनि	30

इस प्रकार सर्वाधिक बली ग्रह मंगल इसके कम सूर्य, बुध, चन्द्र, शनि, शुक्र तथा गुरु है।

अब आगे शोधन-चक्र बनाना चाहिए।

शोधन-चक्र में पीछे जो भी उपलब्धि है, वह एक स्थान पर लिखा जाता है। ग्रह गुणक एवं राशि गुणक के योग को योग-पिंड कहा जाता है, जिसे भी इस शोधन-चक्र में बताया जाता है।

अब आगे के पृष्ठों में पूर्व उदाहरण कुण्डली का शोधनचक्र स्पष्ट किया जा रहा है-

सूर्याष्टक वर्ग

राशि	ग्रह	रेखा	त्रिकोण शोधन	एकाधिपत्य शोधन	राशि गुणक	ग्रह गुणक	योग
मेष	सू.बु.	5	1	1	7	10	राशिपिण्ड
वृष	शु	4	1	1	10	7	107
मिथुन	लग्न	3	0	0	0	0	सूर्यपिण्ड
कर्क	×	2	0	0	0	0	37
सिंह	×	5	1	1	10	0	योगपिण्ड
कन्या	मंगल	5	2	0	10	0	144
तुला	गुरु	4	1	1	7	10	
वृश्चिक	चंद्र	4	2	2	16	10	
धनु	×	4	0	0	0	0	
मकर	×	3	0	0	0	0	
कुंभ	शनि	4	1	0	11	0	
मीन	×	5	3	0	36	0	

चन्द्राष्टक वर्ग

मेष	सू.बु.	5	4	4	28	40	राशिपिण्ड
वृष	शु	3	0	0	0	0	1272
मिथुन	लग्न	4	0	0	0	0	ग्रह पिण्ड
कर्क	×	5	3	3	12	0	60
सिंह	×	5	4	4	40	0	योगपिण्ड
कन्या	मंगल	4	1	0	5	0	
तुला	बृ	4	0	0	0	0	192
वृश्चिक	चं	6	4	4	32	20	

धनु	×	1	0	0	0	0	
मकर	×	6	6	0	15	0	
कुंभ	शनि	4	0	0	0	0	
मीन	×	5	2	0	0	0	

भौमाष्टक वर्ग

मेष	सू.बु.	4	1	0	7	0	राशिपिण्ड
वृष	शु	1	0	0	0	0	89
मिथुन	लग्न	4	1	0	8	0	ग्रह पिण्ड
कर्क	×	2	0	0	0	0	40
सिंह	×	5	2	2	20	0	योगपिण्ड
कन्या	मंगल	6	5	5	25	40	529
तुला	बृ	3	0	0	0	0	
वृश्चिक	चं	2	0	0	0	0	
धनु	×	3	0	0	0	0	
मकर	×	2	1	0	5	0	
कुंभ	शनि	3	0	0	0	0	
मीन	×	4	2	0	24	0	

बुधाष्टक वर्ग

मेष	सू.बु.	4	0	0	0	0	राशिपिण्ड
वृष	शु	4	1	0	10	0	183
मिथुन	ल	5	3	0	24	0	ग्रह पिण्ड
कर्क	×	3	1	1	4	0	40
सिंह	×	6	2	2	20	0	योगपिण्ड
कन्या	मं	8	5	5	25	40	227
तुला	बृ	2	0	0	0	0	
वृश्चिक	चं	2	0	0	0	0	
धनु	×	6	2	2	18	0	

मकर	×	3	0	0	0	0	
कुंभ	श	4	2	0	22	0	
मीन	×	7	5	3	60	0	

गुरुअष्टक वर्ग

मेष	सू.बु.	6	4	0	28	0	राशि पिण्ड
वृष	शु	4	0	0	0	0	117
मिथुन	ल	5	1	0	8	0	ग्रह पिण्ड
कर्क	×	7	4	4	16	0	8
सिंह	×	2	0	0	0	0	योग पिण्ड
कन्या	मं	5	1	1	5	8	125
तुला	बृ	5	1	0	7	0	
वृश्चिक	चं	3	0	0	0	0	
धनु	×	6	4	3	36	0	
मकर	×	5	1	0	5	0	
कुंभ	श	4	0	0	0	0	
मीन	×	4	1	1	12	0	

शुक्राष्टक वर्ग

मेष	सू.बु.	2	0	0	0	0	राशि पिण्ड
वृष	शु	4	0	0	0	0	129
मिथुन	ल	6	3	2	24	0	ग्रह पिण्ड
कर्क	×	5	2	2	0	0	8
सिंह	×	5	3	3	30	0	योग पिण्ड
कन्या	मं	5	1	1	5	8	134
तुला	बृ	3	0	0	0	0	
वृश्चिक	चं	4	1	0	8	0	
धनु	×	4	2	0	18	0	
मकर	×	4	0	0	0	0	

कुंभ	श	7	4	0	44	0	
मीन	×	3	0	0	0	0	

शन्याष्टक वर्ग

मेष	सू.बु.	5	3	3	21	30	राशि पिण्ड
वृष	शु	1	0	0	0	0	111
मिथुन	ल	3	1	0	8	0	ग्रह पिण्ड
कर्क	×	3	0	0	0	0	69
सिंह	×	3	1	1	10	0	योग पिण्ड
कन्या	मं	4	3	3	15	24	180
तुला	बृ	2	0	0	0	0	
वृश्चिक	चं	4	1	1	8	5	
धनु	×	2	0	0	0	0	
मकर	×	4	3	1	15	0	
कुंभ	श	4	2	2	22	10	
मीन	×	4	1	0	12	0	

लग्नाष्टक वर्ग

मेष	सू.बु.	5	3	3	21	30	राशि पिण्ड
वृष	शु	3	0	0	0	0	145
मिथुन	ल	4	3	1	24	0	ग्रह पिण्ड
कर्क	×	6	2	2	8	0	71
सिंह	×	4	2	2	20	0	योग पिण्ड
कन्या	मं	5	2	2	10	16	216
तुला	बृ	1	0	0	0	0	
वृश्चिक	चं	5	1	1	8	5	
धनु	×	2	0	0	0	0	
मकर	×	5	2	0	10	0	
कुंभ	×	5	4	4	44	20	

मीन	×	4	0	0	0	0

सर्वाष्टक वर्ग

मेष	सू.बु.	36	16	11	112	110	राशि पिण्ड
वृष	शु	24	2	1	20	7	1021
मिथुन	ल	34	12	3	96	0	ग्रह पिण्ड
कर्क	×	33	12	12	48	0	योग पिण्ड
सिंह	×	35	15	15	150	0	1354
कन्या	मं	42	20	17	100	136	
तुला	बृ	24	2	1	14	10	
वृश्चिक	चं	30	9	8	72	40	
धनु	×	28	8	5	72	0	
मकर	×	32	10	1	50	0	
कुंभ	श.	35	13	6	143	30	
मीन	×	33	12	4	144	0	

भाव और ग्रह

प्रत्येक जन्मकुण्डली में 12 स्थान, घर या भाव होते हैं, सबसे ऊपर के स्थान को लग्नभाव कहते हैं। इन भावों के नाम निम्नलिखित हैं–

पहला भाव

लग्न, लग्नभाव, उदय, आद्य।

दूसरा भाव

घनभाव, कुटुम्ब, वाणी।

तीसरा भाव

पराक्रम, सहोदर, भाव, वीर्य, धैर्य।

चौथा भाव

सुखभाव, मातृ भाव।

पांचवां भाव

बुद्धि, घी, पितृ, नन्दन, पुत्रभाव।

छठा भाव

रोग, अंग, शत्रु, रिपु, कष्ट, भय।

सातवां भाव

कलत्रभाव, गृहस्थ, काम, गमन।

आठवां भाव

आयु, रंध्र, मृत्यु।

नवम भाव

धर्म, भाग्य, शुभ।

दशम भाव

राज्य, कर्म।

ग्यारहवां भाव

आय, लाभ।

बारहवां भाव

व्यय, अन्त्यम।

अब आगे यह बताया जा रहा है, कि किस भाव से किन-किन बातों का ज्ञान किया जाता है-

प्रथम भाव

इस भाव से शरीर, शारीरिक स्वास्थ्य, बचपन, आचरण, दुर्बलता-पुष्टता, रंग, गुण, स्वभाव, आत्मबल, रूप, आकृति तथा

व्यक्तित्व का ज्ञान किया जाता है।

द्वितीय भाव

धन, कोष, पैत्रिक सम्पत्ति, कुटुम्ब, मित्र, जेल, गायन, वाणी आदि।

तृतीय भाव

छोटा भाई या छोटी बहिन, पराक्रम, हिम्मत, साहस, वीरता, योग प्रभुत्व, ख्याति, विशेषता आदि।

चतुर्थ भाव

घरेलू जीवन, सुख, मानसिक शांति, वाहन, चौपाये पशु, मनोरंजन, माता।

पंचम भाव

संतान, सन्तान सुख, विद्या, भावना, ख्याति, प्रबन्ध, दक्षता, अनायास धन प्राप्ति, जुआ, नम्रता आदि।

षष्ठ भाव

शत्रु, रोग, भय, मुकदमा, झगड़ा, परतंत्रता आदि।

सप्तम भाव

स्त्री, स्त्री का स्वास्थ्य, मदन पीड़ा, प्रेमी–प्रेमिका, भोग–विलास, विवाह, स्त्री का रूप–रंग, आकृति, स्वभाव आदि का अध्ययन।

अष्टम भाव

आयु, मानसिक व्यथा, विदेश, ;ण, संग्राम, यज्ञादि।

नवम भाव

भाग्य, भाग्योन्नति, भाग्यपतन, धर्म, शुभ–कार्य, प्रसिद्धि, नेतृत्व आदि।

दशम भाव

राज्य, मान, नौकरी, प्रतिष्ठा, सेवावृत्ति, पितृ-सुख, व्यापार, ऐश्वर्य, भोग, कीर्ति, आत्मविश्वास, प्रोमोशन, स्थान, परिवर्तन आदि।

एकादश भाव

लाभ, आमदनी, आमदनी के स्रोत, गुप्तधन, वाहन सुख, बड़े भाई का सुख, स्वतंत्र चिंतन आदि।

द्वादश भाव

व्यय, हानि, ;ण, व्यसन, शत्रु, विरोध, फिजूलखर्ची आदि।

अब आगे प्रत्येक ग्रह किस-किस का कारण है, इसे स्पष्ट किया जा रहा है-

सूर्य

आध्यात्मिक भावना, पराक्रम, तेजस्विता, हिंसक कार्य एवं हिम्मत का कारक ग्रह है।

चंद्रमा

सज्जनता, शीलता, नम्रता, भावुकता, सुन्दरता, यात्रा आदि। मस्तिष्क सम्बन्धी विचारों कार्यों का विशेष प्रतिनिधि है।

मंगल

युद्ध, नेतृत्व, सेनापतित्व, पुलिस, अस्त्र-शस्त्र, कृषि भूमि सम्बन्धी कार्य। डॉक्टरी परीक्षा, मकान, सुख आदि।

बुध

व्यापार, लेन-देन, खरीद-बिक्री, वणिक वृत्ति, ऐश्वर्य, भोग बैंकिंग, स्टेनो, टाइपिस्ट आदि।

गुरु

शिक्षा, पांडित्य, वाद-विवाद, शास्त्रार्थ, धार्मिक कार्य, प्रोफेसर,

गजेटेड अधिकारी नेतृत्व, प्रसिद्धि आदि।

शुक्र

सुन्दरता, सौम्यता, संगीत, कला, सिनेमा, विदेश यात्रा, हड्डी · विशेषज्ञ, वेश्या, मौज, प्रेम, प्रेमी-प्रेमिका आदि।

शनि

छल-कपट, धोखा, व्यभिचार, रोग, ;ण, कूटनीतिज्ञता, नेता, राजदूत आदि का कारक ग्रह है।

विशेष

अष्टक वर्ग का अध्ययन जितना सरल है उतना ही रोचक और प्रामाणिक भी। अष्टक वर्ग से प्रत्येक ग्रह की शक्ति का अनुमान हो जाता है और साथ ही यह भी पता चल जाता है कि वह किसका कारक है।

कोई भी ग्रह जब अपने ही वर्ग में पांच रेखाओं को लेकर बैठता है, तो प्रबल माना जाता है, और प्रबल ग्रह अपने कारकत्व को बढ़ायेगा ही।

रेखाओं के सम्बन्ध में निम्न जानकारी उपयोगी रहेगी-

1. रेखा-अत्यन्त कमजोर निर्बल
2. रेखा-सामान्य
3. रेखा-दोष युक्त, शुभंता की ओर अग्रसर होने वाला
4. रेखा-सम (न शुभ न अशुभ)
5. रेखा-अनुकूल
6. रेखा-श्रेष्ठ
7. रेखा-विशिष्ट, प्रबल
8. रेखा-पूर्णतः अनुकूल ।

उदाहरणार्थ यदि जन्मकुण्डली में सूर्य पंचम भाव का स्वामी हो तथा वह सूर्याष्टक वर्ग में दो रेखाओं को ही लिये हुये हो तो उस जातक के जीवन में सेतान का अभाव तथा संतान-दुख

बना रहेगाा ।

पर यदि यही सूर्य दशम भाव में पांच या छः रेखा से युक्त स्थित हो तो वह व्यक्ति राज्य पक्ष में शाीघ एवं श्रेष्ठ उन्नति करता है, तथा उच्चपद प्राप्त करता है ।

इस प्रकार ग्रह बल देखकर जो फलादेश किया जाता है, वह पूर्ण प्रमाणिक एंव सत्यता के निकट होता है ।

सूर्य अष्टक वर्ग

एक या एक से अधिक रेखाओं से सम्पन्न (अपने अष्टक वर्ग में) सूर्य निम्न फल देता है-

1. रेखा

यदि सूर्याष्टक वर्ग में सूर्य को केवल एक ही रेखा मिली हो तो वह कंइ व्रकार की बीमारियां देता है, प्रत्येक कार्य में बाधा, अडचन एंव विलम्ब प्रदान करता है, तथा सूर्य की वजह से वह जातक व्यर्थ ही इधर-उधर भटकता रहता है ।

2. रेखा

दो रेखा युक्त सूर्य हो तो अपने परिवार में मतभेद बने रहते हैं, वह अनुकूल कार्य करे, फिर भी लोग उस पर शक करते हैं, राज्य सेवा में बाधाएं एवं कठिनाइयां आती हैं, तथा आर्थिक दृष्टि से कमजोर रहता है।

3. रेखा

मानसिक परेशानियां रहती हैं, तथा शारीरिक स्वस्थता बनी रहती है, प्रत्येक कार्य के प्रारम्भ में कठिनाइयां एवं बाधाएं आती हैं।

4. रेखा

चार रेखा से युक्त सूर्य का फल मिश्र होता है, उसके जीवन में उतार-चढ़ाव बने रहते हैं। बार-बार खुशी एवं गम के

मौके आते रहते हैं। एक बार लाभ हो जाता है, तो अगली ही बार हानि का अवसर उपस्थित हो जाता है।

5. रेखा

इसे सहयोग अनायास मिलने लग जाता है। शिक्षा पूर्ण होती है, सन्तान सुख पूर्ण होता है पर सन्तान संख्या कम ही होती है, अधिकतर एक या दो सन्तान होती हैं।

6. रेखा

जिस जातक के सूर्याष्टक वर्ग में सूर्य के पास छः रेखाएं हों, उसका उत्तम स्वास्थ्य होता है तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व होने के कारण वह सहज ही लोगों का आकर्षक पात्र बन जाता है, वाहन सुख पूर्ण होता है, तथा प्रसिद्धि एवं ख्याति के मामले में सौभाग्यशाली सिद्ध होता है।

7. रेखा

अत्यन्त उच्च प्रभावशाली तथा भाग्यवान होता है, तथा आशातीत सम्मान, प्रतिष्ठा एवं आदर प्राप्त होता है।

8. रेखा

श्रेष्ठ राजनीति सम्मान तथा राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त होता है, एवं जीवन में स्मस्त सुखों का उपभोग करता हैं।

किसी भी अष्टकवर्ग में एक ग्रह कम-से-कम शून्य या एक रेखा तथा ज्यादा-से-ज्यादा आठ रेखा ही प्राप्त कर सकता है, इसीलिए ऊपर एक से आठ रेखा प्राप्ति तक का विवेचन किया।

अब नीचे सूर्य से सम्बन्धित कुछ तथ्य स्पष्ट कर रहा हूं-

(1) सूर्याष्टक वर्ग में मेषादि राशियों में जिस प्रकार रेखाएं हों, गोचर में सूर्य उन राशियों पर आने पर उसके अनुसार फल देगा।

उदाहरण कुण्डली का सूर्याष्टक वर्ग देखें, उसमें रेखा स्थिति

निम्न प्रकार से है।

राशि	रेखायोग	फल
मेष	5	सुख
वृष	4	सम
मिथुन	3	क्लेश
कर्क	2	अर्थक्षय
सिंह	5	सुख
कन्या	5	सुख
तुला	4	सम
वृश्चिक	4	सम
धनु	4	सम
मकर	3	क्लेश
कुम्भ	4	सम
मीन	5	सुख

गोचर में जब भी सूर्य मेष राशि पर होगा। तो वह (मेष राशि में पांच बिन्दु होने से) सुख प्रदायक होगा, बिगड़ता हुआ काम बन जायेगा, शिक्षा की स्थिति अनुकूल होगी, सन्तान से सुख मिलेगा, तथा लाभ होगा।

पर जब सूर्य मिथुन राशि पर गोचर वश आएगा, तब मानसिक अशांति, क्लेश एवं पारिवारिक मनमुटाव होगा, शारीरिक अस्वस्थता होगी, तथा प्रत्येक कार्य के प्रारम्भ में कुछ कठिनाइयां आयेंगी।

इसी प्रकार सूर्य का अन्य राशियों पर भ्रमण के समय भी विचार करना चाहिए।

सूर्य ही नहीं, अपितु अन्य ग्रहों का फल भी राशियों में पडी रेखा संख्या के अनुसार फलकथन करना चाहिए।

(2) यदि जन्मकुण्डली में लग्न में तीन रेखाओं से युक्त हो तो, जातक निश्चय ही दुर्बल, कमजोर, स्वास्थ्य रखने वाला एवं चिड़चिड़े स्वभाव का होता है। पर यदि सूर्य पांच या अधिक

रेखाओं से युक्त होकर अपनी स्वराशि या मित्र राशि में स्थित हो तो जातक को उत्तम स्वास्थ्य व ख्याति प्रदान करने में समर्थ होता है।

(3) यदि सूर्य अपनी राशि या मित्र राशि में न हो तथा मात्र दो या तीन रेखाओं से ही युक्त हो तो जातक सदैव बीमार रहता है।

(4) जन्मकुण्डली में जिस राशि में सूर्य हो, उससे 9वां स्थान पिता का स्थान कहलाता है, उस पिता के स्थान में जितनी रेखाएं हो, उसका गुणा सूर्याष्टक वर्ग के योग पिंड से करके 27 का भाग देने से जो शेष बचे उसे अश्विनी से गणना करने पर जो नक्षत्र आए, उस नक्षत्र पर शनि गोचरवश आने पर पिता की मृत्यु समझनी चाहिए।

उदाहरण कुण्डली में सूर्य मेष राशि में है, मेष से नवम राशि धनु है, सूर्याष्टक वर्ग में धनु राशि रेखा संख्या 4 है, तथा सूर्य का योगपिंड 144 है।

अतः 144 × 4 = 576 ÷ 27 भागफल 21 शेष 9, अब अश्विनी से 9वां नक्षत्र आश्लेषा है, अतः जब शनि आश्लेषा नक्षत्र पर आयेगा, तब पिता की मृत्यु या पिता की मृत्यु तुल्य कष्ट होगा।

(5) ऊपर नियम चार के अनुसार ही जब शनि दसवें या उन्नीसवें नक्षत्र पर होगा, तब पिता के भाई की मृत्यु या मृत्यु सम कष्ट होगा।

(6) राशि के अनुसार पिता के स्थान की रेखा संख्या को योगपिंड से गुणा कर 12 का भाग देने से जो शेष बचे, उस राशि पर शनि आने से पिता को कष्ट समझना चाहिए।

पूर्व उदाहरण कुण्डली में पिता का स्थान धन राशि हुई, जिसकी रेखा संख्या 4 है, अतः 4 का योगपिंड 144 से गुणा करने पर योगफल 576 में 12 का भाग देने से शेष शून्य बचा। अतः धन राशि में ही जब शनि गोचर में होगा तभी पिता की मृत्यु सम कष्ट समझना चाहिए।

यदि ऐसे ही समय में मारक दशा चल रही हो तो मृत्यु एवं धन्य दशा चल रही हो तो मृत्यु सम कष्ट समझना चाहिए।

(7) यदि एकाधिपत्य शोधन के उपरांत सूर्य दो रेखाओं से युक्त जन्मकुंडली में केन्द्र में बुध या मंगल के साथ बैठा हो तो जात के जन्म के बाद पिता का भाग्योदय होता है।

(8) यदि सूर्य के पांच या छः रेखाओं से युक्त होकर चन्द्रमा के साथ बैठ जाए, तो उसके पिता की दुर्घटना से आकस्मिक मृत्यु होती है।

(9) पिता के जन्म लग्न से आठवीं राशि तक का लग्न उसका जन्म लग्न हो या उसके जन्म लग्न में पिता की अष्टमेष बैठा हो तो उसके पिता की मृत्यु शीघ्र ही समझनी चाहिये।

(10) सूर्य छठे या 11वें भाव में ही विशेष शुभदायी माना गया है। यदि सूर्य चार से अधिक सेवाओं से सम्पन्न होकर छठे या 11वें स्थान में स्थित हो, तो वह जिस भाव में स्थित हो, उस भाव की तो वृद्धि करता ही है साथ ही वह जिस भाव का स्वामी होता है, उस भाव की भी वृद्धि करता है।

उदाहरण जन्मकुण्डली में सूर्य एकादश भाव में पांच रेखाओं से युक्त है जो कि लाभ का स्थान है, एवं मिथुन लग्न होने से पराक्रम भाव का स्वामी है, अतः ऐसे सूर्य के कारण जीवन भर उसका सम्मान प्रभुत्व बना रहेगा, तथा लाभ की विशेष स्थिति बनी रहेगी।

(11) यदि सूर्य 3 या 4 रेखाओं से युक्त होकर केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हो तो उसके पिता की मृत्यु 18वें वर्ष में समझनी चाहिए।

(12) यदि सूर्य दो या तीन रेखाओं से युक्त होकर राहु के त्रिकोण में बैठा हो तो उसके जन्म के सात वर्षो बाद ही पिता की मृत्यु समझनी चाहिए।

(13) मैं शास्त्र की बात तो नहीं कहता, पर जहां तक मेरे अनुभव में आया हैं, यदि सूर्य तीन या इससे कम रेखाओं से युक्त होकर शत्रु गृह में या शत्रु के साथ बैठा हो तो उस जातक

की मृत्यु 42वें वर्ष में होती है।

(14) सूर्य के योग पिंड को सूर्य स्थित राशि से आगे सातवी राशि में पड़ी रेखा से गुणा कर गुणफल में 27 का भाग देने पर जो शेष बचे अश्विनी से उतनी ही संखया वाले नक्षत्र पर बृहस्पति आने पर पिता का एक्सीडेंट समझना चाहिए।

(15) ऊपर संख्या 14 में की गई गणित के अनुसार ही जब इस नक्षत्र पर सूर्य आयेगा, तब भी वह समय उसके पिता के लिए घातक एवं कष्टदायक रहेगा।

(16) सूर्य से अष्टम स्थान में जितनी रेखायें हों, उसे सूर्य के योग पिंड से गुणा कर गुणनफल में 12 का भाग देने पर जो शेष बचे उसे मेष से गिनने पर जो राशि आये, उसी राशि पर शनि आने पर जातक की मृत्यु समझनी चाहिये।

यदि दशा अनुकूल हो तो मृत्यु तुल्य कष्ट समझना चाहिए।

उदाहरणार्थ कुण्डली में सूर्य मेष राशि में है, उससे आठवीं राशि वृश्चिक में 4 रेखायें हैं, तथा सूर्य के योग पिंड 144 है, अतः 144 × 4 = 576 ÷ 12 शेष शून्य अर्थात मीन राशि पर शनि आने पर वह समय जातक के लिए मृत्यु या मृत्युसम कष्टदायक रहेगा।

(17) सूर्याष्टक वर्ग में जिस राशि में सर्वाधिक रेखायें हों, उस राशि में सूर्य आने पर शुभ कार्य करने चाहिए।

(18) यदि सूर्य अष्टक वर्ग में किसी राशि में एक भी रेखा न हो तो उस राशि पर सूर्य आने पर कोई भी शुभ कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए।

विवाहादि में इस प्रकार का विशेष विचार करना शुभ रहता है।

चन्द्र अष्टक वर्ग

अपने स्वयं के अष्टक वर्ग में जितनी रेखायें हों उसका फल निम्न प्रकारेण समझना चाहिये।

1. रेखा–बदनामी एवं घोर चिन्ता।

2. रेखा–बीमारी, माता की स्वास्थ्य क्षीणता।

3. रेखा–सामान्य अनुकूलता।

4. रेखा–गृह सुख, अनुकूलता।

5. रेखा–मानसिक शांति, आत्म बल, चारित्रिक दृढ़।

6. रेखा–मस्तिष्क–उर्वरता, उच्चादर्श एवं मौलिकता।

7. रेखा–श्रेष्ठ सद्गुणों से युक्त दिव्यता।

8. रेखा–उच्चादर्श पूर्ण, सुखी एवं समृद्ध जीवन एवं पूर्णता, प्रसन्नता।

(1) यदि चंद्रमा दो या तीन रेखाओं से युक्त होकर पड़ा हो तो वह कमजोर एवं बीमार–सा रहेगा, उसे निरन्तर उदर रोगों का सामना करना पड़ेगा, तथा 'गैस्ट्रिक ट्रबल' मानसिक चिन्ता बनी रहेगी।

यदि चंद्रमा दो रेखाओं से युक्त हो तथा अन्य किसी दो पाप ग्रहों या क्रूर ग्रहों के साथ स्थित हो तो जातक की उम्र ज्यादा से ज्यादा 36 वर्ष की होती है।

(2) यदि चंद्रमा दो रेखाओं से युक्त होकर राहु के साथ बैठा हो तो जातक विक्षिप्त–सा रहता है, तथा उसका मस्तिष्क उसके नियन्त्रण में नहीं रहता।

(3) चंद्रमा जिस भाव में भी एक या दो रेखाओं को लेकर बैठेगा, उस भाव की हानि ही करेगा। यदि चंद्रमा दो रेखाओं से युक्त होकर भाग्य भाव में बैठा हो तो उसे भाग्यहीन बनाने में ही चंद्रमा मदद करेगा।

(4) यदि चंद्रमा पांच या इससे अधिक रेखायें लेकर जन्मकुण्डली में छठे या ग्यारहवें भाव में बैठा हो तो जातक

निश्चय ही लखपति होगा।

यदि ऐसे चंद्रमा के साथ गुरु पांच या उनसे अधिक रेखा सम्पन्न होकर बैठा हो या दृष्टि रखता हो तो उसका द्रव्य लोकोपकारी कार्यों में व्यय होता है।

मेरे अनुभव में ऐसी कई लखपतियों-करोड़पतियों की जन्मपत्रिकायें आई हैं जिनकी कुण्डली में चंद्रमा छः या सात रेखाओं से युक्त होकर छठे या ग्यारहवें भाव में बैठा है, बिड़लाजी, हेनरी फोर्ड आदि धनकुबेर इसके उदाहरण हैं।

(5) यदि चंद्रमा तीन से कम रेखाओं से युक्त होता है तो वह शत्रु द्वारा संतापित एवं पीड़ित रहता है।

(6) यदि चंद्रमा त्रिकोण भावों-पंचम-नवम्-का स्वामी होकर जन्म कुण्डली में कहीं भी (8वां या 12वां भाव छोड़कर) बैठा हो तो व्यक्ति को तुरन्त निर्णय लेने वाला, बुद्धिमान, आदर्श कल्पना लोक में विचरण करने वाला बनाता है, पर इसके लिए यह आवश्यक है कि ऐसा चंद्रमा पांच से अधिक रेखाओं से युक्त हो।

(7) चंद्रमा से चौथी राशि में जितनी रेखायें हों, उनसे चंद्रमा के योगपिंड से गुणा कर 27 का भाग देने पर जो शेष बचे उसे अश्विनी से गणना कर आने वाले नक्षत्र पर जब शनि गोचर वश भ्रमण करता है, तब उसके माता की मृत्यु समझनी चाहिये।

उदाहरण कुण्डली में चन्द्रमा वृश्चिक राशि में है, उससे चौथी राशि कुम्भ हुई। चंद्रमा के अष्टक वर्ग में कुम्भ राशि में 4 रेखायें हैं तथा चंद्राष्टक वर्ग में चंद्रमा के योग पिंड 192 हैं। अतः 18 × 4 = 768 ÷ 27 तथा शेष 15 बचे। अश्विनी से गणना करने पर 15वां नक्षत्र स्वाति है। अतः जब शनि स्वाति नक्षत्र पर आएगा, तब जातक के माता की मृत्यु समझनी चाहिए।

(8) चन्द्रमा जिस राशि में हो उससे चौथी राशि में जितनी रेखाएं हों उसे चन्द्रमा के योगपिंड से गुणा कर गुणनफल में 12 का भाग दो जो शेष बचे उसे मेष से गिनने पर उस राशि में

शनि आने पर माता की मृत्यु समझनी चाहिए।

उदाहरण कुण्डली में चन्द्रमा वृश्चिक राशि में है, उससे चौथी राशि कुम्भ हुई, जिसकी चार रेखाएं हैं, इसे चन्द्रमा के योगपिंड 197 से गुणा करने पर गुणनफल 768 आया, इसमें 12 का भाग देने पर भागफल 64 तथा शेष बचे। मेष में गिनने पर अतः जब शनि मेष राशि में आएगा, तब जातक की माता की मृत्यु समझनी चाहिए।

(9) यदि चन्द्रमा सात या आठ रेखाओं से युक्त होकर केन्द्र में बैठा हो तो जातक उच्च शिक्षा सम्पन्न बुद्धिमान, शक्तिशाली मस्तिष्क पर असाधारण नियन्त्रण रखने वाला एवं चतुर होता है।

(10) यदि चन्द्रमा शून्य या एक बिन्दु से होकर सातवें, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो तो जातक की माता की मृत्यु उसके बाल्यावस्था में ही हो जाती है।

(11) चन्द्राष्टक वर्ग में जिस राशि में सबसे अधिक रेखाएं हों, उस राशि में चन्द्रमा जाने पर शुभ कार्य करने चाहिए।

(12) जिस राशि में दो या तीन तक रेखाएं हों, उस राशि में जब गोचर वश चन्द्रमा जाए, तब शुभ कार्य नहीं करने चाहिये।

(13) यदि त्रिकोण या केन्द्र में चन्द्रमा दो या तीन रेखाओं से युक्त होकर नीचे स्थान या शत्रु क्षेत्र में पड़ा हो तो वह चन्द्रमा जिस भाव में होता है, उस भाव का नाश करता है।

(14) चन्द्रमा दो या तीन रेखाओं से युक्त होकर सप्तम या अष्टम स्थान में स्थित हो तथा उस पर राहु की दृष्टि हो तो जातक की माता चिररोगिणी बनी रहती है।

(15) यदि चन्द्रमा पांच या इससे अधिक रेखाओं से युक्त होकर केन्द्र या त्रिकोण में हो तो वह चन्द्रमा जिस भाव में स्थित होता है, उस भाव की वृद्धि करता है।

(16) यदि चन्द्रमा से मंगल सातवें या आठवें भाव में है। तथा चन्द्रमा दो या तीन रेखाओं से युक्त हो तो जातक की

चौतीसवें या पैंतीसवें वर्ष में माता से विछोह सहन करना पड़ता है।

(17) चतुर्थ भाव में पापग्रह हो। बारहवें भाव में चन्द्रमा दो या तीन रेखाओं से युक्त होकर स्थित हो तो जातक की चौतीसवें या पैंतीसवें वर्ष में माता से विछोह सहन करना पड़ता है।

(18) सात या आठ रेखाओं से युक्त चन्द्रमा यदि केन्द्र में स्थित हो तो जातक प्रसिद्ध, ख्याति, कीर्तिवान, यशस्वी एवं विद्या व्यसनी होता है।

(19) यदि क्षीण चन्द्रमा (चन्द्रमा जितना ही सूर्य से नजदीक होगा, उतना ही क्षीण कहा जायेगा) लग्न में शून्य एक या दो बिन्दुओं से युक्त होकर स्थित हो तो जातक की मृत्यु एक्सीडेंट या जहर खाने से होती है।

(20) एकाधिपत्य शोधन के उपरांत चन्द्राष्टक वर्ग में जितनी रेखायें हों, उसे चन्द्रमा के योगपिंड से गुणा कर गुणनफल में 27 का भाग दो तथा जो शेष बचे उसे अश्विनी से गणना करने पर जो नक्षत्र आए, उस नक्षत्र पर जब शनि आयेगा, तब जातक को बड़ी भारी मुसीबत, मानहानि या पारिवारिक स्वजन की मृत्यु आदि का सामना करना पड़ेगा।

उदाहरण कुण्डली में चन्द्राष्टक वर्ग में एकाधिपत्य शोधन के बाद कुल रेखाओं का योग 15 है तथा योगपिंड 192 है। अतः 192 × 15 = 2880 ÷ 27 = योगफल 106 शेष 18 अश्विनी नक्षत्र से गणना करने पर 18वां नक्षत्र ज्येष्ठा होता है, अतः जब शनि ज्येष्ठा नक्षत्र पर आयेगा, तब जातक को विशेष सामना करना पड़ सकता है।

यहां यह भी स्मरण रखना चाहिये, कि जो नक्षत्र इस प्रकार कष्टप्रद हो उसके आगे का 10वां तथा 19वां नक्षत्र भी वैसा ही कष्टप्रद होता है।

पूर्व उदाहरण में ज्येष्ठा नक्षत्र कष्टप्रद सिद्ध हुआ है, इसके आगे गणना करने पर दसवां नक्षत्र रेवती तथा उन्नीसवां नक्षत्र

आश्लेषा पर भी जब शनि गोचर वश भ्रमण करेगा तब भी जातक को वैसी परेशानी का सामना करना पड़ेगा।

पाठकों की जानकारी हेतु नीचे क्रम से सत्ताईस नक्षत्र को लिख रहा हूं, जिससे पाठकों को गणना करते समय परेशानी का सामना न करना पड़े-

1. अश्विनी
2. भरणी
3. कृत्तिका
4. रोहिणी
5. मृगशिरा
6. आर्द्रा
7. पुनर्वसु
8. पुष्य
9. आश्लेषा
10. मघा
11. पूर्वफाल्गुनी
12. उत्तराफाल्गुनी
13. हस्त
14. चित्रा
15. स्वाती
16. विशाखा
17. अनुराधा
18. ज्येष्ठा
19. मूल
20. पूर्वाषाढ़ा
21. उत्तराषाढ़ा
22. श्रवण
23. धनिष्ठा
24. शर्ताभषा
25. पूर्वाभाद्रपद
26. उत्तराभाद्रपद
27. रेवती

(21) एकाधिपत्य शोधन के उपरांत चन्द्राष्टक वर्ग यदि कुल रेखाएं-

(1) 5 हो या इससे कम हो तो जातक विक्षिप्त कमजोर बुद्धि वाला एवं सामान्य जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

(2) यदि 6 से 10 तक हों तो रेखाएं सामान्यतः सुखी, कुछ परिश्रम करने के बाद सफलता प्राप्त करने वाला, बाधाओं के साथ अपना भाग्योदय करने वाला, एवं परोपकारी होता है।

(3) यदि 11 से 15 रेखाएं हों तो वह जातक मेधावी, मस्तिष्क पर अद्‌भुत नियंत्रण रखने वाला, तुरन्त निर्णय लेने वाला, बुद्धिजीवी, साहसी, परोपकारी आध्यात्मिक विचारों से

अनुप्राणित सफल जातक होता है।

(4) यदि 16 या इससे अधिक रेखाएं हों तो वह जातक श्रेष्ठ एवं अद्भुत व्यक्तित्व रखने वाला, धनकुबेर, समाज में सम्मानित एवं श्रेष्ठ नर होता है।

भौमाष्टक वर्ग

भौमाष्टक वर्ग में रेखाओं का फल निम्न प्रकार से समझना चाहिए-

1. रेखा-शरीरिक कमजोरी या अंगभंग निर्बलता।

2. रेखा-एकान्तावासी होना, असत्यभाषी, बाधाओं एवं परेशानियों से धिरे रहना।

3. रेखा-कठोर जीवन बिताने को बाध्य होना, झूठा लांछन लगाना तथा कथनी एवं करनी में अन्तर होना।

4. रेखा-सम, अच्छा और बुरा दोनों।

5. रेखा-सहायता प्राप्त होना, अप्रत्याशित लाभ, विजय, श्त्रु, परास्त होना।

6. रेखा-पूर्ण विजय, राज्य कृपा, एवं मित्रों से सहयोग।

7. रेखा-पारिवारिक सहयोग एवं भाइयों से विशेष लाभ आर्थिक लाभ।

8. रेखा-पूर्ण सफलता, द्यनी, भूमि लाभ, कृषि लाभ, शत्रुओं पर विजय तथा जीवन में ख्याति सम्मान मिलना।

भौम या मंडल का अष्टक वर्ग में विशेष स्थान है, इस ग्रह के द्वारा विशेष रूप से भाई, भाइयों की संख्या, भाइयों से सहयोग, भाई की मृत्यु का समय, कृषि, मकान बनना, भूमि लाभ, धन सम्पति एवं पारिवारिक सुख का ज्ञान किया जाता है।

1. जन्मकुण्डली में जिस राशि में मंगल स्थित हो, उससे आगे की तीसरी राशि में जितनी रेखाएं होंगी, उस जातक के उतने ही भाई बहिन होंगे, फलदीपिका के अनुसार-'भौमा तृतीय राशिस्थ फलै भर्तृगण वदेत्' अर्थात् मंगल से आगे की तीसरी राशि में

स्थित रेखाओं की संख्या ही उसके भाई–बहिनों की संख्या होगी।

उदाहरण जन्मकुण्डली में मंगल कन्या राशि में है, कन्या राशि से तीसरी राशि वृश्चिक हुई, भौमाष्टक वर्ग में वृश्चिक राशि में दो रेखाएं हैं, अतः यह स्पष्ट है कि सम्बन्धित जातक दो भाई–बहिन होंगे।

2. यदि मंगल जन्मकुण्डली में केन्द्र या त्रिकोण में हो तो तथा सात या आठ रेखाओं से युक्त हो तो वह व्यक्ति निश्चय ही लखपति बनना है इसमें सन्देह नहीं।

3. यदि मंगल वृश्चिक राशि या मकर राशि में आठ रेखाओं से युक्त होकर नवम भाव या लग्न चतुर्थ या दशम भाव में स्थित हो तो वह व्यक्ति करोड़पति होता है।

4. यदि सात या आठ रेखाओं से युक्त होकर मंगल मेष, सिंह, धनु या मकर राशि में हो तो बड़ा पूंजीपति होता है, और यदि चार रेखाओं से युक्त ऐसा मंगल स्थित हो तो भूमिपति बनता है।

5. आठ रेखाओं से युक्त मंगल लग्न या दशम भाव में हो तो व्यक्ति के जीवन में द्रव्य का अभाव नहीं रहता, यदि ऐसा मंगल उच्च क्रा हो तो वह धवल कीर्ति के साथ करोड़पति होता है।

6. मंगल कारक ग्रह होकर जन्मकुण्डली में कहीं भी आठ रेखाओं से युक्त हो तो निश्चय ही वह जातक प्रतापी सामर्थ्यवान एवं धनी जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

7. यदि मंगल आठ रेखा युक्त होकर मकर, मेष या वृश्चिक का होकर चतुर्थ या दशम भाव में स्थित हो तो वह व्यक्ति निश्चय ही मिनिस्टर बनता है।

सन् 1966 की घटना है, एक साधारण एम0 एल0 ए0 की जन्मकुण्डली देख रहा था, जिनकी कि तुला लग्न था तथा चतुर्थ भाव में मकर राशि का मंगल आठ रेखाओं से युक्त था।

जन्म कुण्डली में मंगल की स्थिति वस्तुतः आश्चर्यजनक थी पर वह सामान्य एम0 एल0 ए0 के स्तर से ऊंचा उठा ही

नहीं था, लगभग आठ महीने बाद मंगल की दशा प्रारम्भ होने वाली थी।

मैंने जब उन्हें लिखकर दिया, कि साल भर के भीतर आप केबिनेट के मिनिस्टर या मुख्यमन्त्री बनेंगे तो के ठठाकर हंस दिये बोले–पंडित जी! वे जन्मपत्रिकाएं दूसरी होती हैं, जो मिनिस्टर होते हैं।

विधि का विधान, कि नौ–दस महीने बाद ही उनका टेलीफोन आया–बोले पंडित जी, केबिनेट मिनिस्टर की शपथ लेने के बाद सबसे पहिले आपको टेलीफोन कर रहा हें, कब आपके दर्शन को आऊं?

वस्तुतः वे केबिनेट मिनिस्टर बन गये, इस पर मुझे कोई आश्चर्य नहीं हुआ, आश्चर्य तो तब होता जबकि ऐसा मंगल जन्मपत्रिका में होने और मंगल की दशा आने पर भी वे मात्र एम0एल0ए0 ही बने रहते। वस्तुतः प्रबल कारक मंगल राज्य पक्ष में ऊंचा उठाने में पूर्ण समर्थ होता है।

8. यदि सात या आठ रेखाओं से युक्त मंगल दूसरे या दसवें भाव में हो तो जातक केन्द्रीय सरकार में उच्च पदस्थ अद्यिकारी होता है।

9. यदि मंगल चार रेखाओं से युक्त मेष, मकर या वृश्चिक राशि का होकर सूर्य लग्न, चन्द्र लग्न या जन्म लग्न में हो तो जातक को जीवन में द्रव्य का आभाव सहन नहीं करना पड़ता।

10. भौम निर्बल हो अर्थात शन्यता एक दो रेखाओं से ही युक्त तो उसके भाई दीर्धायु होते हैं।

11. एकाधिपत्य शोधनोपरातं मंगल की जितनी रेखाएं हों, उसमे मंगलाष्टक वर्ग के योगपिंडसे गुणा कर 26 का भाग देने से जो शेष बचे वहां तक अश्विनी नक्षत्र से गणने करने पर जो नक्षत्र बने उस नक्षत्र पर शनि आाने से भाई की मृत्यु समझनी चाहिए ।

उदाहरणार्थ उदाहरण कुण्डली में मंगलाष्टक वर्ग में एकाधिपत्य

शोधन के उपरातं मंगल की रेखा संख्या 7 तथा योगपिंड 129 के गुणा करने पर गुणनफल 903 आये, जिसमें 27 का भाग देने पर भागफल 33 तथा शेष 12 बचे, अश्विनी से 22वां नक्षत्र उ0 फा है। अतः जब उ0 फा नक्षत्र पर शनि आयेगा, तब भाई को कष्ट समझना चाहिए।

12. एकाधिपत्य शोधनोपरांत मंगल की जितनी रेखाएं हों उसे मंगलाष्टक वर्ग के योगपिंड से गुणा कर 12 का भाग दे, तथा जो शेष बचे उसे मेष राशि से गणना करने पर जो राशि आये, उस राशि पर शनि आने से भाई को विशेष कष्ट समझना चाहिए।

उदाहरण जन्मकुण्डली मंगल रेखा 7 तथा योगपिंड 129 का गुणा करने पर गुणनफल 903 स्पष्ट हुआ, जिसमें 12 का भाग देने पर शेष 3 बचा। अतः जब मिथुन राशि पर शनि होगा, तक जातक के भाई को विशेष कष्ट रहेगा, ऐसा समझना चाहिए।

13. यदि क्षीण चन्द्रमा के साथ मंगल छः रेखाओं से युक्त होकर छठे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो तो उस जातक के कोई भाई नहीं होता, और यदि होता भी है, तो बचपन में ही उसकी मृत्यु हो जाती है।

14. यदि मंगल कम रेखाओं से युक्त होकर लग्न में या चन्द्रमा के साथ हो, वह पुत्र गोद लेता है। यदि ऐसा मंगल षष्ठे होकर दूसरे भाव में स्थित हो तो वह स्वयं किसी दूसरे पुरूष की गोद जाता है।

15. यदि तीसरे भाव में मंगल दो या तीन रेखाओं से युक्त होकर शनि के साथ स्थित हो तो उस जातक को भाइयों का सुख नहीं मिलता।

16. यदि तीसरे भाव में छः रेखाओं से युक्त होकर मंगल स्थित हो तो जातक को अपने भाई से सम्पत्ति लाभ होता है।

17. यदि लग्न स्थिर राशि का हो तथा तीसरे भाव का स्वामी पांच या इससे ज्यादा रेखाओं से युक्त होकर द्विस्वभाव राशि में हो तो व्यक्ति आनन्दपूर्वक जीवन-यापन करता है, तथा

उसे भाइयों का पूर्ण सुख मिलता है।

पाठकों की जानकारी हेतु नीचे राशि स्वभाव स्पष्ट कर रहा हूं-

मेष	चर
वृष	स्थिर
मिथुन	द्विस्वभाव
कर्क	चर
सिंह	स्थिर
कन्या	द्विस्वभाव
तुला	चर
वृश्चिक	स्थिर
धनु	द्विस्वभाव
मकर	चर
कुम्भ	स्थिर
मीन	द्विस्वभाव

18. यदि मंगल तीसरे भाव में पांच या इससे अधिक रेखाओं से युक्त हो तथा उसे शुभग्रह देखता हो तो वह व्यक्ति अपने कई भाई रखता है, तथा भाइयों से उसे पूर्ण सुख मिलता है।

19. यदि मंगल दो या तीन रेखाओं से युक्त होकर शनि के साथ लग्न में हो तो उसे जवानी में भाई बिछोह सहना पड़ता है।

20. यदि मंगल तीन या इससे कम रेखाओं से युक्त होकर सप्तमेश के साथ कहीं बैठा हो तो उसे तीस से चौंतीस वर्ष की उम्र के बीच भाई गंवाना पड़ता है।

21. यदि मंगल दो या इससे कम रेखाओं से युक्त होकर अष्टम स्थान में या अष्टमेष से युक्त हो तो जातक को भाई का सुख नहीं मिलता।

22. शनि मंगल की परस्पर दृष्टि हो तथा मंगल पांच

रेखाओं से अधिक बली हो तो जाता जीवन में राजनीतिक क्षेत्र में अच्छी सफलता प्राप्त करता है।

23. यदि मंगल एक या दो रेखाओं से युक्त होकर बुध या गुरु के साथ दृष्टि सम्बन्ध करे तो उसका राजनीतिक जीवन चौपट हो जाता है।

24. यदि शनि से दृष्ट मंगल पांच या इससे अधिक रेखाओं से युक्त होकर दशम भाव में विद्यमान हो तो वह जातक पुलिस या मिलिटरी क्षेत्र में उच्चधिकारी बनता है।

25. यदि मंगल उच्चाभिलाषी हो अर्थात् मिथुन राशि का हो, तथा जन्मकुण्डली में षष्ठ, नवम या एकादश भाव में छाया इससे अधिक रेखाओं से युक्त हो तो जातक मिलिटरी में उच्चपद प्राप्त करता है।

मुझे याद है, भारत-पाक युद्ध के उपरांत फरवरी, 1972 में जब मैं बधाई देने भारत के स्थल सेनाध्यक्ष जनरल साममानिक शॉ से उनके निवास स्थान पर मिला, तो वार्ता के दौरान मैंने उपर्युक्त पच्चीसवां नियम ही उनके सामने स्पष्ट किया था, कि स्थल सेनाध्यक्ष बनाने एवं महत्वपूर्ण विजय दिलाने का एकमात्र श्रेय आपकी जन्मकुण्डली में स्थित मंगल को है, जो कि श्रेष्ठ रेखाओं से युक्त होकर एकादश भाव में उच्चभिलाषी है एवं कारक ग्रह है। यही नहीं अपितु वह सूर्य कुण्डली से तथा चन्द्र कुण्डली से केन्द्र में भी है, जीवन में मान-सम्मान, यश, ख्याति एवं उन्नति का श्रेय निश्चय ही ऐसे ग्रह को है।

वस्तुतः मंगल उच्चाभिलाषी होकर तथा रेखाओं से युक्त होकर लग्न चतुर्थ, षष्ट, नवम या एकादश भाव में हो तो वह व्यक्ति जीवन में पुलिस या मिलिटरी क्षेत्र में अत्यन्त ऊंचा बैठता है।

26. छः या इससे अद्यिक रेखाओं से युक्त मंगल तीसरे भाव में ही तो जातक के कोई भाई जीवित नहीं रहता। जवाहर लाल नेहरू इसके उदाहरण हैं।

27. एकाधिपत्य शोद्यन के उपरान्त भौमष्टक वर्ग में कुल

रेखाएं-

(1) 1 से 5 तक हो तो उसको बिलकुल भाईयों का सुख नहीं मिलता, अथवा उसके भाई होते ही नहीं है।

(2) यदि 6 से 10 तक रेखाएं हो तो भाई कम होते है, पर जीवन भर उनके साथ मतभेद बने रहते है।

(3) यदि 11 से 15 तक रेखाएं हो तो जातक को सामान्यतः भाईयों का सुख मिलता है, एवं कृषि अथवा भूमि सम्बन्धी कार्यों में भी लाभ होता है।

(4) यदि 16 से 20 रेखाओं के बीच हो तो वह व्यक्ति भूमिपति एवं सद्गृहस्थ होता हैं।

(5) यदि 21 से अधिक रेखाएं हो तो वह व्यक्ति विख्यात, धवल कीर्तियुक्त लखपति होता है।

बुद्धाष्टक वर्ग

बुधाष्टक वर्ग में रेखाओं के आधार पर बुध का निम्न रूपण फल समझना चाहिए-

0 रेखा-कायर, अनिश्चय मनःस्थित वाला।

1 रेखा-हानि, कष्ट।

2 रेखा-प्रत्येक कार्य में बाधा या असफलता, पारिवारिक मतभेद एवं जीवन यापन में कठिनाइयां।

3 रेखा-मान हानि, धन हानि, आकस्मिक रूप में अर्थ हानि।

4 रेखा-नौकरी में कठिनाइयां, व्यापार में भारी उतार चढ़ाव का सामना करना।

5 रेखा-अधिक से अधिक लोगों का सहयोग, तथा दूसरों को अपने पक्ष में करने की सामर्थ्य।

6 रेखा- अनुभवी, लक्ष्य पर शीध्रता से अग्रसर होने की क्षमता तथा कार्य में सफलता।

7 रेखा-पूर्ण सम्मान, उत्तम सामाजिक आदर, श्रेष्ठ धन,

संपति एवं सुख।

8 रेखा–राज्यकृपा, पूर्ण भौतिक सुख एवं दिनों दिन सम्मान वृद्धि।

1. बुध जिस राशि में स्थित हो, उससे चौथी राशि कुटुम्ब मामा एवं मित्र के बारे में विचार करना चाहिये, यदि इस राशि में चार या इससे अधिक रेखाएं हों, तो उस जातक को मित्रों का पूरा सहयोग मिलता है, ननिहाल से लाभ होता है, तथा कुटुम्ब में उनका सम्मान रहता है। पर यदि यह राशि शून्य एक दो तीन रेखाओं से ही युक्त हो तो उसे पग पग पर कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, पारिवारिक मत भेद अथवा गलतफहमी बनी रहती है, तथा ननिहाल की ओर से किसी भी प्रकार की सहायता की उम्मीद उसे नहीं करनी चाहिए।

2. बुध जिस राशि में स्थित हो, उससे पांचवी राशि से आध्यात्मिक साधना, लेखन,शिक्षा, प्रसिद्धि तथा यश की जानकारी प्राप्त करनी चाहिए।

यदि उस पांचवी राशि में चार से अधिक रेखाएं हों, तो जातक लेखन कला में निपुण, विद्याव्यसनी एवं सम्मान के साथ जीवत रहने वाला होता है।

3. बुधाष्टक वर्ग में जिस राशि में सर्वाधिक रेखाएं हों, उस राशि पर बुध आने पर कुटुम्ब के सुख में वृद्धि तथा घनागम समझना चाहिए, तथा जिस राशि में चार से कम रेखाएं हों, उस राशि में बुध जाने पर धन हानि, सम्मान क्षति, व्यापारिक कार्यो में असफलता एवं कठिनाइयां समझनी चाहिए।

4. यदि बुध सात या आठ रेखाओं से युक्त होकर केन्द्र या त्रिकाण में स्थित हो तो जातक व्यापारिक कार्यो में सफलता प्राप्त करता है, या बैकिंग क्षेत्र में उच्च सफलताएं हस्तगत करता है।

5. यदि दो तीन रेखाओं से युक्त होकर केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हो तो जातक को पग पग पर अपमानित होना पड़ता है, तथा सहज ही कोई भी उसके कथन पर विश्वास नहीं करता।

6. यदि बुध अपनी स्वराशि में या उच्च राशि में दो या तीन रेखाओं से युक्त होकर भी स्थित हो तो उस भाव की वृद्धि ही होती देखी गई है।

7. यदि बुध केन्द्र या त्रिकोण में चार से अधिक रेखाओं से युक्त हो तथा गुरु पर उसकी दृष्टि हो तो वह जातक वेदों में अथवा वेदाध्ययन में पारंगत होता है।

पर मेरे अनुभव में यह आया है, कि बुध कहीं भी (छठा आठवां स्थान छोड़कर) स्थित हो वह पांच या इससे अधिक रेखाओं से युक्त हो तथा उसे गुरु देख रहा हो तो वह वेदाध्ययन अवश्य करता है।

8. बुध पांच रेखाओं से युक्त हो, तथा शनि से केन्द्र में हो अथवा गुरु से केन्द्र में हो, या लग्न से चौथे छठे या ग्यारहवें में हो तो जातक निश्चय ही ज्योतिष विद्या में प्रवीण एवं योग्य होता है।

9. यदि बुध चार या इससे अधिक रेखाओं से युक्त होकर चन्द्र जिस राशि मे है, उस राशि के स्वामी की राशि में बैठा हो तो वह व्यक्ति शिक्षा के क्षेत्र में सफल होता है, एवं उच्चस्तरीय डिग्री प्राप्त करता है।

10. यदि बुध पांच या इससे अधिक रेखाओं से युक्त होकर शुभ के साथ, या की राशि में बैठा हो, तो वह जातक नृत्य संगीत आदि ललित कलाओं में योग्य एवं प्रवीण होता है।

11. यदि चन्द्र राशि का स्वामी बुध के साथ छठे, आठवें, बारहवें भाव में बैठा हो, तथा बुध चार या इससे कम रेखाओं से युक्त हो तो जातक की शिक्षा अधूरी रहती है।

12. यदि बुध पंचम नवम या एकादश भाव में सूर्य के साथ बैठा हो तथा बुध अपने अष्टम वर्ग में चार रेखाओं से युक्त हो तो जातक धवल कीर्ति प्रतिष्ठा एवं सम्मान का अधिकारी होता है।

13. बुध चार या इससे अधिक रेखाओं से युक्त होकर जिस भाव में भी बैठेगा, उसे भाव की वृद्धि करेगा, पर यदि बुध

छठे, आठवें, बारहवें भाव में स्थित हो तो बुध के पास जितनी कम रेखाएं होंगी उतना ही श्रेष्ठ रहेगा।

14. बुध जिस भाव में बैठा हो, उससे दूसरा भावं यदि दो, एक या शून्य रेखाओं से युक्त हो तो जातक अपने विचारों को स्पष्टता एवं दृढ़ता के साथ व्यक्त करने में असमर्थ होता है।

15. बुध जन्मकुण्डली में यदि कहीं भी स्थित हो, पर यदि वह तीन रेखाओं से कम रेखाओं का स्वामी होगा, तो वह वाक्यचतुर न हो सकेगा एवं जीवन में उसके कथन पर कम लोग विश्वास करेंगें।

16. बुध जिस भाव में बैठा हो उससे भाव यदि सात या आठ रेखाओं से युक्त हो तो जातक निस्संदेह वाक्यचतुर, अपनी भाषणकला से दूसरों को प्रभावित करने वाला, कवि अथवा लेखक होता है।

17. बुध जिस राशि में बैठा हो उससे अगली राशि में यदि रेखा हो तो जातक हकलाकर बोलने वाला होता हैं ।

1 रेखा हो तो जातक अपने विचारो को सही रूप से न तो व्यक्त कर पाता हैं और न सामने वालों को प्रभावित ही कर सकता हैं।

2 रेखा हो तो व्यक्ति साधारण रूप से विचार व्यक्त करने वाला होगा। न तो उसकी वाणी में ओज होगा और न ही प्रवाह।

3 रेखा हो तो जातक बातचीत करने वाला एवं सफलतापूर्वक दूसरों को प्रभावित करने वाला होगा।

4 रेखा हो तो जातक वाचाल, प्रबुद्ध एंव भली प्रकार विचारों को अभिव्यक्त करने में समर्थ होगा।

5 रेखा हो तो जातक की वाणी में ओज, प्रवाह एंव माधुर्य होगा तथा कूटनीतिक र्वाता में होशियार होगा।

6 रेखा हो तो जातक विद्वान, कवि एंव श्रेष्ठ भाषणकर्ता होगा।

7 रेखा हो तो जातक भाषा को जिस रूप में चाहे व्यक्त कर सकता है एंव ऐसा प्रतीत होगा, मानो शब्द उसके अनुकूल

हो एंव भली प्रकार प्रयोग में लाने में होशियार हो।

8 रेखा हो जातक अत्युत्तम भाषण करने वाला, धारा प्रवाह बोलने वाला तथा दूसरो को प्रभावित करने में दक्ष होता है।

18. यदि बुध जहां बैठा हो उससे अगली राशि में सूर्य हो तो जातक की वाणी में बोज, प्रभाव, प्रवाह एंव तेजस्विता होती है।

यदि चन्द्र हो तो स्वतन्त्र एंव चातुर्यपूर्ण वार्ता में प्रवीण होता है।

यदि मंगल हो तो उसकी वाणी में कर्कशता एंव नाद होता है।

यदि गुरु हो तो उसकी वाणी धीर गम्भीर सरल होती है।

यदि शुक्र हो तो वाणी मधुर सरल एवं दिव्य होताी है।

यदि शनि हो तो उसकी वाणी में क्रूरता, कूटनीति एवं चतुराई होती है।

यदि राहु हो तो उसकी वाणी में व्यंग्य छिपा रहता है।

यदि केतु हो तो उसकी वाणी मधुर, स्पष्ट एवं नीतियुक्त होती है।

19. जिस राशि में बुध हो, उससे अगली राशि में जितनी रेखाएं हों, उससे बुधाष्टक के योगपिंड को गुणा करें एवं गुणफल में 12 का भाग देने से जो शेष बचे, उसे शेष राशि से गिनें जो राशि हो, उस राशि के स्वामीं की दशा या अन्तर्दशा में जातक शिक्षा में पूर्णता प्राप्त करता है या उच्च डिग्री प्राप्त करता है या विशेष धन लाभ होता है।

उदाहरण जन्मकुण्डली में बुधाष्टक वर्ग के योगपिड 223 तथा जन्मकुण्डली में बुध मेष राशि में है, इससे दूसरी राशि वृष की रेखा संख्या 4 है, अतः 223 × 4 = 892 ÷ 12 भागफल 74 एवं शेष 4 रहे। मेष से गणना करने पर चौथी राशि कर्क है, जिसका स्वामी चंद्रमा है। अतः चन्द्रमा की दशा अन्तर्दशा में (चन्द्रमा की महादशा हो या किसी भी ग्रह की महादशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा हो) में जातक उपर्युक्त फल प्राप्त करेगा।

या जब गुरु इस प्रकार से आई राशि में (ऊपर के उदाहरण में कर्क राशि) पर गोचर कहेगा तब भी उपर्युक्त फल प्राप्त होगा।

20. बुध जिस राशि में स्थित हो उससे चौथी राशि में जितनी भी रेखाएं हों, उससे बुधाष्टक वर्ग के योग पिंड से गुणा कर गुणफल में 27 का भाग दो, जो शेष बचे, उसे अश्विनी से गुणा करने पर जो नक्षत्र आवे, उस नक्षत्र पर जब शनि भ्रमण करेगा, तब जातक को काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। पारिवारिक मतभेद बढ़ेगें, मानसिक परेशानियों में वृद्धि होगी तथा व्यापारिक कार्यो में बाधा या नुकसान होगा।

पूर्व उदाहरण कुण्डली में बुध मेष राशि में स्थित है। जिससे चौथी राशि कर्क में 3 रेखाएं हैं तथा योगपिंड 223 है, अतः 223 × 3 = 669 ÷ 27 भागफल 24 तथा शेष 21 रहें। अश्विनी से इक्कीसवां नक्षत्र उत्तराषाढ़ा पर शनि गोचरवश भ्रमण करेगा, तब जातक को उपर्युक्त दुःखद घटनाओं का सामना करना पड़ेगा।

21. जन्मकुण्डली में बुध से दशमभाव में जितनी रेखाएं हों उसे बुध के योगपिंड से गुणा कर 12 का भाग दो, जो शेष बचे उसे मेष राशि से गणना करो, जो राशि आवें उस राशि पर जब शनि गोचर भ्रमण करेगा तब जातक को व्यापारिक क्षति, सस्पैंड, राज्य च्युति, मुकदमा या आकस्मिक हानि की सम्भावनाएं बनेगीं।

उदाहरण जन्मकुण्डली में बुध मेष राशि में है। उससे दशम राशि मकर की रेखा संख्या 3 को योगपिंड 223 से गुणा किया 223 × 3 = 669 ÷ 12 = 55 शेष 9 मेष से नवम राशि धनु हैं। अतः जब शनि धनु राशि में गोचर करेगा, तब उपर्युक्त फल को भोगना पड़ेगा।

इस प्रकार बुध का सूक्ष्मतापूर्वक विचार करके ही फलादेश स्पष्ट करना चाहिए।

गुरु अष्टक वर्ग

निम्न रेखाओं के अनुसार गुरु का फल विचार करना चाहिए-

0 रेखा-कुटुम्ब के साथ मतभेद एवं पारिवारिक विरोध।

1 रेखा-कमजोर स्वास्थ्य, एवं मानसिक परेशानियां।

2 रेखा-राज्य की तरफ से चितां, नौकरी में बार बार बाधा एवं कठिनाइयां।

3 रेखा-ज्ञान हानि, रमरण शक्ति में कमजोरी।

4 रेखा-सामान्य, न लाभ न हानि।

5 रेखा-शत्रु विजय,मुकद्दमें में सफलता।

6 रेखा-पूर्ण वाहन सुख एवं धनी व्यक्तियों से लाभ।

7 रेखा-पूर्ण भाग्योदय, एवं प्रसन्नता।

8 रेखा- विख्यात, कीर्तियुक्त, धनी श्रेष्ठ एवं दयालु।

1. गुरू यदि पांच रेखाओं से युक्त होकर त्रिकोण में स्थित हो तो जातक श्रेष्ठ विद्वान एवं अपने लक्ष्य में सफल होता हैं।

2. यदि गुरु पांच या इससे अधिक रेखाओं से युक्त होकर छठे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हों तो जातक दीधायु तथा विख्यात होता हैं।

3. गुरु के अष्टक वर्ग में जिस राशि में सबसे कम रेखा ही उसी राशि में यदि सूर्य हो तो जातक बार बार प्रयत्न करने के बावजूद भी भाग्यहीन ही रहता हैं, एवं अपने लक्ष्य में सफल नहीं हो पाता।

4. यदि गुरु अपनी ही राशि में या अपनी उच्च राशि में सात या आठ रेखाओं से युक्त होकर स्थित हो तो जातक निश्चय ही राज्य सेवा में गजेडेट अधिकारी होता हैं।

5. गुरु जिस राशि में ही उससे अगली पांचवी राशि, पुत्र का प्रतिनिधित्व करती है, यदि वह राशि पांच या इससे अधिक रेखाओं से युक्त हो तो जातक को पुत्र मिलता है।

6. गुरु जिस राशि में हो उससे पांचवी राशि में यदि–

0 रेखा हो तो उसके सन्तान होती ही नहीं।

1 रेखा हो तो सन्तान होने की संभावनाएं धूमिल रहती है।

2 रेखा हो तो सन्तान विलम्ब से होती है तथा सभी सन्तान मन्द बुद्धि एवं दुर्बल होती हैं

3 रेखा हो तों सन्तान अधिक होती है तथा सभी सामान्यस्तरीय होती हैं।

4 रेखा हो तो सन्तान सुख सम रहता है, सब सन्तान में से एक पुत्र प्रतिभाशाली होता है।

5 रेखा हो तो सन्तान सुख रहता है तथा वृद्धावस्था में उनकी सेवा करते है।

6 रेखा हो तो सन्तान प्रतिभाशाली एवं कुल के नाम को उजागर् करने वाली होती हैं।

7 रेखा हो तो पूर्ण सन्तान सुख मिलता है।

8 रेखा हो तो सन्तान विख्यात, कीर्तिवान एवं उच्चाधिकारी, धनी होती है।

7. सूर्य के बुध से युक्त गुरु यदि केन्द्र या त्रिकोण में स्व राशि या उच्च राशि में स्थित हो तथा वह 8 रेखाओं से युक्त हो, तो वह पूरे देश में विख्यात होता है।

7 रेखाएं हों तो धनी, विद्वान एवं गुणों की कद्र करने वाला होता है।

6 रेखाएं हों तो जीवन भर उत्तम वाहन सुख भोग करने वाला, सुखी, सद्गृहस्थ एवं अपने कार्य में चतुर होता है।

5 रेखाओं से युक्त यदि गुरु उपर्युक्त योग बनाता है तो जातक निःसंदेह अपने जीवन में सभी भौतिक सुखों को भोगता है।

8. यदि गुरु छठे, आठवें, ग्यारहवें भाव में भी हो पर वह पांच या इससे अधिक रेखाओं से युक्त हो तो जातक निश्चय ही धनी मुकदमे में विजय प्राप्त करने वाला, तथा सुन्दर पत्नी

का स्वामी होगा।

9. यदि गुरु नीच राशि या शत्रु राशि में चार रेखाओं से युक्त हो तो वह व्यक्ति सन्तान की ओर से परेशान ही रहता है।

10. यदि गुरु से छठे या आठवें चन्द्रमा शून्य या एक दो रेखाओं से ही युक्त हो तो जातक का जीवन ;ण उतारने में ही व्यस्त होता है।

11. गुरु पांच या इससे अंधिक रेखाओं से युक्त होकर चन्द्रमा की राशि में स्थित हो तो जातक विरोधी पार्टी का लीन होता है।

12. यदि गुरु शून्य या एक दो रेखाओं से युक्त होकर कहीं भी बैठा हो तो उस जातक को जीवन में शिक्षा प्राप्त करने के लिए घोर कष्ट उठाना पड़ता है।

13. यदि चन्द्रमा पांच रेखाओं से युक्त होकर परस्पर दृष्ट हों, तो जातक का गृहस्थ जीवन सुखमय बीतता है, तथा वह धनी व्यक्तियों में गिना जाता है।

14. यदि गुरु लग्न से केन्द्र में हो तथा शुक्र से भी केन्द्र में हो या शुक्र की राशि में हो तथा शुक्र गुरु की राशि में हो, एवं गुरु पांच से अधिक रेखाओं का स्वामी हो तो जातक निस्संदेह लखपति एवं विख्यात होता है।

15. लग्नेश दो रेखाओं से युक्त हो, लग्न पर क्रूर ग्रहों का आधिपत्य हो तथा गुरु तीन या इससे कम रेखाओं से युक्त हो तो जातक गरीब, सामान्य स्थिति में जीवन व्यतीत करने वाला एवं अप्रसिद्ध रहता है।

16. गुरु लग्नेश के साथ ही या दोनों एक–दूसरे से दृष्ट हो, तथा दोनों ही सात या आठ रेखाओं से युक्त हो तो जातक विख्यात होता है। तथा अपने कार्यों से कुल के नाम को उजागर करता है।

17. यदि गुरु भाग्येश होकर केन्द्र में बैठे तथा छः या इससे अधिक रेखाओं से युक्त हो तो जातक प्रबल भाग्यशाली

होता है, तथा राज्य में मंत्री पद को सुशोभित करता है।

18. यदि गुरु अकारक ग्रह के साथ या शुक्र ग्रह के साथ दो या तीन रेखाओं से युक्त त्रिकोण में या स्वराशि में बैठे तो जातक की सन्तान निर्धन, अपव्ययी एवं दुश्चरित्र होती है।

19. यदि पंचमेष अष्टम स्थान में हो, और अष्टमेष पंचम स्थान में हो, तथा गुरु चार रेखाओं से न्यून हो, तो ज़ातक को पुत्र पौत्रों का अभाव महसूस होता है।

20. यदि गुरु छठे या आठवें भाव में हो तथा एक या दो रेखाओं से युक्त हो तो तीसरे भाव में जितनी रेखाएं होती हैं, उतनी ही सन्तान की मृत्यु उसे भोगनी पड़ती है।

21. यदि पंचमेष दो पापग्रहों के मध्य स्थित हो, तथा वह केवल दो या तीन रेखाओं से ही युक्त हो तो उसका पुत्र कुल कलंक होता है, तथा अपने कार्यों से वंश के गौरव को धूमिल करता है।

22. यदि गुरु से आगे पंचम राशि में पाप ग्रह हो तथा पांच से अधिक रेखाओं से युक्त हो तथा गुरु तीन रेखाओं से युक्त हो तो जातक किसी लड़के को गोद लेता है।

23. यदि गुरु वक्री हो तथा चार रेखाओं से युक्त हो तो जातक के कुल तीन पुत्र होते हैं।

24. लग्न से पंचम स्थान ऐवं गुरु से पंचम स्थान पर जितनी भी रेखाएं हों, उनका योग कर दो से भाग दो, जो भागफल होगा, उतनी ही सन्तान उसके होंगी, ऐसा विचार करना चाहिए।

25. सन्तान कब होगी, इसके लिए गुरु जिस राशि में हो, तथा पांचवी राशि में जितनी रेखाएं हों, उनसे गुरु के योगपिंड का गुणा कर 27 का भाग दो, जो शेष बचे उसे अश्विनी नक्षत्र से गिनो, जो नक्षत्र आए उस नक्षत्र पर जब गुरु गोचर उस नक्षत्र आयेगा, तब सन्तान का जन्म समझना चाहिए।

उदाहरण जन्मकुण्डली में गुरु तुला राशि में है, तो पांचवी राशि कुंभ हुई, जिसकी रेखा संख्या 4 को गुरु योगपिंड 125 से गुणा करने पर गुणनफल 500 आया इसमें 27 का भाग देने पर

भागफल 18 तथा शेष 14 रहे, अश्विनी से गणना करने पर चौदहवां नक्षत्र. चित्रा आया। अतः जब चित्रा नक्षत्र पर गुरु भ्रमण करेगा तो सन्तानोत्पत्ति समझनी चाहिए।

सन्तानोत्पत्ति किस महीने होगी उसके लिए गुरु किस राशि में हो, उससे पांचवी राशि में जितनी रेखाएं हैं उनका गुरु के योगपिंड से गुणा कर 12 का भाग दें जो शेष बचे, उसे मेष राशि से गणना करें, जो राशि आए उस राशि पर जब सूर्य भ्रमण करेगा, तब सन्तान जन्म समझना चाहिए।

पूर्व उदाहरण में गुरु से पांचवी राशि कुम्भ में 4 रेखाएं हैं, जिसका गुरु के योगपिंड 125 से गुणा करने पर गुणनफल 500 आये, इसमें 12 का भाग दिया तो भागफल 41 तथा शेष 8 रहे, मेष राशि से गणना करने पर आठवीं राशि वृश्चिक हुई। अतः जब वृश्चिक राशि पर सूर्य भ्रमण करे, तब सन्तान जन्म समझना चाहिए।

कुछ विद्वानों के अनुसार गुरु के योगपिंड को 4 से गुणा कर गुणनफल में 12 का भाग देकर जो शेष बचे उस राशि पर सूर्य के भ्रमण करते समय सन्तान जन्म करना चाहिए। राशियों पर सूर्य भ्रमण का समय निम्न है–

मेष–21 मार्च से 20 अप्रैल तक

वृष–1 अप्रैल से 20 मई तक

मिथुन–21 मई से 20 जून तक

कर्क–21 जून से 20 जुलाई तक

सिंह–21 जुलाई से 21 अगस्त तक

कन्या–22 अगस्त से 22 सितम्बर तक

तुला–23 सितम्बर से 22 अक्टूबर तक

वृश्चिक–23 अक्टूबर से 22 नवम्बर तक

धनु–23 नवम्बर से 20 दिसम्बर तक

मकर–21 दिसम्बर से 19 जनवरी तक

कुम्भ–20 जनवरी से 18 फरवरी तक

मीन–19 फरवरी से 20 मार्च तक

गुरु से पंचम राशि में जितनी रेखायें हों (एकाधिपत्य शोधन के उपरान्त) उसका गुरु अष्टक वर्ग की कुल रेखाओं (एकाधिपत्य शोधनोपरांत) से गुणा कर 12 का भाग दो, जो शेष बचे उसे मेष से गिनो, उस राशि पर जब सूर्य आयेगा, तब पुत्र जन्म समझना चाहिए।

पूर्व उदाहरण में एकाधिपत्य शोधनोपरांत कुल रेखायें 9 हैं, तथा गुरु स्थित राशि से पंचम राशि में रेखा 0 है। अतः 9 × 0 = 0 ÷ 12 भागफल 0 तथा शेष 0 अर्थात् धनु राशि। अतः जब सूर्य राशि पर गोचर करेगा, तब पुत्र जन्म समझना चाहिए।

गुरु किस कक्ष में है, यह देखना चाहिए। यदि वह स्व कक्ष में या मित्र कक्ष में हो तो सन्तान सुख एवं शत्रु कक्ष में हो तो सन्तान सुख रहता है।

कक्ष-ग्रह क्रम इस प्रकार है–

(1) शनि

(2) गुरु

(3) मंगल

(4) सूर्य

(5) शुक्र

(6) बुध

(7) चंद्र

(8) लग्न

उदाहरण कुण्डली में गुरु तुला राशि में बैठा है, तुला राशि की रेखा संख्या 24 है, तथा गुरु के ग्रह पिंड 8 हैं, 24 ÷ 8 = 3 अतः गुरु मंगल के कक्ष में है, जो कि शुभ है।

इस प्रकार गुरु का अध्ययन कर शुभाशुभत्व ज्ञात किया जा सकता है।

शुक्राष्टक वर्ग

शुक्राष्टक वर्ग का विचार निम्न रेखाओं के आधार पर करना चाहिए।

0 रेखा–आकस्मिक दुर्घटना।

1 रेखा–श्वास सम्बन्धी बीमारी।

2 रेखा–मानसिक परेशानियां, अकारण भाग–दौड़ एवं कठिनाइयां।

3 रेखा–पारिवारिक मतभेद एवं अधिकारियों से मनमुटाव।

4 रेखा–सुख–दुख का मिश्रित प्रभाव।

5 रेखा–पारिवारिक सुख, मित्रों का सहयोग एवं उन्नति की इच्छाएं।

6 रेखा–प्रेम सम्बन्ध बने रहना तथा विभिन्न सुखोपभोग।

7 रेखा–जवाहरात उद्योग में लाभ।

8 रेखा–समस्त प्रकार से भौतिक ऐश्वर्य एवं सुख।

1. यदि शुक्र छः–सात या आठ रेखाओं से युक्त होकर पंचम नवम या लग्न चतुर्थ सप्तम या दशम में हो तो वह जातक जीवन भर ऐश्वर्य भोग करता है।

2. यदि शुक्र छठे या बारहवें भाव में चार रेखाओं से युक्त हो, तो जातक धन, यश, मान प्रतिष्ठा एवं सम्मान प्राप्त करता है।

3. यदि शुक्र सात रेखाओं से युक्त होकर चतुर्थ भाव में हो तो जातक संगीत में रूचि लेने वाला होता है।

4. शुक्र का सर्वोत्तम स्थान द्वादश भाव है, इस भाव में वह निर्दोष(वक्री अस्त या नीचराशि गत न हो) हो तो उसे जितनी ही अधिक रेखाएं मिलेंगी, वह उतना ही ज्यादा सौभाग्यशाली माना जाएगा।

5. त्रिकोण में शुक्र चार रेखाओं से युक्त हो तो उसका सम्पर्क एक से अधिक स्त्रियों से रहता है।

6. यदि शुक्र चार या इससे अधिक रेखाओं से युक्त होकर

सप्तम स्थान में हो तो जातक का विवाह बाल्यावस्था में ही हो जाता है।

7. यदि त्रिकोण में शुक्र छः या सात रेखाओं से युक्त हो तो तथा उस पर मंगल की दृष्टि हो तो जातक का एक से अधिक विवाह होता है तथा कई स्त्रियों से रोमांस चलता रहता है।

8. यदि शुक्र पांच या इससे अधिक रेखाओं से युक्त होकर लग्न अथवा दशम भाव में स्थित हो, पर वह वक्री, नीच राशिस्व अथवा सूर्य से ग्रस्त न हो तो उसको उत्तम वाहनों का सुख प्राप्त होता रहता है।

9. शुक्र जिस राशि में बैठा हो, उस राशि से बारहवीं राशि में(शुक्राष्टक वर्ग में) यदि पांच या इससे अधिक रेखाएं हों, तो जातक निश्चय ही धनवान एवं यशस्वी होता है।

10. यदि शुक्र मंगल की राशियां अर्थात् मेष या वृश्चिक में हो तथा पांच रेखाओं से ज्यादा शुक्र के पास हो तो जातक उत्तम कोटि के वाहन का अधिपति तथा ऐश्वर्य भोगी होता है।

शुक्र चार रेखाओं से युक्त होकर द्वादश भाव में हो तथा सूर्य से आगे हो तो जातक का विवाह सुन्दर, सुशील एवं शिक्षित लड़की से होता है।

11. यदि शुक्र आठ रेखाओं से युक्त होकर त्रिकोण में हो तो जातक का विवाह मनोवांछित लड़की से होता है।

12. कन्या का विवाह उस महीने में किया जाना चाहिए, जिस राशि में (राशि से महीना ज्ञात किया जा सकता है-देखें गुरु अष्टक वर्ग) शुक्राष्टक वर्ग में सबसे अधिक रेखाएं हों।

13. यदि शुक्र चन्द्रमा के साथ बैठा हो तथा पांच से अधिक रेखाओं से युक्त हो तो जातक पूर्ण धनी, सुखी एवं समृद्ध होता है।

14. चन्द्रमा से शुक्र छठे या आठवें स्थान पर स्थित हो तथा चार से अधिक रेखाओं से युक्त हो तो जातक का विवाह निर्धन कन्या से होता है।

15. यदि शुक्र चन्द्रमा तथा लग्न दोनों से ही छठे या आठवें या ग्यारहवें स्थान पर स्थित हो तथा शुक्र तीन या इससे कम रेखाओं से युक्त हो तो जातक अपनी पत्नी से घृणा करता है।

16. यदि सप्तम भाव में मंगल हो तथा सप्तमेष मंगल या शनि की राशि में स्थित हो, एवं शुक्र दो या तीन रेखाओं से युक्त हो तो जातक की पत्नी का चरित्र संदिग्ध होता हैं।

17. यदि शुक्र चार रेखाओं से युक्त हो तथा शुक्र होकर सप्तम भाव में हो तो जातक की पत्नी की वजह से अपमान होता है।

18. शुक्राष्टक वर्ग में जिस राशि में सबसे कम रेखा हो, उस राशि की दिशा में पत्नी का पलंग न बिछा हो, अर्थात यदि पूर्व दिशा हो तो पंलग उत्तर-दक्षिण बिछाया जाना चाहिए। राशियों की दिशाएं निम्न हैं-

पूर्व-मेष, सिंह, धनु

दक्षिण-वृष, कन्या, मकर

पश्चिम-मिथुन, तुला, कुम्भ

उत्तर-कर्क, वृश्चिक, मीन

19. मंगल स्वाराशिस्थ हो, एंव शुक्र पांच या इससे अधिक रेखाएं लेकर मेष या वृश्चिक राशि में स्थ्ति हो तो जातक का गृहस्थ जीवन सुखमय नही रहता।

20. उस पुरूष का सम्बन्ध हल्के स्तर की पर स्त्रियों के साथ रहता है, जिसका शुक्र सप्तम भाव में दो रेखाओं से युक्त हो, एंव सप्तमेष अस्त हो।

21. यदि शुक्र शून्य एक या दो रेखाओं से युक्त हो तथा उस पर मंगल शनि की दृष्टिहो तो जातक को अन्धी पत्नी मिलती है या विवाह बाद थोडे ही वर्षों में पत्नी अन्धी हो जाती है।

22. जिस राशि में सबसे कम रेखाएं हों उस राशि पर सूर्य भ्रमण कर रहा हो, तब यदि जातक का विवाह होता है, तो

जातक का गृहस्थ जीवन दुःखमय ही कहा जाएगा।

23. जिस राशि में सबसे अधिक रेखाएं होती है (शुक्राष्टक वर्ग में) उस राशि की दिशा में यदि जातक का विवाह होता है, तो वह जीवन में सुखी, सफल एंव शुद्ध गृहस्थ भोगी होता है।

24. शुक्राष्टक वर्ग में जिस राशि में सबसे कम रेखाएं हों, उस राशि की दिशा में यदि जातक का विवाह होता है तो जातक का सुगृहस्थ-जीवन असफल ही रहेगा।

25. शुक्र जिस राशि में स्थित हों उस राशि से सप्तम राशि में जितनी रेखाएं हो उनमे शुक्राष्टक वर्ग के योगंपिण्ड से गुणा कर उसमें 27 का भाग दें, जो शेष बचे उन्हें अश्विनी से गिने, जो नक्षत्र आवे, उस नक्षत्र पर जब गुरु गोचरवश भ्रमण करेगा तब जातक का विवाह समझना चाहिए।

उदाहरण कुण्डली में शुक्र वृष राशि में है। इससे सातवीं राशि वृश्चिक हुई, जिसमें चार रेखाएं हैं तथा योगपिंड 134 है। अतः 134 × 4 = 536 ÷ 26 = 20 शेष 16 अश्विनी से 19वां नक्षत्र विशाखा है, अतः जब तक हस्त नक्षत्र पर गुरु था, तभी जातक का विवाह हुआ था।

26. यदि शुक्र से सातवीं राशि में जितनी रेखाएं हों उससे शुक्र के योगपिंड से गुणा कर 12 का भाग दें, जो शेष बचे, उसे मेष से गिनें, जो राशि हो उस राशि पर जब गूरू भ्रमण करेगा, तब जातक का विवाह समझना चाहिए।

27. विवाह मास ज्ञात करने के लिये शुक्राष्टक वर्ग में शुक्र से सातवीं राशि तथा सूर्य से सातवीं राशि में जितनी रेखाएं हों उनसे शुक्र के योग पिण्ड से गुणाकर 12 का भाग दो, जो शेष बचे उस राशि पर जब सूर्य भ्रमण करेगा, तब विवाह समय समझ जाना चाहिये।

पूर्व उदाहरण कुण्डली में सूर्य मेष राशि तथा शुक्र वृष राशि में है, अतः मेष से सप्तम राशि तुला में 3 रेखाएं एवं वर्ष से सप्तम राशि वृश्चिक में 4 रेखाएं हैं। योग 7 रेखाएं हुई। इनसे शुक्र पिण्ड 134 का गुणा कर 12 का भाग दिया। 134 × 7 =

938 ÷ 12 = 78 शेष 2 यानी तुला राशि हुई अर्थात् जब तुला राशि में सूर्य भ्रमण(23 सितम्बर से 22 अक्टूबर तक) करेगा, तब्र जातक का विवाह समय समझा जाना चाहिए।

28. शुक्राष्टक वर्ग में गुरु से सप्तम राशि में, जितनी रेखाएं हों उससे शुक्र के योगपिंड से गुणा कर 27 का भाग दो, जो शेष बचे, उसे अश्विनी नक्षत्र से गिनो, उस नक्षत्र पर जब शनि गोचर करेगा, तब पत्नी(या पति) की मृत्यु समझनी चाहिये।

29. यदि शुक्र आठ रेखाओं से युक्त होकर लग्न से बैठा हो तो जातक को जवाहरात उद्योग से विशेष लाभ होता है।

शनि अष्टक वर्ग

शनि का अध्ययन निम्न रेखाओं के अनुसार किया जाना चाहिये-

0 रेखा-दरिद्र जीवन।

1 रेखा-धन हानि एवं सम्मान न्यूनता।

2 रेखा-निम्न स्वास्थ्य, आलस्य एवं अकर्मण्यता।

3 रेखा-पुत्र की तरफ से चिन्ता, पत्नी की तरफ से परेशानी।

4 रेखा-उन्नति, पर उन्नति दूसरों के सहयोग से पराश्रित।

5 रेखा-धनवान, कुटुम्ब सुख।

6 रेखा-शिकारी, विरोधी पार्टी का नेता, डाकू सरदार।

7 रेखा-कूटनीतिज्ञ, राजदूत, पशुओं को रखने वाला।

8 रेखा-लखपति, एस0 पी0 या मन्त्री।

1. शनि केन्द्र में हो तथा दो या तीन रेखाओं से युक्त हो तो जातक अल्पायु होता है।

2. यदि शनि लग्न में तीन रेखाओं से न्यून हो तो जातक लगभग कंगाल-सा जीवन व्यतीत करता है।

3. शनि अष्टक वर्ग में जिस राशि में शून्य रेखा हो, उस राशि पर जब शनि गोचर करे तो लखपति भी कंगाल हो जाता

है, और उसकी मृत्यु हो जाती है।

सन् 1967 की घटना है। शक्कर के एक बहुत बड़े व्यापारी मुझे जन्मपत्रिका दिखाने आये, मेष राशि में उनके(शनि अष्टक वर्ग में) शून्य रेखा थी, मैंने उन्हें यही कहा कि 68 का उत्तरार्द्ध एवं 69 के पूर्वार्द्ध(शायद मैंने उन्हें कोई दिनांक भी बतलाई थी) में आप जुए या व्यापार में लगभग सारी पूंजी खो बैठेंगे।

उन्होंने कहा पण्डित जी! जीवन के 46 वर्षों तक अत्यन्त परिश्रमपूर्वक जो यह पूंजी मैंने जोड़ी है वह गवाऊंगा, ऐसा होगा नहीं, फिर भी आपके कथन को स्मरण रखूंगा।

दुर्भाग्यवश जून, 69 तक उस सज्जन ने दिवाला निकाला एवं आत्महत्या की।

इसी प्रकार की और भी कई घटनाएं स्मरण हो रही हैं, जबकि ऐसी स्थिति आने पर लखपति करोड़पति को फुटपाथ पर खड़े होते देखा है।

स्टालिन की जन्मकुण्डली के शनि अष्टक वर्ग में वृश्चिक राशि में कोई रेखा नहीं थी, जब शनि वृश्चिक राशि पर गोचरवश भ्रमण करने आया, तब उसे जेल जाना पड़ा।

देश के एक करोड़पति को भी जेल के सीखचों के पीछे बन्द होना पड़ा, लगभग ऐसी ही स्थिति उनके शनि अष्टक वर्ग में थी।

4. लग्न में शनि चार-पांच, छः या सात रेखाओं से युक्त हो तो जातक जन्म से ही गरीब एवं दुःखी जीवन व्यतीत करता है, जातक पारिजात ने भी इस मत की पुष्टि की है-

षट् पंच रेख सहितै तनुगै बलाढये।
जन्मादि दुःख बहुलं धन नाश मेति।।

5. यदि पांच रेखाओं में युक्त शनि लग्न में हो तो जातक को विविध कष्टों का सामनस करना पड़ता है।

6. छटे, आठवें या बारहवें को छोडकर कहीं पर भी शनि यदि 8 रेखाओं से युक्त होकर स्थित हो तो जातक व्यापार में

अतुलनीय धन कमाता है।

7. यदि पंचम भाग में शनि पाचं रेखाओं से युक्त होकर स्थित हो तो जातक गरीब एंव परेशानियों से घिरा रहता है।

यदि शनि तुला, मकर या कुम्भ राशि का न हो तथा पांच या इससे अधिक रेखाएं लेकर चतुर्थ भाव में बैठा हो तो जातक की वृद्धावस्था अत्यन्त दुःखमय व्यतीत होती है।

बम्बई के करोडपति का समृद्ध जीवन मैने देखा था। उसकी जन्मकुण्डली में शनि कर्क राशि का चतुर्थ भाव में दः रेखाओं से युक्त था, बीस से अधिक बार उन्होंने विदेश यात्रा की होगी और हॉलीवुड की अप्सराओं के साथ रंग-रेलियां। कितना आता है, और कितना खर्च रहा है, इसका भान तक भी उन्हें न था, पर वृद्धावस्था भी मेरी साक्षी है। जब उनकी मृत्यु हुई उनकी जेब में कफन तक के पैसे नहीं निकले, अस्तु।

9. यदि शनि स्वराशि का होकर चार या पाचं रेखाओं से युक्त त्रिकोण में बैठे तसे उसे एकाधिकार स्त्रोतों से धन प्राप्त हो।

10.शनि की श्रेष्ठ स्थितियां हैं, तीसरा, छठा, नवां, या ग्यारहवां भाव। मेष लग्न हो तथा श्सनि चार रेखाओं से युक्त होकर उपयुक्त भाव में से किसी भी स्थित हो तो जातक लखपति, विख्यात एवं कीर्तिवान होता है।

11. यदि शनि अस्त वक्री या नीच राशिगत हो तथा तीन-चार रेखाओं ो युक्त हो तो जातक अत्यन्न विपन्नावस्था में जीवन व्यतीत करता है। यदि शनि लग्न भाव या द्वादश भाव में हो।

12. यदि अष्टमेष शनि से तथा लग्न सम्बन्धित हो या परस्पर दुष्ट हो या एक- दूसरे की राशि में हो तथा शनि चार से अधिक रेखाओं से युक्त हो तो जातक भिक्षुक बन कर जीवन यापन करता है।

13. शनि से अष्टम भाग का जो स्वामी हो, वह सौम्य ग्रह हो और अपने अष्टक वर्ग में पांच से अधिक रेखाओं से युक्त

हो तो जातक का जीवन सुखमय होता है।

14. चन्द्र शनि की युक्ति हो, शनि लग्न में हो पर स्वराशिस्थ या उच्च राशिस्थ न हो एवं पांच रेखाओं से न्यून हो तो जीवन में जातक को द्रव्याभाव नहीं रहता।

15. यदि शनि राहु साथ में हो एवं शनि चार रेखाओं से ज्यादा समृद्ध हो तो जातक को मिर्गी या फिट्स या दौरे आते रहते है।

16. यदि शनि अपने अष्टवर्ग में एक या दो रेखाओं से ही युक्त हो तो जातक की मृत्यु जन्मस्थान से दूर होती है।

17. त्रिकोण में शनि सात रेखाओं से युक्त हो तो जातक धनाढ्य होता है।

18. शनि प्रबल होकर (यानि चार रेखाओं से ज्यादा का स्वामी होकर) जिस भाव में भी बैठेगा, इस भाव की कार्यसिद्दि में विलम्ब देगा, उदाहरणार्थ सप्तम में बैठेगा, तो विवाह देरी से होगा। पंचम भाव में बैठगा तो संतान लाभ देरी से होगा।

19. यदि शनि का सम्बन्ध दशमेश से हो या दशमभाव में हो तथा तीन रेखाओं से युक्त हो तो जातक जीवन में कई बार विदेश यात्राएं करता है।

20. यदि दशमभाव का स्वामी त्रिकोण में बलवान होकर बैठे, तथा उस पर शनि की दृष्टि न हो तो जातक विश्वविख्यात कीर्तिवाला होता है।

21. लग्न से शनि जहां स्थित है, उस बिच में जितनी रेखाएं है, उनका योग करने पर जो योगफल आवे, उस वर्ग में घोर कष्ट उठाना पडता है।

उदाहरण जन्मकुण्डली में मिथुन लग्न है तथा शनि कुम्भ राशि में है। मेष से कुम्भ के बीच (शनि अष्टक वर्ग में) 35 रेखाएं है। जातक को पैतीसवें वर्ष में घोर कष्ट उठाना पडा।

22.. शनि जिस राशि में है, उस राशि से लग्न तक के बिच जितनी रेखा हो, उतने वर्षो में भी कष्ट सहना।

उदाहरण जन्मकुण्डली में शनि कुम्भ राशि में है, तथा लग्न

मिथुन है। कुम्भ से मिथुन तक 17 रेखाएं हैं। जातक को जीवन के सत्रहवें वर्ष में भी भयंकर कष्ट उठाना पड़ा था।

23. उपर्युक्त इन दोनों के योग वर्षो 35 + 17 = 52 में भी (यानी जीवन के बावनवें वर्ष में भी) जातक को घोर कष्ट उठाना पड़ता है।

यदि इन तीन वर्षो में (17, 35 और 52) मारक दशा चल रही हो तो जातक की निश्चय ही मृत्यु हो जाती है।

24. शनि से अष्टम स्थान में जितनी रेखाएं हों, उससे शनि के योगपिंड से गुणा करो व 27 का भाग दो, जो शेष बचे, उसे अश्विनी से गिनो। जब इस नक्षत्र पर शनि गोचर करेगा, तब उस जातक की मृत्यु समझनी चाहिये। उस नक्षत्र से दसवां तथा उन्नीसवां नक्षत्र भी घातक होता है।

उदाहरण जन्मकुण्डली में शनि कुम्भ से आठवीं राशि कन्या है जिसकी रेखा संख्या 4 को शनि के योगपिंड 180 से गुणा कर 27 का भाग दिया 180 × 4 = 720 ÷ 27 भागफल 26 तथा शेष 18 रहें। अश्विनी से 12 नक्षत्र ज्येष्ठा है। अतः जब पूर्वाफाल्गुणी पर शनि गोचरवश भ्रमण करेगा, तब मृत्यु या मृत्यु सम कष्ट समझना चाहिये।

ज्येष्टा से दसवां नक्षत्र खेती तथा उन्नीसवां नक्षत्र आश्लेषा पर भी शनि होगा, तब भी मृत्यु सम कष्ट रहेगा।

इसी प्रकार शनि का अध्ययन सही परिणामों पर पहुंचने में सक्षम होता हैं।

सर्वाष्टक वर्ग

ग्रहों का अध्ययन जितना आवश्यक है, सर्वाष्टक वर्ग का अध्ययन भी उतना ही आवश्यक है, जैसाकि मैं पीछे कह चुका हूं, फलादेश के लिए अष्टक वर्ग पद्धति प्रामाणिक ही नहीं, पुर्ण विश्वसनीय भी हैं।

पीछे मैं सर्वाष्टक वर्ग या भिन्नाष्टक वर्ग भी समझा आया हूं।

1. जो भाव बीस रेखाओं से युक्त होता है, वह अत्यन्त कमजोर एवं दुर्बल होता है, तथा उस भाव से सम्बन्धित जो फल है, उसमें कमी ही समझनी चाहिये।

उदाहरणार्थ पंचम भाव यादि बीस या इससे कम रेखाओं से युक्त हो तो पुत्र सम्बन्धी बाधा या कष्ट समझना चाहिये।

2. जिस भाव में 25 रेखाएं हों, वह भाव न तो शभ कहलाता है, और न ही अशुभ, उसे सम स्थिति में रख सकते हैं।

3. जो भाव तीस रेखाओं से युक्त हो उसे श्रेष्ठ भाव कहा जा सकता हैं तथा उस भाव से सम्बन्धित फल की भी श्रेष्ठता समझी जानी चाहिये।

4. यदि कोई ग्रह स्वराशि या उच्च राशि का होकर केन्द्र में भी हो तथा कारक ग्रह पूर्ण फल देने में समर्थ नहीं हो सकता।

5. मेरे अनुभव में प्रत्येक भाव निम्न रेखाओं से युक्त हो, यदि इस स्तर से कम रेखाएं स्तर से ज्यादा हों तो वह भाव समृद्ध समझा जाना चाहिए–

लग्न	29 रेखाएं
दूसरा भाव	26 रेखाएं
तीसरा "	33 "
चौथा "	28 "
पांचवा "	30 "
छठा "	38 "
सातवां "	23 "
आठवां "	28 "
नवां "	33 "
दसवां "	40 "
ग्यारहवां "	58 "
बारहवां "	20 "
योग	386 रेखाएं

मेरी दृष्टि में ऐसी बहुत ही कम जन्मपत्रिकाएं आई है, जिसके ग्यारहवें भाव में 58 रेखाएं हों, तथा ध्येय भाव में 20 हो, पर यह अधिक शुभ है, कि बारहवें भाव में जितने रेखाएं ग्यारहवें भाव में हो।

6. मानसागरी के अनुसार प्रत्येक भाव में रेखा फल निम्नरूपेण समझा जाना चाहिये–

रेखा	फल
14	मरणप्रद
15	कष्टप्रद
16	शरीर पीड़ा, रोग वृद्धि
17	दुःखप्रद
18	धनक्षय
19	बन्धुकलह
20	अपव्यय
21	रोग
22	मतिभ्रम
23	अर्थ हानि, दुःख
24	आकस्मिक् व्यय
25	सामान्य
26	क्लेश
27	सम–न शुभ न अशुभ
28	धनागम से दुःखी
29	पूजनीय
30	सम्मान वृद्धि
31	दिनोंदिन सुख वृद्धि
32–35	ऐश्वर्य
36–40	पूर्ण भौतिक सुख
41–45	परमोच्च सुख

उदाहरणार्थ यदि पंचम भाव में 30 रेखाएं हों तो समझना चाहिये कि सन्तान से उसकी सम्मान-वृद्धि होगी अर्थात् सन्तान की उन्नति से ही उसे यश मिलेगा।

7. जन्मकुण्डली के चार भाव महत्वपूर्ण हैं-लग्न, नवम, दशम तथा एकादश भाव। यदि इनमें से प्रत्येक भाव चौबीस रेखाओं से न्यून हो तो वह जातक जीवन भर दरिद्र बना रहता है।

8. छठा, आठवां, बारहवां तथा दूसरा भाव इन चारों की संयुक्त रेखा संख्या से लग्न, तीसरा भाव, नवम भाव तथा एकादश भाव की संयुक्त रेखा संख्या ज्यादा हो तो वह व्यक्ति भाग्यवान होता है तथा यदि रेखा संख्या कम हो तो वह दरिद्र जीवन व्यतीत करता है।

9. दशम भाव से ग्यारहवें भाव में रेखा ज्यादा हो, ग्यारहवें से बारहवें में रेखा कम हों तथा बारहवें से लग्न में रेखा ज्यादा हो तो जातक सुखी, सफल एवं समृद्ध जीवन व्यतीत करता है।

10. लग्न में जितनी रेखाएं हों, उतने वर्ष जीवन के व्यतीत होने पर वह व्यक्ति धन, मान, यश, प्रतिष्ठा एवं सम्मान का भागी होता है।

11. जिस राशि में चन्द्र हो वह राशि, सूर्य स्थित राशि तथा लग्न स्थित राशि, इन तीनों ही राशियों में यदि प्रत्येक में तीस से अधिक रेखाएं हों, तो जातक पराक्रमी एवं यशस्वी हो।

12. दूसरा, नवां, दसवां, तथा ग्यारहवां इन चारों ही भावों में तीस से अधिक रेखाएं(प्रत्येक भाव में) हों तो जातक विख्यात धनवान होता है।

13. चतुर्थ भाव में तीस से अधिक रेखाएं हो, तथा चतुर्थेश जिस भाव में बैठा है, वह भाव भी तीस रेखाओं से अधिक सम्पन्न हो तो जातक को ग्रह एवं वाहन का पूर्ण सुख प्राप्त होता है।

14. द्वादश भाव का स्वामी शनि की राशि में हो, और लग्नेश निर्बल हो, तो लग्न में जितनी रेखाएं हों, उतने ही वर्ष

जातक की आयु समझनी चाहिए।

15. यदि तृतीय भाव पच्चीस से रेखाओं के बीच हों, तथा तीसरे भाव पर शनि की दृष्टि हो तो जातक को पग-पग पर अपमान का सामना करना पड़ता है।

16. किस आयु में पूर्ण सुख, मिलेगा, इसके लिए बारह राशियों के तीन भाग करें-

(1) मीन से मिथुन तक

(2) कर्क से तुला तक

(3) वृश्चिक से कुंभ तक

इन राशियों की रेखाओं का योग करके रख लें। प्रथम भाग बाल्यावस्था, दूसरा भाग यौवनावस्था तथा तीसरा भाग वृद्धावस्था का सूचक है।

जिस भाग में सर्वाधिक रेखाएं हो वह भाग ज्यादा सुखी व्यतीत होता है-

उदाहरण जन्मकुण्डली में-

(1) मीन से मिथुन तक रेखाएं-बाल्यावस्था-

33 + 36 + 24 + 34 = 127

(2) कर्क सु तुला तक रेखाएं-यौवनावस्था-

33 + 35 + 42 + 24 = 134

(3) वृश्चिक से कुंभ तक रेखाएं-वृद्धावस्था-

30 + 28 + 32 + 35 = 125

अतः स्पष्ट हुआ कि बाल्यावस्था एवं वृद्धावस्था लगभग एक जैसी व्यतीत होगी, पर सर्वाधिक सुख यौवनावस्था में प्राप्त होगा।

यों जिस अवस्था में 128 तक रेखाएं हों, वह सामान्यतः सुखी अवस्था कही जानी चाहिए। यदि सीमा से कम रेखाएं हों तो उसकी अनुपात में न्यूनता समझी जानी चाहिए।

17. इसके साथ ही एक दूसरा मत भी है कि लग्न से द्वादश भाव तक चार-चार राशियों के तीन विभाग करें, पर

अष्टम भाव तथा द्वादश भाव की रेखा संख्या नहीं गिनें।

जिस अवस्था में रेखाएं ज्यादा हों वह अवस्था श्रेष्ठ समझी जानी चाहिए।

पूर्व उदाहरण कुण्डली के अनुसार-

बाल्यावस्था-लग्न से चतुर्थ भाव तक

34 + 33 + 35 + 42 = 144

यौवनावस्था-पंचम से अष्टम भाव तक-

24 + 30 + 20 + 00 = 82

वृद्धावस्था-पंचम से अष्टम भाव तक-

35 + 33 + 36 + 00 = 104

अष्टम द्वादश भाव में रेखाएं होने पर भी शून्य लिखा जाता है। इस हिसाब से बाल्यावस्था श्रेष्ठतम रहेगी।

पर मेरे अनुभव में यह सही नहीं पाया गया है।

18. किस दिशा में भाग्योदय होगा-

इसके लिए राशियों की दिशा निम्न है-

पूर्व दिशा-मेष, सिह, धनु

दक्षिण दिशा-वृष कन्या, मकर

पश्चिम दिशा-मिथुन, तुला, कुंभ

उत्तर दिशा-कर्क, वृश्चिक, मीन

प्रत्येक राशि में जो रेखाएं हों, वे जोड ले। जिस दिशा में र्सावाधिक रेखाएं हों। उसी दिशा में व्यापार करने पर या जाने पर भाग्योदय होगा।

उदाहरण जन्मकुण्डदी के अनुसार-

पूर्व-36 + 35 + 28 = 99

दक्षिण-24 + 42 + 32 = 98

पश्चिम-34 + 24 + 35 = 93

उत्तर-33 + 30 + 33 = 96

अतः यह स्पष्ट है कि जातक का भाग्योदय पूर्व दिशा में होगा।

19.यदि लग्नेश चतुर्थ भाव में हो एंव चतुर्थ लग्न भाव में हो तथा दोनों ही भाव तीस रेखाओं से सम्पन्न हो तो जातक एम0 पी0 या मन्त्री बनता है।

20. लग्न में चतुर्थ भाव में एवं एकादश भाव में प्रत्येक में यदि तीस से अधिक रेखाएं हो तो जातक विख्यात ध्नी एंव कीर्तिवान होता है।

21.चौथे भाव एंव नवम भाव में यदि 25से 30तक रेखा संख्या हो तो जातक का भग्योदय 28 वें वर्ष के बाद होता है।

22. यदि लग्नेश चतुर्थ भाव हो, और चतुर्थेश लग्न में हो, तथा लग्न भाव एंव चतुर्थ भाव दोनो ही तीस रेखाओं से अधिक सम्पन्न हो तो जातक आकि दृष्टि से सम्पन्न एंव सुखी रहता है।

23. मंगल स्वराशिस्थ हो, सूर्य लग्न में, तथा गुरु चतुर्थ भाव में चीास रेखाओं से अधिक से युक्त हो तो जातक को लखपति समझना चाहिए।

24. लग्न भाव जितना बली होगा व्यक्ति उतना ही ऊंचा उठ सकेगा।

25. लग्न से शनि स्थित राशि तक जितनी रेखाएं हों, उसे जोडों, तथा शनि स्थित राशि से लग्न तक की रेखाएं जोडो। इसी प्रकार लग्न से मंगल तक, एंव मंगल से लग्न तक जोडो, तथा इसी प्रकार लग्न से राहू तक जोडो। योग को सात से गुणा करो तथा 27 का भाग दो।

भागफल यह स्पष्ट करेगा कि किस वर्ष में परेशानी बाधा, झंझट आयेगा, तथा जो शेष बचे उसे अश्विनी से गिनो, शेष संख्या तक के नक्षत्र पर जब वह ग्रह भ्रमण करेगा, तब विशेष कष्ट समझना चाहिए–

उदाहरण कुण्डली में

1. शनि शुभ राशि में है, तथा लग्न मिथुन है। मिथुन से कुंभ तक की रेखायें जोडीं–

34+33+35+42+24+30+28+32+35=293 × 7=2051 ÷ 27=

भागफल 75 शेष 26।

(1) 75 वें वर्ष में (यदि आयु हुई तो) विशेष कष्ट होगा।

(2)26 वां नक्षत्र उत्तर भाद्रपद है। अतः जब उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र पर शनि भ्रमण करेगा, तब विशेष कष्ट रहेगा।

2. शनि राशि कुंभ से लग्न राशि मिथुन तक की रेखाओं का योग-

35+33+36+24+34=162×7=1134 ÷ 27 भागफल 42 शेष 0 अर्थात खेती।

अतः जीवन के 42 वें वर्ष में विशेष कष्ट भोगना पड़ेगा, एवं जब खेती नक्षत्र पर शनि भ्रमण करेगा, तब भी विशेष परेशनी भोगनी होगी।

3. मंगल स्थित राशि से लग्न तक रेखाएं 42+24+30+28+32+35+33+36+24+34=318×7=2526 ÷ 27=भागफल 93 शेष 15 वां नक्षत्र (स्वाति)

लग्न से मंगल स्थित राशि तक

34+33+35+42=144×7=1008 ÷ 27 = भागफल 37 नक्षत्र 9 वां (आश्लेषा)

4. लग्न से राहु स्थित राशि मकर तक

34+33+35+42+24+30+28+32

=258×7=1806

1806 ÷ 27 भागफल 66

शेष नक्षत्र 24वां (शतभिषा)

राहु स्थित राशि मकर से लग्न तक

32+35+33+36+24+34=194

194×7=1385 ÷ 27=50 शेष

8वां नक्षत्र (पुण्य)

26. लग्न से गुरु तक एवं गुरु से लग्न तक की रेखओं का योग कर सात से गुणा कर 27 का भाग दो, भागफल

भाग्योदय वर्ष एवं शेष तुल्य नक्षत्र भाग्योदय समय होगा।

लग्न से गुरु तक रेखा योग-

34+33+35+42+24=168

गुरु स्थित राशि से लग्न तक की रेखाओं का योग-

24+30+28+32+35+33+36+24+34=276

168×7=1176 ÷ 27=43

शेष 15त्रस्वाति नक्षत्र

जीवन के 43 वें वर्ष में श्रेष्ठ भाग्योन्नति होगी, तथा जब भी स्वाति नक्षत्र पर गुरु होगा, तब श्रेष्ठ उन्नति का समय होगा-

276×7=1932 ÷ 27=71

शेष 15 वां नक्षत्र स्वाति नक्षत्र

जीवन के 71 वें वर्ष में भी भाग्योन्नति होगी तथा स्वाति नक्षत्र पर गुरु भ्रमण उन्नति का समय होगा।

27. लग्न, चतुर्थ एवं एकादश भाव तभी पुष्ट कहे जाते हैं, जब कि वे तीस रेखाओं से समृद्ध हो।

28. चतुर्थ भाव एवं नवम भाव में यदि तीस से बत्तीस रेखाएं हो तो जीवन में 28 वें वर्ष में भाग्योदय होता है।

29. सूर्य मेष राशि में हो, एवं गुरु कर्क राशि में चालीस से अधिक रेखाओं से युक्त हो तो जातक उच्च वाहनाधिपति एवं लखपति होता है।

30. लग्न चालीस रेखा तक का हो, तथा मंगल गुरु शुक्र उच्च राशि में हो तो जातक करोड़पति होता है।

आयु निर्णय

अष्टक वर्ग से जो आयु निर्णय होता है। वह पूर्णतः प्रामाणिक एवं स्पष्ट है, इससे प्रत्येक वर्ग की आयु ज्ञात की जाती है-

प्रत्येक ग्रह और लग्न के अष्टक वर्ग में पृथक.पृथक रेखाएं देखी जाती है, तथा रेखाओं के अनुसार आयु निर्णय होता

है।

जिस राशि में शून्य रेखा हो उसके दो दिन-

0 रेखा	त्र	2 दिन
1 रेखा	त्र	डेढ़ दिन
2 रेखा	त्र	1 दिन
3 रेखा	त्र	आधा दिन
4 रेखा	त्र	साढ़े सात दिन
5 रेखा	त्र	2 वर्ष
6 रेखा	त्र	4 वर्ष
7 रेखा	त्र	6 वर्ष
8 रेखा	त्र	8 वर्ष

इस प्रकार आयु का योग कर आधा कर देने से उस वर्ग की आयु स्पष्ट हो जाती है, इस प्रकार सात ग्रह एवं लग्न की कुल आयु जातक की आयु होती है।

उदाहरण जन्मकुण्डली पर उपर्युक्त नियम धटित करें-

सूर्याष्टक वर्ग

राशि	रेखा संख्या	आयु स्पष्ट
मेष	5	2 वर्ष
वृष	4	7 ।। दिन
मिथुन	3	आधा दिन
कर्क	2	1 दिन
सिंह	5	2 वर्ष
कन्या	5	2 वर्ष
तुला	4	7 ।। दिन
वृश्चिक	4	7 ।। दिन
धनु	4	7 ।। दिन
मकर	3	आधा दिन
कुंभ	4	7 ।। दिन

मीन	5	2 वर्ष

योग 8 वर्ष, 1 मास, 9 दिन 30 घटी

इसके आधे कियेत्र4 वर्ष, 0 मास, 19 दिन, 45 घटी

अतःसूर्याष्टक वर्ग ने आयु दी-

चन्द्राष्टक वर्ग

राशि	रेखा	आयु
		वर्ष मास दिन घटी
मेष	5	2-0-0-0
वृष	3	0-0-0-30
मिथुन	4	0-0-7-30
कर्क	5	2-0-0-0
सिंह	5	2-0-0-0
कन्या	4	0-0-7-30
तुला	4	0-0-7-30
वृश्चिक	6	4-0-0-0
धनु	1	0-0-7-30
मकर	6	4-0-0-0
कुंभ	4	0-0-7-30
मीन	2	0-0-1-0
	योग	14-1-9-00
	आधा किया	7-0-11-30

स्पष्ट आयु 7वर्ष, 0 मास, 19 दिन, 30 घटी

भौमाष्टक वर्ग

राशि	रेखा	आयु
मेष	4	0-0-7-30
वृष	1	0-0-1-30
मिथुन	4	0-0-7-30

कर्क	2	0-0-1-0
सिंह	5	2-0-0-0
कन्या	6	4-0-0-0
तुला	3	0-0-0-30
वृश्चिक	2	0-0-1-0
धनु	3	0-0-0-30
मक़र	2	0-0-1-00
कुंभ	3	0-0-0-30
मीन	4	0-0-7-30
	योग	6-0-28-30
	आधा किया	3-0-14-15

स्पष्ट आयु-तीन वर्ष, 0 मास, 14 दिन, 15 घटी

बुधाष्टक वर्ग

राशि	रेखा	आयु
मेष	4	0-0-7-30
वृष	4	0-0-7-30
मिथुन	5	2-0-0-0
कर्क	3	0-0-0-30
सिंह	6	4-0-0-0
कन्या	8	8-0-0-0
तुला	2	0-0-1-0
वृश्चिक	2	0-0-1-0
धनु	6	4-0-0-0
मकर	3	0-0-0-300
कुंभ	4	0-0-7-30
मीन	7	6-0-0-0
	योग	24-0-25-30

आधा किया	12-0-12-45

स्पष्ट आयु 12 वर्ष, 0 मास, 12 दिन, 45 घटी,

गुरु अष्टक वर्ग

राशि	रेखा	आयु
मेष	6	4-0-0-0
वृष	4	0-0-7-30
मिथुन	5	2-0-0-0
कर्क	7	6-0-0-0
सिंह	2	0-0-1-0
कन्या	5	2-0-0-0
तुला	5	2-0-0-0
वृश्चिक	3	0-0-0-30
धनु	6	4-0-0-0
मकर	5	2-0-0-0
कुंभ	4	0-0-7-30
मीन	4	0-0-7-30
	योग	22-0-24-00
	आधा किया	11-0-12-00

स्पष्ट आयु 11 वर्ष, 0 मास, 12 दिन, 00 घटी

शुक्राष्टक वर्ग

राशि	रेखा	आयु
मेष	2	0-0-1-0
वृष	4	0-0-7-30
मिथुन	6	4-0-0-0
कर्क	5	2-0-0-0
सिंह	5	2-0-0-0
कन्या	5	2-0-0-0

तुला	3	0-0-0-30
वृश्चिक	4	0-0-7-30
धनु	4	0-0-7-30
मकर	4	0-0-7-30
कुंभ	3	6-0-0-0
मीन	3	0-0-0-30
	योग	16-1-2-00
	आधा किया	8-0-16-00

स्पष्ट आयु 8 वर्ष, 0 मास, 19 दिन, 00 घटी

शनि अष्टक वर्ग

राशि	रेखा	आयु
मेष	5	2-0-0-0
वृष	1	0-0-1-30
मिथुन	3	0-0-0-30
कर्क	3	0-0-0-30
सिंह	3	0-0-0-30
कन्या	4	0-0-7-30
तुला	2	0-0-1-0
वृश्चिक	4	0-0-7-30
धनु	2	0-0-1-0
मकर	4	0-7-0-30
कुंभ	4	0-0-7-30
मीन	4	0-0-7-30
	योग	2-1-5-30
	आधा किया	1-0-17-45

स्पष्ट आयु 1 वर्ष, 0 मास, 17 दिन, 45 घटी

लग्न अष्टक वर्ग

राशि	रेखा	आयु
मेष	5	2-0-0-0
वृष	3	0-0-0-30
मिथुन	4	0-0-7-30
कर्क	6	4-0-0-0
सिंह	4	0-0-7-30
कन्या	5	2-0-0-0
तुला	1	0-0-1-30
वृश्चिक	5	2-0-0-0
धनु	2	0-0-0-0
मकर	5	2-0-0-0
कुंभ	5	0-0-0-0
मीन	4	0-0-7-0
	योग	14-0-26-30
	आधा किया	7-0-13-15

स्पष्ट आयु 7 वर्ष, 0 मास, 10 दिन, 15 घटी

अब जो आयु स्पष्ट हुई हैं, उन्हं एकत्र कर योग करने से पूर्णायु स्पष्ट होती है। उदाहरण जन्मकुण्डली के अनुसार जातक की आयु निम्न प्रकारेण होगी–

	वर्ष मास दिन घटी पल
सूर्याष्टक आयु	4-0-19-45-0
चन्द्राष्टक आयु	7-0-19-30-0
भौमाष्टक आयु	3-0-14-15-0
बुधाष्टक आयु	12-0-12-45-0
गुरु अष्टक आयु	11-0-12-0-0
शुक्राष्टक आयु	8-0-16-0-0
शनि अष्टक आयु	1-0-19-45-0

लग्नाष्टक आयु	7-0-13-45-0
योग	53-4-05-15-00

इस प्रकार यह स्पष्ट हुआ की जातक की आयु 63 वर्ष, 4 मास, 05 दिन, 30 घटी होगी।

दशा विवेचन

अष्टक वर्ग दशा पद्धति अपने आप में एक विलक्षण पद्धति है, इसका दिशोत्तरी दशा या अष्टोत्तरी दशा से भी कोई समबन्ध नहीं।

विधि

अष्टक वर्ग दशा निकालने के लिए ग्रह के अष्टक वर्ग के योगण्डि को 7 से गुणा कर 27 से भाग दीजिए, जो लब्धि होगी, वह वर्ष होगें। शेष को 12 से गुणा कर 27 का भाग देने से लब्धि मास तथा शेष को 30 से गुणा कर 27 से भाग देने से लब्धि दिन होंगे। आगे 60 से गुणा कर 27 का भाग देने से लब्धि घ्टी होगी।

पर वर्ष 27 से अधिक हो तो उसमे से 27 शेष लेकर जो बचें, वे उस दशा के वर्ष होंगे।

पूर्व उदाहरण कुण्डली का इस दृष्टि से अध्ययन करें-

सूर्याष्टक

सूर्याष्टक वर्ग के योगपिण्ड 144 है-

144

×7

27)1008(37

81

27)198(7

189

9

$$\begin{array}{r} \times 12 \\ 27\overline{)108}(4 \\ 108 \\ \hline \times \\ \hline \end{array}$$

= 37 वर्ष, 4 मास

पर चूंकि वर्ष 27 से ज्यादा है, अतः प्राप्त दशा में से 27 शेष किये-

37—4

27—0

10—4

अतः सूर्य महादशा 10 वर्ष, 4 महीने स्पष्ट हुई।

चन्द्राष्टक

योगपिंड 192×7=1344

1344÷27 लब्धि 43 वर्ष, शेष 21

21×12=252÷27=9 महीने, शेष 9

9×30=270÷27 = लब्धि 10 दिन

घटी निकाल लें।

चूकिं वर्ष 27 से अधिक हैं। अतः 49-27, शेष 22 वर्ष।

अतः चन्द्र महा दशा 22 वर्ष, 9 महीने, 10 दिन।

भौमाष्टक

योग पिड 129×7=903÷27=33 वर्ष, शेष 12

12×12=144÷27=5 महीने, शेष 9

9×30=270÷27=1 दिन

वर्ष 27 से अधिक त्र 33-27त्र 6 वर्ष

अतः भौम महादशा 6 वर्ष, 5 महीने, 10 दिन।

बुधाष्टक

योग पिड 223×7=1561

1561÷27=57 शेष 22

22×12=264÷27=9, शेष 21

21×30=630÷27=23 दिन, शेष 9

=57−27=30

=30 वर्ष, 9 महीने, 23 दिन।

गरू अष्टक

योगपिंड 125×7=1075

1075÷27=39, शेष 22.

22×12=264÷27=9 शेष 21

21×30=630÷27=23 शेष, 9 त्याज्य

=39−27=12 वर्ष

12 वर्ष, 9 महीने, 23 दिन।

शुक्राष्टक

योगपिंड 134×7=938

938÷27=34, शेष 20

20×12=240÷27=8 महीने, शेष 24

24×30=720÷27=26 शेष, 18 त्याज्य

=37−27=7

=7 वर्ष, 8 महीने, 26 दिन।

शन्याष्टक

योगपिंड 180×7=1260

1260÷27=46, शेष 18

18×12=216÷27=1 महीने, शेष 0

=46−27=19

19 वर्ष, 8 महीने।

इस प्रकार नौ ग्रहों के दशा वर्ष स्पष्ट होने के पश्चात्

दशापुष्ट की जाती है। दशापुष्ट करते समय नियम विचारणीय है-

दशापुष्ट नियम

1. यदि कोई ग्रह दूसरे ग्रह के साथ हो तो उसके दशा वर्षों को आधा कर देना चाहिए।

2. यदि कोई ग्रह शत्रु अस्त हो या नीच राशि में स्थित हो-तब भी उसके दशा वर्ष आधे हो जाते हैं।

3. यदि कोई ग्रह शत्रु राशि में हो तो उसके उशा समय में से एक तिहाई कम कर देना चाहिए।

4. यदि कोई ग्रह दृश्यों में हो अर्थात् 8,10,11 या 12 वें भाव में हो तब भी दशा समय में से एक तिहाई कम हो जाता है।

विशेष

1. यदि किसी ग्रह के साथ उपर्युक्त नियमों में से एक से अधिक नियम लागू होते हों तो वह नियम लागू करना चाहिए, जिससे ज्यादा-स-ज्यादा समय घटाया जा सकता सके।

2. यदि उपर्युक्त में से कोई नियम लागू नहीं होता तो दशा वर्ष वहीं रख देने चाहिए।

3. इस प्रकार जो आयु आवे, उसे 324 से गुणा कर 365 से भाग देने पर लब्धि वर्ष, मास, दिन उस ग्रह का दशा समय होगा।

अब हम पीछे जो दशा सभय स्पष्ट किया है, उस पर ये नियम लागू कर दशापुष्ट करें-

सूर्य

दशा समय 10 वर्ष,4 महीने।

चूंकि बुध के साथ है, अतः यहा नियम 1 लागू होगा, एतदर्थ दशा समय का आधा किया-

5 वर्ष, 2 महीने

5 वर्ष 2 महीने×324÷365

=4 वर्ष, 7 महीने, 1 दिन

सूर्य की दशा 4 वर्ष, 7 महीने, 1 दिन रहेगी।

चन्द्र

उदाहरण जण्मकुडदी में चन्द्र नीच राशि में है, अतः नियम संख्या 2 लागू होगा।

दशा अवधि 22 वर्ष, 9 महीने, 10 दिन आधे किये=11 वर्ष, 8 महीने 20 दिन,=11 वर्ष, 8 महीने 20 दिन×324÷365

इसी प्रकार मंगल,बुध,गरू,शुक्र एंव शनि के दशा वर्ष ज्ञात कर लेने चाहिए।

अब प्रश्न उठता है कि सबसे पहलो किस ग्रह की दशा होगी।

इसके लिए नियम यह है कि जिस ग्रह के ग्रहपिंड सर्वाधिक हों सबसे पहले उसी की दशा प्रारम्भ होगी।

यदि दो ग्रह के दशापिंड बराबर हों तो शीघ्र की दशा पहले होगी।

पूर्व उदाहरण कुण्डली के ग्रह पिंड इस प्रकार हैं-

सूर्य	37
चंद्र	60
मंगल	40
बुध	40
गुरु	8
शुक्र	8
शनि	69

इसमें शनि के सर्वाधिक ग्रहपिंड है। अतः जन्म से सर्वप्रथम शनि की अष्टक दशा, फिर चन्द्र की, फिर मंगल, सूर्य, शुक्र एवं गुरु की दशा रहेगी।

जब सभी ग्रहों की दशा भुगत ली जाती है, तब पुनः यही क्रम शनि, चन्द्र, बुध आदि प्रारम्भ होगी।

दशाफल ज्ञात करने के लिए ग्रह की रेखाओं के आधार पर फलादेश स्पष्ट करना चाहिए।

दूसरी विधि

कुछ विद्वानों के अनुसार विंशोत्तरी दशा को ही इस क्षेत्र में भी आधार बनाना चाहिए तथा ग्रहों का क्रम 'पृथ्वी से दूरी' के सिद्धांत पर रखना चाहिए।

इस पद्धति के अनुसार ग्रहों का क्रम इस प्रकार होता है-

1. शनि
2. गुरु
3. मंगल
4. सूर्य
5. शुक्र
6. बुध
7. चन्द्र
8. लग्न

महादशा के वर्षो को बराबर आठ भागों में बांट लेना चाहिए।

उदाहरणार्थ शुक्र महादशा 20 वर्षो की होती है-इसके आठ भाग किए, तो प्रत्येक भाग 2 वर्ष, 6 महीने का हुआ।

उदाहरणार्थ शुक्र महादशा 11-1-75 से शुरू होगी। तो अन्तर दशा क्रम इस प्रकार होगा-

शुक्र महादशा (11-1-75 से 11-1-95 तक)

1. शनि की अन्तर दशा	11-1-75
	6-2
2. गुरु की अन्तर दशा	11-7-77
	6-2
3. मंगल की अन्तर दशा	11-1-80
	6-2

4. सूर्य की अन्तर दशा	11–7–82
	6–2
5. शुक्र की अन्तर दशा	11–1–85
	6–2
6. बुध की अन्तर दशा	11–7–87
	6–2
7. चंद्र की अन्तर दशा	11–1–90
	6–2
	11–7–92
	6–2
8. लग्न की अन्तर दशा	11–1–95

दशाफल–

शुक्र महादशा में अन्य ग्रहों की अन्तरर्दशा क़ा विवेचन पारस्परिक सम्बन्ध एवं उनकी रेखाओं के आधार पर किया जाना चाहिए।

तीसरी विधि–

कुछ विद्वानों के अनुसार विंशोत्तरी पद्धति को ही आधार बनाकर उसके दशा वर्षो को बराबर 12 भागों में बांट लेने चाहिए। उसमें प्रत्येक भाग एक भाव को प्रतिनिधित्व देगा।

उदाहरणतः शुक्र महादशा के 20 वर्षो को 12 भागों में बाटें तो एक भाग एक वर्ष, 8 महीने के बराबर होगा।

चूंकि शुक्र जन्मकुण्डली में वृष राशि में है, अतः पहली अर्न्तदशा वृष राशि की होगी। फिर मिथुन, कर्क, सिंह आदि राशियों की।

दशा भाग इस प्रकार बनेगा। शुक्र महादशा (11–1–75 से 11–1–95 तक)

अन्तर्दशाएं–

वृष	11–1–75
	9–1
मिथुन	11–9–76
	8–1
कर्क	11–5–78
	8–1
सिंह	11–1–80
	8–1
कन्या	11–9–81
	8–1
तुला	11–5–83
	8–1
वृश्चिक	11–1–85
	8–1
धनु	11–9–86
	8–1
मकर	11–5–88
	8–1
कुम्भ	11–1–90
	8–1
मीन	11–5–91
	8–1
मेष	11–5–93
	8–1
	11–1–95 समाप्त

फलादेश

शुक्र महादशा में सबसे पहले वृष राशि की अन्तर्दशा चलेगी, जो कि 11-1-75 से 11-9-76 तक रहेगी।

शुक्राष्टक वर्ग में वृष राशि में 4 रेखायें है, जो की 'सम' द्योतक है, अतः इस अवधि में न लाभ रहेगा न हानि, अर्थात् समभाव बना रहेगा।

पर मिथुन राशि की अन्तर्दशा 11-9-76 से 11-5-78 तक रहेगी, और शुक्राष्टक वर्ग में मिथुन राशि में 6 रेखायें हैं, जो कि श्रेष्ठ सम्मान एवं धन लाभ की द्योतक हैं। अतः इस अवधि मे जातक का श्रेष्ठ सम्मान होगा एवं आर्थिक दृष्टि से श्रेष्ठता रहेगी।

इसी प्रकार आगे भी फल विवेचन समझना चाहिए।

इसी प्रकार इससे भी सूक्ष्म प्रत्यन्तर्दशा स्पष्ट करके भी फलादेश स्पष्ट किया जा सकता है।

गोचर

इस प्रकार से देखा जाय, तो अष्टक वर्ग का आधार ही गोचर का अर्थ है, कि ग्रह वर्तमान समय मे किन.किन राशियों पर भ्रमण कर रहे हैं। मूलतः गोचर फलादेश में चन्द्र को सर्वाधिक महत्व दिया जाता है।

चन्दमा मन का स्वामी है, सर्वाधिक वेगवान ग्रह है, अतः चन्द्रमा को तो महत्व दिया ही गया हैं। चन्द्र जिस राशि में है, उस राशि को लग्न मान करके भी उसी प्रकार फलादेश किया जाता है, जिस प्रकार जन्मकुण्डली देखकर।

पूर्व उदाहरण कुण्डली में मिथुन लग्न है, पर चन्द्रमा वृश्चिक राशि में है, अतः गोचर विचार करते समय वृश्चिक राशि को लग्न, धनु राशि को धन भाव, मकर राशि को प्रराक्रम भाव आदि समझ करके भी जो विचार या फलादेश किया जाता है, वह सही प्रामाणिक एवं गोचर विचार सिद्धान्तों के अनुकूल होता है।

चन्द्र लग्न प्रधानता देने पर उससे निम्नलिखित स्थानों पर निम्न ग्रह फलदायी माने गये है-

सूर्य-3, 6, 10,11

चन्द्रमा-1, 3, 6, 7, 10, 11

मंगल-3, 6, 11

बुध-2, 4, 6, 8, 10, 11

गुरु-2, 5, 7, 9, 11

शुक्र-1, 2, 3, 3, 4, 5, 8, 9, 11, 12

राहु-3, 6, 10, 11

केतु-3, 6, 10, 11

उदाहरणार्थ कुण्डली में चन्द्रमा वृश्चिक राशि में है, अतः चन्द्र लग्न वृश्चिक हुआ, जब सूर्य वृश्चिक राशि से तीसरे मकर राशि में होगा, जब वह शुभ फलदायी होगा।

पर यहां एक बात ध्यान रखने की है, जब सूर्य से आगे सातवें भाव में कोई ग्रह होगा तो सूर्य की राशियों का सीधा प्रभाव उस ग्रह पर पड़ेगा और उस ग्रह का सीधा प्रभाव सूर्य पड़ेगा। अतः सूर्य अपना शभुत्व खो बैठेगा, और तीसरे भाव में होने पर भी शुभ फल नहीं दे सकेगा।

अतः नीचे प्रत्येक ग्रह के शुभ गोचर स्थान और वेध स्थान स्पशष्ट कर रहा हूं-

सूर्य

शुभ गोचर स्थान 3, 6, 10, 11

वेध स्थान 9, 12, 4, 5

अर्थात् यद्यपि सूर्य के लिए तीसरा भाव शुभ माना गया है, पर नवें भाव में कोई ग्रह होने से (शनि के अतिरिक्त क्योंकि शनि सूर्य का पुत्र है, अतः पिता.पुत्र का वेध न्यायसम्मत नहीं) सूर्य का वेध होगा, फलस्वरूप सूर्य अपना शुभत्व खो बैठेगा।

इसी प्रकार सूर्य छठे भाव में शुभ है, पर बारहवें भाव में कोई ग्रह हो तो शुभता खो बैठेगा।

इसी प्रकार सूर्य दशम भाव में हो पर अन्य कोई एक या एकाधिक ग्रह चौथे भाव में हो, सूर्य एकादश भाव में हो, और अन्य ग्रह पांचवें भाव में हो तो सूर्य का शुभत्व क्षीण हो जायेगा।

इसी प्रकार अन्य ग्रहों के भी शुभ स्थान एवं वेध स्थान स्पष्ट कर रहा हूं-

चंद्र

शुभ गोचर स्थान-1, 3, 6, 7, 10,11

वेध स्थान-5, 9, 12, 2, 4, 8,

चन्द्रमा का वेध बुध को नहीं लगता क्योंकि बुध चन्द्रमा का पुत्र हैः अतः पिता.पुत्र का वेध सम्भव नहीं।

मंगल

शुभ गोचर स्थान-3, 6, 11

वेधस्थान-12, 9, 5

बुध

शुभ गोचर स्थान-2, 4, 6, 8, 10,11

वेधस्थान-5, 3, 9, 1, 8, 12

गुरु

शुभ गोचर स्थान-2, 5, 7, 9, 11

वेध स्थान-12, 4, 3, 10, 8

शुक्र

शुभ गोचर स्थान-1, 2, 3, 4, 5, 8, 9, 11, 12

वेधस्थान-8, 7, 1, 10, 9, 5, 11, 3, 6

शनि

शुभ गोचर स्थान-3, 6, 11

वेध स्थान-12, 9, 5

अब मैं प्रत्येक ग्रह का गोचर फल स्पष्ट कर रहा हूं-गोचर फल का आधार चन्द्र कुण्डली ही होता है, आगे जब सूर्य के पहले भाव का फल बताया जायेगा तो इसका अर्थ होगा चन्द्र स्थित राशि प्रभम भाव है, अतः उस राशि में जब सूर्य होगा तो सम्बन्धित फल होगा। इसी प्रकार अन्य ग्रहों के बारे में भी समझना चाहिए।

सूर्य

1. आर्थिक व्यय, व्यर्थ की परेशानी एवं प्रत्येक कार्य की सम्पन्नता में कुछ-न-कुछ बाधा। छाती में दर्द, क्रोध की अधिकता एवं व्यय की यात्राएं।

2. धन, नाश, सुख में न्यूनता, स्वभाव में जिद्दीपन, व्यर्थ का व्यय या अपव्यय, आंखों में तकलीफ तथा उसे पग-पग पर धोखे का शिकार होना पड़ता है।

3. धन लाभ, अकारण एवं आकस्मिक रूप से द्रव्य प्राप्ति, दूरस्थ स्थानों से शुभ एवं अनुकूल समाचार प्राप्त हो, रोग मुक्ति, शत्रुओं पर विजय, मुकदमे में लाभ तथा श्रेष्ठ मनोस्थिति।

4. पत्नी से झगड़ा, गृहस्थ जीवन में न्यूनता, शरीर में आलस्य, रोग उत्पन्न तथा सुखवर्धक कार्यों में बाधा।

5. शत्रु वृद्धि तथा शरीर में अस्वस्थता एवं बाधाएं, मन में चिंताएं तथा मानसिक विफलता।

6. शत्रुओं पर विजय, मुकदमे में जीत, आत्मिक प्रसन्नता एवं उत्तम स्वास्थ्य।

7. पेट गुदा या लिंग संबंधी रोग हो, बवासीर पीड़ा हो, सम्मान, हानि, मानसिक खिन्नता एवं चित्त में विकलता, व्यर्थ की यात्राएं तथा व्यक्ति को दीनता प्रदर्शित करनी पड़े।

8. समाज में एवं नौकरी में परस्पर मतभेद उभरे एवं गलतफहमियां बढ़े, पत्नी से झगड़ा, रोग वृद्धि आदि।

9. मित्रों, संबंधियों एवं परिचितों से विग्रह, व्यर्थ की मुसीबत गले लगना, दीनता प्रदर्शित करने के लिए बाध्य होना, उद्योग

व्यापार-व्यवसाय में असफलता, एक्सीडेंट, पेट संबंधी रोग तथा मानसिक परेशानियों में वृद्धि।

10. मनोवांछित कार्य में सफलता, उत्तम कोटि का स्वागत, भावनाओं की सन्तुष्टि, कार्य सम्पन्नता।

11. सम्मान ख्याति, आर्थिक लाभ, रोग मुक्ति, कोई ऊंची सफलता, एवं मनोनुकूल सिद्धि।

12. सही कार्यों में सही तरीके से सफलता, चरित्र वृद्धि, शत्रु से पीड़ित, मानसिक क्लेश आदि।

चन्द्रमा

गोचर वश चन्द्रमा अपनी जन्म राशि से जिस-जिस भाव में विचरण करता है, उसका फल निम्न पंक्तियों में स्पष्ट है-

1. भाग्योदय, मनोवांछित कार्य में सफलता, सुख सुविधाओं में वृद्धि, एवं दूरस्थ मित्र से शुभ समाचार मिलना।

2. सम्मान हानि, निरादर, व्यर्थ का विवाद एवं उससे मनस्ताप में वृद्धि, अपव्यय, आर्थिक दृष्टि से नुकसान तथा परेशानियों में वृद्धि।

3. मुकदमे में विजय, गृहस्थ जीवन में सम्पन्नता एवं सुख-सुविधाओं में वृद्धि, आर्थिक दृष्टि से लाभ की उज्जवल संभावनाएं।

4. दूसरों की विपत्ति गले मढ़ना, राज्य भय, चिन्ता, जी घबराना, यात्रा में नुकसान, कार्य सिद्धि में बाधाएं तथा मानसिक उद्वेलन।

5. शोक, व्यर्थ की चिन्ताएं, आर्थिक लाभ, व्यर्थ का भ्रमण।

6. सुख, सुविधाओं में वृद्धि, स्वास्थ्य लाभ, शत्रुओं पर सफलता, मुकदमे में जीत के आसार बढ़ना।

7. दूसरों के द्वारा सम्मान, सुख सुविधाओं में वृद्धि, कोई ऐसा कार्य या समझौता होना, जिससे भविष्य में लाभ पहुंचे, धन लाभ।

8. व्यर्थ की बाधाएं या परेशानियां, कार्य सफलता में संदिग्धता, अनिष्टफल।

9. मानसिक चिन्ता, व्यर्थ भ्रमण, उदर रोगों में वृद्धि, धन हानि, व्यापार में असफलताएं।

10. सफलता, कार्यसिद्धि, बाधाएं दूर होना तथा अपने कार्य की संसिद्धि से प्रसन्नता, उत्साह, उच्चाधिकारियों से मदद मिलना, भावनाओं में सफलता।

11. नये मित्रों से परिचय, उद्योग व्यापार या व्यवसाय में सफलता, शुभ समाचार मिलना तथा कठिनाइयों पर विजय।

12. एक्सीडेंट, शत्रु के द्वारा शारीरिक क्षति, व्यर्थ का व्यय, परेशानी एवं कठिनाई।

मंगल

1. कोई स्रोतों से कठिनाइयों में वृद्धि, कार्य सिद्धि में बाधाएं एव्रं आर्थिक दृष्टि से परेशानी एवं चिन्ताएं।

2. राज्य अथवा उच्चाधिकारियों के द्वारा कठिनाइयां उत्पन्न होना तथा वाद-विाद, मनस्ताप एवं शत्रुओं द्वारा हानि पहुंचना। वाक्यशक्ति में शिथिलता, सिर-दर्द आदि।

3. प्रत्येक कार्य में सफलता, आर्थिक कार्यों में पूर्ण सफलता, उच्चाधिकारियों से मित्रता एवं कार्य में सहयोग, धन प्राप्ति, शत्रुओं पर विजय।

4. नौकरी छूट जाना या अनुकूल स्थान पर तबादला न होना, बुखार, उदर रोग, ब्लड प्रेशर, शुभ कार्यों में बाधाएं, बन्धुओं से विग्रह।

5. शत्रुओं के सम्मान में वृद्धि होना, शत्रुओं का हावी होना, बुखार, कष्ट, चिन्ता, सफलता के मार्ग में कठिनाइयां, बन्धुओं से मतभेद तथा पुत्रों से वाद-विवाद।

6. शत्रुओं पर सफलता, अथवा शत्रुओं से समझौता, रोग निवारण, सफलता तथा समस्त कार्यों में मनोनुकूलता।

7. स्त्री से झगड़ा, ससुराल वालों से वाद-विवाद, नेत्ररोग,

उदर पीड़ा, ब्लड प्रेशर, रक्त संबंधी रोगों में वृद्धि।

8. एनीमिया, हाई ब्लड प्रेशर, रोग वृद्धि, शत्रुओं का हावी होना, एक्सीडेंट, सिर में चोट लगना, धननाश, व्यर्थ का भ्रमण एवं कठिनाइयों में वृद्धि।

9. मानक्षति, आदर, प्रतिष्ठा सम्मान में न्यूनता, अर्थनाश, शारीरिक दुर्बलता, वीर्य दोष तथा कई बाधाएं।

10. असफलता, शुभ कार्यों में विघ्न, परिश्रम करने पर भी सफलता के आसार न बनना।

11. प्रसिद्ध, अप्रत्याशित सफलता एवं प्रत्येक कार्य में सिद्धि, आर्थिक लाभ, शत्रु विजय एवं अधिकारियों का विश्वासभाजन होना।

12. धनहानि, अप्रत्याशित झंझट उठ खड़ा होना, नेत्र पीड़ा, सम्बन्धियों से झगड़े, चिन्ता, वृद्धि आदि।

बुध

1. आर्थिक हानि एवं परेशानियां, गलत एवं अयोग्य व्यक्तियों की सलाह, व्यर्थ की चिन्ता, यात्राएं पर कार्य सफल न होना।

2. प्रत्येक कार्य में बाधा तथा कठिनाइयां, अपने किसी सम्बन्धी रिश्तेदार के बारे में बुरी खबर मिलना, न्यूनाधिक बाधाएं होने पर भी आर्थिक लाभ।

3. शत्रुओं से नुकसान, राज्य चिन्ता, अधिकारियों द्वारा परेशान होना, व्यर्थ का वाद-विवाद, मनस्ताप, व्यर्थ की यात्राएं या इधर-उधर डोलना।

4. काफी दिनों से रूका हुआ कार्य हो जाना, आर्थिक लाभ, कठिनाइयों पर विजय, रिश्तेदारों के बारे में शुभ समाचार सुनना, धन लाभ एवं मानसिक सुख।

5. पुत्रों द्वारा मानमर्दन, घरेलू कारणों से झगड़े एवं लड़ाई, फलस्वरूप मनस्ताप, कठिनाइयों में वृद्धि।

6. समस्त शुभ कार्यों में विजय, प्रसिद्ध ख्याति एवं

आत्मसम्मान।

7. त्वचा से सम्बन्धित रोगों में वृद्धि, ब्लड प्रेशर, कई व्यक्तियों के बीच मतभेद होना, बाधाएं, चिन्ता एवं अस्त-व्यस्तता।

8. परिवार के सदस्यों में वृद्धि, शुभ कार्य होना, धन लाभ एवं वे सभी कार्य सम्पन्न होना जो कई दिनों से रूके हुए पड़े थे। आर्थिक दृष्टि से सफलता।

9. मानसिक परेशानियां तथा आर्थिक लाभ के बीच में कई व्यवधान एवं कठिनाइयां, शुभ कार्यों में विघ्न।

10. शत्रुओं का मानमर्दन, धनसंग्रह एवं व्यापारिक कार्यों में विशेष सफलता, गृहस्थ जीवन में सुख-सुविधाओं में वृद्धि तथा विश्वस्त मित्रों द्वारा सहयोग।

11. सन्तानोत्पति, धन लाभ एवं आर्थिक दृष्टि से विशेष सफलता, आत्मिक प्रसन्नता तथा सर्वसुख।

12. शत्रुओं द्वारा पराजय, मित्रों से सहयोग-बाधा, व्यर्थ का भ्रमण तथा विविध रोगों से पीड़ित रहना, गृहस्थ जीवन में बाधाएं।

गुरु

1. आर्थिक क्षति, आकस्मिक बाधा तथा दैवी प्रकोप, बहुत दूर की यात्रा होना, धन हानि।

2. सुख सुविधाओं में वृद्धि, गृहस्थ जीवन में विशेष प्रसन्नता के समाचार मिलना, आर्थिक लाभ तथा दूसरों को प्रभावित कर सकने में सफलता।

3. अपनी स्थिति में भी न्यूनता, एक स्थान से दूसरे स्थान पर भटकने की प्रवृति, व्यक्तिगत कार्यों में बाधाएं तथा मानहानि एवं आर्थिक चिन्ता।

4. बन्धुओं द्वारा कुचक्र रचा जाना, चौपाये जानवर से शारीरिक क्षति। पिछले बुरे कार्यों का बुरा परिणाम भोगना।

5. घर में पुत्र उत्पन्न, सन्तान सुख, सन्तान की उन्नति या उसका नौकरी लगना सर्वांगीण उन्नति, राज्य-कृपा तथा राज्य में लाभ श्रेष्ठ अनुकूल समय।

6. अपने चचेरे-ममेरे भाइयों में विद्रोह या झगड़ा, रोग वृद्धि, दिमाग का असन्तुलन, मित्रों का भी शत्रुवत् व्यवहार करना तथा आर्थिक क्षति।

7. सुख समृद्धि एवं प्रसन्नता का माहौल, उत्तम स्वास्थ्य तथा लाभ में वृद्धि, वाहन सुख या नया वाहन खरीदना तथा उत्तम कोटि से भाषण देने की क्षमता बनना।

8. रोग वृद्धि, व्यर्थ की यात्रा एवं कार्य सिद्धि में बाधा तथा कठिनाइयां, विविध समस्याओं से सामना तथा आर्थिक हानि।

9. समस्त प्रकार के सुख सौभाग्य में वृद्धि एवं लाभ, प्रभाव वृद्धि, हिम्मत बढ़ना तथा सम्मान, ख्याति एवं यश में वृद्धि।

10. आर्थिक हानि तथा कार्य सिद्धि में विलम्ब या बिगाड़, पदच्युति, प्रोमोशन में बाधा, सन्तान की चिन्ता, अप्रिय समाचार मिलना।

11. स्वास्थ्य सुधार, पुत्र लाभ, सम्मान ख्याति, प्रशंसा एवं यश में वृद्धि।

12. आदर्श या लक्ष्य च्युति, आर्थिक हानि, भय चिन्ता एवं बुरे स्वप्न दिखाई देना।

शुक्र

1. समस्त प्रकार की सुख सुविधाओं में वृद्धि एवं आत्मिक प्रसन्नता, सुखमय जीवन में वृद्धि, आर्थिक लाभ तथा अनुकूल अवसर मिलना।

2. आर्थिक लाभ से मानसिक प्रसन्नता, विविध स्रोतों से धनागम, आनन्दमय जीवन, प्रत्येक कार्य में सिद्धि एवं श्रेष्ठता।

3. आर्थिक दृष्टिकोण से श्रेष्ठ, व्यापार-व्यवसाय में सफलता, सम्मान वृद्धि एवं ख्याति।

4. नये-नये मित्र बनना एवं मित्रों से लाभ, शत्रुओं पर विजय तथा आर्थिक अनुकूलता।

5. सन्तान सुख, परिवार में नये-नये प्राणी का जन्म,

अर्थलाभ, संतान के कार्यों से सम्मान, यश एवं ख्याति लाभ, श्रेष्ठता।

6. सामान्यतः चतुर्दिक प्रसन्नता का वातावरण बना रहना, कार्य सिद्धि में अड़चनें एवं बाधाएं।

7. स्त्री कलह, स्त्री के स्वास्थ्य में निम्नता, एक्सीडेंट होने की सम्भावना, ससुराल की तरफ से, परेशानी एवं कष्ट।

8. मानसिक परेशानी तथा चरित्र में कमजोरी आना, बदनामी, आर्थिक हानि, व्यर्थ इधर-उधर भटकना तथा लक्ष्य च्युति।

9. नया मकान बनाना या खरीदना या उसके बारे में अनुकूल बात होना, भूमि सम्बन्धी कार्यों में लाभ, समस्त सुख-सुविधाओं में वृद्धि।

10. विवाह होने की सम्भावनाएं अनुकूल बनना। प्रभाव बढ़ना, ख्याति, यश एवं सम्मान मिलना, परिचितों में मतभेद एवं कुटुम्ब में कलह बढ़ना, धार्मिक कार्यों में रूचि एवं वृद्धि, अर्थ व्यय।

11. पतन, पराभव, शत्रुओं का हावी होना तथा विविध परेशानियों से ग्रस्त होना, मन में एक अज्ञात-सा डर बना रहना, कुटुम्बियों से कलह।

12. नये मित्रों से लाभ, विशेष धन लाभ, कोई अप्रत्याशित अनुकूल कार्य होना, हार्दिक प्रसन्नता।

शनि

1. आग लगना या जहर खाना या कोई विषैला प्रभाव, अनहोनी आकस्मिक दुर्घटना, परिवार की तरफ से कुचक्र रचना, मित्रों का भी शत्रुवत् व्यवहार करना, विदेश यात्रा, घर से दूर रहना, स्थानांतरण, असत्य बोलने की प्रवृति को बढ़ावा तथा स्थान-स्थान पर निरादर, अपमान का सामना करना।

2. रोग वृद्धि तथा विविध प्रकार के रोगों से ग्रस्त होना, धन नाश, जो भी कार्य करें उसमें हानि, अपमान, कठिनाइयां

होना, सन्तान बाधा, गर्भ च्युति।

3. धनागम आर्थिक स्रोतों का प्रादुर्भाव तथा विविध स्रोतों से धन लाभ, सुख सुविधाओं में वृद्धि, नौकरी लगना, मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण, नौकरी में वृद्धि तथा समस्त प्रकार के शुभ कार्य होना।

4. कुटुम्ब से अलग होना, मित्रों में विग्रह, फूट एवं लड़ाई होना, सन्देह बना रहना, तोड़-फोड़ एवं विध्वंसकारी प्रवृत्तियों को बढ़ावा, भावनाओं में निम्नता।

5. आकस्मिक घाटा हो, जिससे व्यापार में कठिनाइयां, मानहानि, सन्तान कष्ट, सन्तान की तरफ से बाधाएं, मन में उद्वेग एवं अशान्ति।

6. शत्रुओं पर विजय, मुकदमे में जीत, मित्रों तथा सम्बन्धियों में लोकप्रियता, रोगमुक्ति तथा कठिनाइयों पर विजय दिलाता है, विपरीत सैक्स के प्रति रूचि एवं सफलता।

7. व्यर्थ में ही इधर-उधर भटकना, कार्य सफलता में कई प्रकार की बाधाएं, स्त्री से झगड़ा, बच्चों से विग्रह एवं साथियों में मनमुटाव।

8. मानसिक प्रसन्नता, कठिनाइयों पर विजय, पर सन्तान बाधा, गर्भच्युति, पशु हानि, मित्रों में विवाद, विग्रह एवं फूट, चोरी होने की सम्भावनाएं बढ़ना, स्वास्थ्य में बिगाड़, स्वभाव चिड़चिड़ा होना।

9. दरिद्रता, धन नाश, शुभ कार्य में बाधाएं एवं कठिनाइयां, मानहानि, परिवार के किसी वृद्ध व्यक्ति का मरण, दुःख चिन्ता एवं उद्योग।

10. सम्मान भंग, शील भंग, चरित्र हानि, आर्थिक हानि एवं प्रसिद्धि में बट्टा लगाना। आर्थिक हानि से मानसिक रूप से चिंतित बने रहना।

11. 'मूड' बदलना, विचारे हुए कार्यों में बाधाएं, कठिनाइयां एवं परेशानियां आना।

12. गलत कार्यों, धोखा रिश्वत आदि से विशेष धन प्राप्ति,

व्यय के कार्यों में व्यस्त रहना, समय का अपव्यय, आर्थिक हानि, इधर.उधर भटकना, स्वास्थ्य निम्नता, व्यापार में घाटा लगना, शत्रुओं की विजय तथा स्त्री पुत्रों को रोग।

राहु

1. शारीरिक क्षीणता, कष्ट।
2. धन नाश
3. विविध स्रोतों से लाभ एवं सुख वृद्धि।
4. घोर कष्ट
5. धन हानि
6. सुख सौभाग्य ख्याति सम्मान वृद्धि।
7. स्वास्थ्य हानि।
8. मृत्यु तुल्य कष्ट।
9. आर्थिक हानि।
10. लाभ।
11. समस्त सुख सम्पत्ति में वृद्धि।
12. आकस्मिक व्यय।

ऊपर मैंने प्रत्येक राशि में (भावनुसार) भ्रमण करते समय ग्रह क्या-क्या फल देते हैं, उसकी जानकारी दी है। अष्टक वर्ग के क्षेत्र में यह जानकारी सत्यता के निकट पहुंचाने में सक्षम होती है।

पर इस फल विवेचन के साथ.साथ ग्रहों की पुष्टता भी देख लेनी चाहिए। यदि ग्रह आठ रेखाओं से युक्त होगा, तो वह विशेष धनदाता, सुख प्रदायक एवं लाभकारी होगा पर वही यदि शून्य रेखायुक्त हुआ, तो कष्ट, बाधा या पीड़ा ही देगा।

नीचे अलग.अलग रेखाओं से सम्मन ग्रह क्या.क्या फल दे सकते हैं, इसकी जानकारी स्पष्ट कर रहा हूं-

सूर्य

8 रेखा-पूर्ण अनुकूलता, धनदायक।

7 " प्रसन्नता,ख्याति।

6 " उन्नति की ओर अग्रसर।

5 " धनदायक।

4 " सम–न शुभ न अशुभ।

3 " परेशानियों के बाद सफलता।

2 " मूर्खतापूर्ण कार्यों से हानि।

1 " स्वास्थ्य चिन्ता।

0 " मृत्यु या मृत्युसम कष्ट।

ऊपर प्रत्येक रेखायुक्त सूर्य का फल स्पष्ट किया है। उदाहरणार्थ सूर्य जब प्रथम भाव में जाता है, तो सूर्य से संबंधित फल आर्थिक व्यय, व्यर्थ की परेशानी...आदि तो प्राप्त होगा, पर फिर भी वह आठ रेखाओं से युक्त होगा, तो इन परेशानियों के बीच भी अनुकूल स्थिति बन सकेगी एवं लाभ हो सकेगा।

पर यदि सूर्य चार रेखाओं से ही युक्त हो तो उपर्युक्त फल ज्यों का त्यों समझा जाय, यदि सूर्य शून्य रेखा युक्त हो तो इस फल में विशेष निम्नता समझी जाए।

इस प्रकार ज्योतिषी को चाहिए कि वह गोचर फल कहते समय सूर्य की रेखाओं का भी अध्ययन कर ले।

जिस प्रकार ऊपर की पक्तियों में सूर्य के बारे में स्थिति स्पष्ट की है, उसी प्रकार अन्य ग्रहों के बारे में भी समझना चाहिए।

चन्द्र

8 रेखा–प्रसन्नता, संबंधियों से सहयोग।

7 " सहयोग।

6 " उच्चाधिकारियों से लाभ।

5 " साहस, सम्मान, वृद्धि।

4 " निम्न स्वास्थ्य।

3 " संबंधियों से लड़ाई।

2 " धन हानि।

1 " व्यर्थ परिश्रम, अपव्यय।

0 " विविध स्रोतों से दुख।

मंगल

8 रेखा–भूमि संबंधी कार्यों से लाभ।

7 " भाइयों से सहयोग।

6 " राज्य लाभ।

5 " सुख वृद्धि।

4 " सम–न लाभ न हानि।

3 " कौटुम्बिक कलह।

2 " पत्नी से झगड़ा, सन्तान चिन्ता।

1 " रक्त संबंधी रोग वृद्धि।

0 " आग लगना, उदर रोग एवं एक्सीडेंट।

बुध

8 रेखा–राज्य सम्मान।

7 " धन वृद्धि।

6 " सफलता।

5 " सम्बन्धियों से लाभ।

4 " उत्साह।

3 " अपव्यय।

2 " विविध रोग।

1 " त्वचा रोग।

0 " आकस्मिक हानि, मानहानि।

गुरु

8 रेखा–सम्मान लाभ, धन लाभ।

7 " प्रसन्नता, विविध आय के स्रोत बनना।

6 " नया वाहन मिलना।

5 " शत्रुओं पर विजय।

4 " सम।

3 " मानसिक चिन्ता।

2 " राज्य च्युति स्थानांतरण।

1 " धन हानि।

0 " विविध कष्ट।

शुक्र

8 रेखा–प्रेम में सफलता, पूर्ण भौतिक सुख।

7 " गहने बनना।

6 " प्रसन्नता।

5 " मित्रों से सहयोग।

4 " सम।

3 " रिश्तेदारों से झगड़ा।

2 " नौकरी में हानि, रोग वृद्धि।

1 " जलघात।

0 " प्रत्येक प्रकार का अभाव।

शनि

8 रेखा–प्रशासन एवं उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य मिलना।

7 " नौकरों से लाभ।

6 " शुभ प्रचार ख्याति।

5 " धनधान्य लाभ।

4 " सम।

3 " रोग वृद्धि, जेल, मुकदमा।

2 " धन हानि।

1 " झूठा लांछन।

0 " बीमारी।

ग्रहों का विशेष प्रभाव

अब प्रश्न यह उठता है कि ग्रह अपना शुभ या अशुभ फल कब प्रदान करते हैं?

प्रत्येक राशि तीस अंकों की होती है अर्थात् एक राशि पर एक ग्रह जब तीस अंश भुगतता है, तब अगली राशि में प्रवेश करता है–

सूर्य

पहले से दस अंशों तक भ्रमण तक में अपना फल प्रदान कर देता है।

चन्द्र

बीस से तीस अंश पर जब भ्रमण करता है।

मंगल

पहले से दस अंशों के बीच भ्रमण करते समय।

बुध

सम्पूर्ण राशि में एक सा फल।

गुरु

राशि के मध्य भाग में अर्थात् दस अंश से बीस अंश के बीच भ्रमण करते समय।

शुक्र

गुरु के समान ही।

शनि

चन्द्रमा के समान ही।

राहु

बुध के समान ही।

ऊपर गोचर फल बताते समय रोग वृद्धि, रोग आदि शब्दों का प्रयोग किया गया है। प्रश्न उठता है कि यह रोग शरीर के किस भाग में होगा? इसके लिए यह ध्यान रखना पड़ता है कि अमुक ग्रह किस नक्षत्र पर भ्रमण कर रहा है, नक्षत्र के अनुसार ही रोग स्थान ज्ञात क़िया जाता है-

नीचे प्रत्येक ग्रह की नक्षत्रानुसार रोग स्थान स्पष्ट कर रहा हूं-

सूर्य

1 (यानी पहला नक्षत्र अश्विनी) चेहरे पर।

2, 3, 4, 5 सिर में।

6, 7, 8, 9 छाती।

10, 11, 12, 13 दाहिना हाथ (बाहु)।

14, 15, 16, 17, 18, 19 दोनों पर।

20, 21, 22, 23 बायां हाथ।

24, 25 दोनों आंखें।

26, 27 गुप्तांग।

चन्द्रमा

1, 2 चेहरे पर।

3, 4, 5, 6 सिर में।

7, 8 पीठ।

9, 10 दोनों नेत्र।

11, 12, 13, 14, 15 हृदय।

16, 17, 18 बायें हाथ में।

19, 20, 21, 22, 23, 24 दोनों पैरों में।

25, 26, 27 दाहिने हाथ में।

मंगल

1, 2 चेहरे पर।

3, 4, 5, 6, 7, 8 पैरों में।

9, 10, 11 गोद में।

12, 13, 14, 15 बायें हाथ में।

16, 17 सिर में।

18, 19, 20, 21 चेहरे में।

22, 23, 24, 25 दाहिने हाथ में।

26, 27 विदेश गमन।

बुध, गुरु, शुक्र

1, 2, 3 सिर।

4, 5, 6 चेहरा।

7, 8, 9, 10, 11, 12 दोनों हाथों में।

13, 14, 15, 16, 17 कुक्षि।

18, 19 गुप्त स्थान।

20 से 27 दोनों पैरों में।

शनि, राहु, केतु

1 चेहरे पर।

2, 3, 4, 5 दाहिने पैर में।

6, 7, 8 दाहिने पैर में।

9, 10, 11 बायां हाथ।

12, 13, 14; 15 बायां हाथ।

16, 17, 18, 19, 20 कुक्षि में।

21, 22, 23 सिर में।

24, 25 नेत्रों में।

26, 27 पीठ में।

उपर्युक्त सभी ग्रहों के लिए नक्षत्रों की गणना चन्द्रराशि से की जानी चाहिए।

विशेष विचार

सूर्य

1. जब सूर्य 5,6 या 8 रेखाओं से युक्त हो और चन्द्रलग्न पर आए, तो विवाह यात्रा, शुभ कार्य एवं धनागमर्य के साधन जुटाता है।

2. यदि सूर्य 2,3,4 रेखाओं से युक्त होकर चन्द्र राशि पर आए तो प्रत्येक कार्य के विलम्ब, बाधा या परेशानी हो।

3. यदि सूर्य शून्य रेखा से युक्त होकर चन्द्र राशि पर आए तो प्रत्येक कार्य में बाधा एवं मृत्यु तुल्य कष्ट पाता है।

चन्द्र

1. चन्द्रमा अपनी राशि पर 6,7,8 रेखाओं से युक्त होकर आए तो वैवाहिक कार्यों में शुभ, शिक्षा में उन्नति एवं इन्टरव्यू सफलता प्रदान करने वाला होता है।

2. यदि चन्द्र 1,2,3,4 रेखाओं से युक्त होकर अपनी जन्मराशि पर आए तो कार्य में विलम्ब एवं कठिनाइयां उपस्थित होती हैं।

3. यदि चन्द्रमा अधिक रेखाओं से युक्त होता है, तो उसका वैवाहिक जीवन सुखी होता हैं।

मंगल

1. चन्द्र राशि या जन्म राशि पर जब मंगल आवे, और वह पांच या इससे अधिक रेखाओं से युक्त हो तो भूमिक्रय होना, कृषि कार्यो से लाभ एवं अचल सम्पत्ति सम्बन्ध्ह कार्यों में लाभ होता है।

2. यदि यून्य रेखा 1, 2 रेखाओं युक्त मंगल अपनी जन्मराशि या चन्द्र राशि पर गोचर करे, तो रक्त संबंधी रोगों में वृद्धि होती है।

बुध

1. बुध पांच या अधिक रेखाओं से युक्त होकर अपनी जन्मराशि या चन्द्र राशि पर गोचर करे तो शिक्षा में लाभ, इन्टरव्यू में सफलता, व्यापारिक प्रसार, विशेष लाभ आदि होता है।

2. यदि शून्य रेखा से युक्त होकर सूर्य लग्न पर गोचर करे तो व्यापार में आकस्मिक हानि एंव घाटा होता है।

गुरु

1. यदि गुरु 6, 7, 8 रेखाओं में युक्त होकर चन्द्रराशि या गुरु राशि पर गोचर करे तो मानसिक सन्तोष, आध्यात्मिक साधना में वृद्धि, वेदज्ञान, सन्तान, सुख एवं धार्मिक भावनाओं में वृद्धि होती है।

2. यदि गुरु 4,5 रेखाओं से युक्त हो तो ज्वेलरी से लाभ तथा अर्थ वृद्धि होती है।

3. शून्य रेखा से युक्त हो बदनामी होती है।

शुक्र

1. शुक्र 4, 5, 6, 7, 8 रेखाओं से युक्त होकर चन्द्रराशि या जन्मस्थित शुक्र राशि पर गोचर करे तो प्रेम सम्बन्धी कार्यों में सफलता मानसिक सन्तोष एवं सुख वृद्धि होती है।

विवाहादि कार्यों में लाभ होता है।

2. यदि शून्य रेखा या 1,2 रेखा से युक्त शुक्र गोचर करे तो बदनामी होती है।

शनि

1. 6, 7, 8 से युक्त शनि जब अपना जन्मराशि या चन्द्र राशि पर गोचर करता है, तब लोहा या कृषि सम्बन्धी कार्यों में विशेष सफलता एवं धन प्रदान करता है।

2. शनि शून्य 1 या दो रेखा से युक्त आर्थिक हानि ही देता है। गोचर फल अत्यन्त सावधानीपूर्वक करना चाहिए।

राहु अष्टक वर्ग

यद्यपि अष्टक वर्ग में सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र एवं लग्न इन आठों के विशेष वर्ग को अष्टक वर्ग की संज्ञा दी है। इसमें राहु की कोई गणना नहीं की गई है, भारत में अष्टक वर्ग विवेचन पर जो भी कार्य होता है, उसमें भी राहु को कोई स्थान नहीं दिया जाता क्योंकि राहु मूलतः एक छाया ग्रह ही है।

पर 'शुभ होरा प्रकाश' में राहु को भी अष्टक वर्ग में स्थान दिया है।

मेरी राय में राहु की गणना अष्टक वर्ग में करना न तो न्याय संगत है और न ही फलित नियमों के अनुकूल।

मात्र जानकारी के लिए राहु अष्टक वर्ग का विवेचन प्रस्तुत कर रहा हूं।

शुभ स्थान

सूर्य से–1,2,3,5,7,8,10

चन्द्र से–1,3,5,7,8,9,10

मंगल से–2,3,5,7,12

बुध से–2,4,7,8,12

गुरू से–1,3,4,6,8

शुक्र से–6,7,11,12

शनि से–3,5,7,10,11,12

लग्न से–3,4,5,9,12

कुल योग=44

राहु का न तो त्रिकोण शोधन संभव है और न ही एकाधिपत्य शोधन।

उदाहरण जन्मकुण्डली में राहु अष्टक वर्ग में रेखाएं प्राप्त होंगी–

राशि	रेखासंख्या
मेष	3
वृष	5
मिथुन	3
कर्क	2
सिंह	5
कन्या	1
तुला	6
वृश्चिक	6
धनु	2
मकर	5
कुंभ	1
मीन	5
	योग=44

राहु भ्रमण फल

(चन्द्र राशि से)

1. बीमारी, परेशानी एवं कष्ट।
2. धन नाश।
3. उत्तम स्वास्थ्य, प्रसन्नता एवं सुख।
4. खतरा, बीमारी एवं विविध दुःख।
5. आर्थिक हानि।
6. प्रसन्नता।
7. हानि, कष्ट।
8. एक्सीडेंट।
9. मानसिक परेशानी।
10. शत्रु वृद्धि।
11. प्रसन्नता, भौतिक सुखों में वृद्धि।

12. व्यर्थ का व्यय।

इस प्रकार राहु फल विवेचन कर फलादेश करना चाहिए।

उपग्रह

ज्योतिष ग्रन्थों में सर्वत्र ग्रहों की चर्चा है, पर उपग्रहों का वर्णन नहीं के बराबर मिलता है, पर जब हम सूक्ष्म वर्ग फल जानना चाहते हैं, या गोचर को अपने फलादेश का आधार बनाते हैं, तो हमें उपग्रहों की जानकारी एवं उनके निष्पन्न फल का यथेष्ट ज्ञान होना आवश्यक हो नहीं परमावश्यक है।

इस प्रकरण में मैं संक्षिप्त में उपग्रहों की चर्चा करूंगा।

मुख्यतः नौ उपग्रह हैं, जिनके नाम निम्न हैं-

1. मान्दि
2. यमकष्टक
3. अर्द्ध प्रहार
4. काल
5. धूम
6. व्यतीपात
7. परिधि
8. इन्द्रधनु एवं
9. उपकेतु

मान्दि

दक्षिण भारत में मांदि की बहुत अधिक चर्चा है एवं इसे काफी महत्व दिया जाता है, कुछ ज्योतिषी विद्वान तो जन्मकुण्डली में भी मांदि की स्थापना कर देते हैं, यद्यपि यह अभीष्ट नहीं।

दिन में मान्दि का समय कैसे ज्ञात किया जाए, इसकी सरल विधि यह है-

यदि दिनमान 30 घड़ी हो तो-

रविवार को सूर्योदय के 26 घटी बाद मांदि समय होगा।

सोमवार को 22 घटी सूर्यास्त तक।

मंगलवार को 18 घटी बाद सूर्यास्त तक।

बुधवार को 14 घटी बाद सूर्यास्त तक।

गुरुवार को 10 घटी बाद "

शुक्रवार को 6 घटी बाद "

शनिवार को 2 घटी बाद "

यह ध्यान रहे कि एक घटी चौबीस मिनट के बराबर होती है।

यदि दिनमान 30 घटी से ज्यादा या कम हो तो उसी अनुपात में मांदि का समय भी ज्यादा या कम होगा।

उदाहरणार्थ दिनमान 32 घटी हो तो सोमवार को मान्दि का समय 24 घटी के बाद से सूर्यास्त तक रहेगा और यदि दिनमान 29 घटी हो तो सोमनार को मांदि का समय 21 घटी के बाद से सूर्यास्त तक होगा।

रात्रि के समय मांदि निकालने का तरीका

रविवार को सूर्यास्त के बाद 10 घटी से सूर्योदय तक।

सोमवार को 6 घटी बाद से सूर्योदय तक।

मंगलवार को 2 " "

बुधवार को 26 " "

गुरुवार को 22 " "

शुक्रवार को 18 " "

शनिवार को 14 " "

रात्रिमान यदि 30 घटी से कम या ज्यादा हो तो उसी अनुपात से मांदि का समय भी कम या ज्यादा होगा।

मांदि निकालने की विधि

मांदि और गुलिक एक ही है। कुछ इसे मांदि कहते हैं और कुछ गुलिक।

दिनमान के आठ भाग कीजिए। सात भागों के स्वामी सात ग्रह होते हैं, पर आठवें भाग का स्वामी कोई नहीं होता, यह आठवां भाग शनि का होता है। शनि के ही इस भाग को मांदि कहते हैं।

जिस दिन जो वार होता है, उसी वाराधिपति से गणना करनी चाहिए, जो समय शनि का होता है, वह मांदि होता है।

उदाहरणार्थ रविवार है, तो रवि से गणना करने पर-रवि, सोम, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि-शनि सातवां होता है, अब यदि दिनमान 32 घटी है, तो इसके आठ भाग किए, प्रत्येक भाग चार घटी हुआ, चूंकि शनि सातवां है, अतः सातवां भाग 28 घटी पर समाप्त होगा, यही समय मांदि का समाप्ति काल है।

इस समय का इष्ट स्पष्ट कर लग्न जो निकाला जाएगा वही मांदि लग्न होगा। दिन में मांदि निकालने की विधि तो ऊपर दे ही दी है, रात्रि में मांदि निकालने के लिए जो वार हो, अर्थात् रविवार को(रवि से पांचवा गुरु) सूर्यास्त के बाद रात्रिमान के आठ भागों में से पहला भाग गुरु का, दूसरा शुक्र का तथा तीसरा शनि का होगा।

यमकंटक

यमकंटक भी उपग्रह है, इसका समय निम्न प्रकारेण होता है-

रविवार को 18 घटी बाद
सोमवार को 14 "
मंगलवार को 10 "
बुधवार को 6 "
गुरुवार को 2 "
शुक्रवार को 26 "
शनिवार को 22 "

यह दिनमान 30 घटी मानकर बताया गया है, यदि दिनमान कम ज्यादा हो तो उसी अनुपात से समय कम ज्यादा करके

समझना चाहिए।

आगे अर्द्ध प्रहार एवं काल में भी इसी प्रकार समय न्यूनाधिक कर समझना चाहिए-

अर्द्ध प्रहार

रविवार	14	घटी बाद
चन्द्रवार	10	"
मंगलवार	6	"
बुधवार	2	"
गुरुवार	16	"
शुक्रवार	22	"
शनिवार	18	"

काल

रविवार	2	घटी बाद
सोमवार	26	"
मंगलवार	22	"
बुधवार	18	"
गुरुवार	15	"
शुक्रवार	10	"
शनिवार	6	"

धूम

सूर्य स्पष्ट में 4 राशि 13 अंश तथा 20 कला जोड़ने से धूम स्पष्ट निकल आता है।

व्यतिपात

12 राशि में धूम स्पष्ट किया जाए तो व्यतिपात स्पष्ट होता है।

उदाहरणार्थ धूम स्पष्ट 5 राशि 18 अंश 14 कल हो तो-

12-0-0 में से

5-18-14 ;ण किया

6-11-46 व्यतिपात स्पष्ट

परिधि

व्यतिपात स्पष्ट में 6 राशि जोड़ने से परिधि स्पष्ट हो जाती है। परिधि का दूसरा नाम परिवेश भी है।

इंद्र चाप

यदि परिधि स्पष्ट को 12 राशि में से घटाया जाए तो शेष इंद्र चाप स्पष्ट होगा।

उपकेतु

इंद्रचाप में 16 अंश 40 कला जोड़ने से उपकेतु स्पष्ट हो जाता है। यह उपकेतु प्रसिद्ध ग्रह केतु से भिन्न है।

सूर्य स्पष्ट

उपकेतु में 1 राशि जोड़ने से सूर्य स्पष्ट आ जाता है।

फल कथन

गुलिक फल

1. लग्न में यदि गुलिक हो तो जातक क्रूर स्वभाव, चौर्य-प्रवृत्ति से युक्त, कठोर भाषा बोलने वाला तथा मंद बुद्धि होता है। सन्तान सुख लगभग उसे नहीं के बराबर मिलता है। अधिकाधिक भौतिक एवं भीरू प्रकृति का होता है।

2. यदि गुलिक दूसरे भाव में हो तो जातक असत्यभाषी, कलहप्रिय, गरीब, दर-दर भटकने वाला तथा जुबान का कच्चा होता है। ऐसा जातक स्थूल बुद्धि का कमजोर होता है।

3. तीसरे भाव में जातक क्रोधी, घमण्डी स्वभाव का एवं अन्यन्त लालची होता है, सभा सोसाइटी में यह विचरन नहीं कर सकता, एकान्तप्रिय होने के साथ-साथ यह शराबी, जुआ खेलने

वाला एवं भाग्यहीन होता है।

4. चतुर्थ भाव में गुलिक हो तो जातक बन्धु-बान्धवों का विरोध करने वाला होता है तथा उसे जीवन में वाहन सुख नहीं मिलता।

5. यदि गुलिक पांचवें भाव में हो तो जातक की सन्तान सुख में न्यूनता रहती है, पुत्रों द्वारा वह अपमानित होता है तथा कम उम्र का होता है।

6. छठे भाव में गुलिक हो तो जातक झूठ बोलने वाला, प्रेतात्मा कार्य करने का शौकीन, जादू टोने टोटकों पर विश्वास करने वाला तथा साहसी होता है।

ऐसे जातक का नाम उसके पुत्र के सत्कार्यों से होता है।

7. जब गुलिक सप्तम भाव में हो तो जातक कलहप्रिय, पत्नी से शत्रुता रखने वाला एवं जगत द्रोही होता है, वह एक से अधिक स्त्रियों से सम्पर्क रखता है तथा अपव्ययी होता है।

8. यदि गुलिक अष्टम भाव में हो तो जातक ठिगना नेत्रविकार युक्त, वाक्‌दोष प्रधान तथा साहसी होता है।

9. यदि गुलिक नवें भाव में हो तो जातक को कुटुम्ब का सुख नहीं मिलता है।

10. दशमभाव में गुलिक हो तो वह पापी, अधर्मी एवं धार्मिक स्थलों का तिरस्कार करने वाला होता है।

11. एकादश भाव में गुलिक हो तो जातक वीर, साहसी, विद्वान एवं धनी होता है।

12. द्वादश भाव में गुलिक स्थित हो तो जातक अपव्ययी एवं दरिद्र होता है।

विशेष विचार

1. गुलिक जिस ग्रह के साथ बैठ जाता है, वह चाहे कितना ही कारक हो, उसे दूषित कर देता है एवं उसका कारकत्व नष्ट कर देता है।

2. अब मैं प्रत्येक ग्रह के साथ गुलिक स्थिति फल स्पष्ट

कर देता हूं।

3. सूर्य के साथ हो तो जातक को बहुत कम सुख मिलता है या पिता अल्पायु होता है।

4. यदि चंद्रमा के साथ हो तो उसे माता का सुख नहीं मिलता अथवा माता अल्पायु होती है।

5. यदि मंगल के साथ हो तो जातक को भाइयों का सुख नहीं मिलता अथवा भाई अल्पायु होते हैं।

6. बुध के साथ हो तो जातक को हिस्टिरिया या पागलपन हो जाता है।

7. यदि गुरु के साथ हो तो जातक धर्मद्धेषी, नास्तिक, पाखडी एंव कठोर होता है।

8. यदि शुक्र के साथ गुलिक हो तो जातक बहुस्पी भोगी होता है, तथा अधिकतर नीच नीच स्त्रियों से सम्पर्क रहता है।

9. शनि के साथ हो तो जातक को सफेद कोढ़ हो जाता है।

10. यदि राहु के साथ गुलिक हो तो जातक को रक्त सम्बन्धी रोग होते हैं तथा उसकी मृत्यु जहर खाने से होती है।

11. यदि केतु के साथ हो तो जातक अग्नि से जलकर मरता है।

12. यदि गुलिक त्याज्य काल में हो तो जातक राजा के घर में भी जन्म लेकर दरिद्र ही रहता है।

विद्वानों के अनुसार त्याज्य काल निम्न है-

बिचघटी

यदि प्रत्येक नक्षत्र को 60 घटी मान लें तो(ज्यादा कम हो तो उसी अनुपात में घटियों में न्यूनाधिक समझना चाहिए)

अश्विनी	50 घटी से	54 घटी तक
भरणी	24 "	28 "
कृत्तिका	30 "	34 "

रोहिणी	40 "	44 "
मृगशिरा	14 "	18 "
आर्द्रा	21 "	25 "
पुनर्वसु	30 "	34 "
पुष्य	20 "	24 "
आश्लेषा	32 "	34 "
मघा	30 "	34 "
पूर्वाफाल्गुनी	20 "	24 "
उत्तराफाल्गुनी	18 "	22 "
हस्त	21 "	25 "
चित्रा	20 "	24 "
स्वाती	14 "	18 "
विशाखा	14 "	18 "
अनुराधा	10 "	14 "
ज्येष्ठा	14 "	18 "
मूल	57 "	60 "
पूर्वाषाढ़ा	24 "	28 "
उत्तराषाढ़ा	20 "	24 "
श्रवण	10 "	14 "
घनिष्ठा	10 "	14 "
शतभिषा	18 "	22 "
पूर्वाभाद्रपद	16 "	20 "
उत्तराभाद्रपद	24 "	28 "
रेवती	30 "	34 "

2 व्यतिपात योग

3 वैद्युति योग

4 भद्रा

5 क्षयतिथि

6 वृद्धितिथि

7 कुलिक अर्धयाम, पातयोग, विष्कुंभ एवं वज्रयोग

8 परिधि योग का पूर्वाद्ध

9 गंड योग की पहली छः घड़ी

10 व्याघात योग की 9 घड़ी

उपर्युक्त सभी त्याज्य काल कहलाते हैं।

यमकंटक

13. यमकंटक जिस ग्रह के साथ बैठता है, उस ग्रह के प्रभाव को सौ गुना बढ़ा देता है।

14. यमकंटक जिस भाव में बैठता है, उस भाव की विशेष वृद्धि करता है।

15. गुलिक शनि के समान एवं यमकंटक गुरु के समान प्रभाव युक्त समझने चाहिऐं।

अर्द्ध प्रहार

16. अर्द्ध प्रहार का फल बुध के समान समझना चाहिए।

काल

17. काल का फल राहु ग्रह के समान समझना चाहिए।

धुम

18. यह जिस ग्रह के साथ बैठता है, उस ग्रह के प्रभाव को नष्ट कर देता है और जिस भाव में बैठता है उस भाव को नाश कर देता है।

19. यह लग्न में हो तो विकलता, उद्वेग, चौर्य भय, विषपान, अग्निदाह आदि की सम्भावनाएं उग्र करता है।

व्यतिपात

20. यदि लग्न में हो तो निश्चय ही जातक की मृत्यु जंगली जानवर या चौपाए पशु के सींगों की मार से होती है।

परिधि

21. लग्न में हो तो जलघात होती है।
22. जलोदार रोग होगा।
23. जीवन में जेल जाएगा।

इन्द्रचाप

24. पत्थर की चोट लगने से मृत्यु की सम्भावना बनाता है।

उपकेतु

25. बिजली गिरना
26. ऊपर से गिरकर मृत्यु
27. संघर्ष में तेज शस्त्राघात से मृत्यु
28. उपकेतु यदि लग्न में हो तो–अल्पायु

29.	"	दूसरे भाव	"	कांतिहीन
30.	"	तीसरे	"	पराक्रमी
31.	"	चौथे	"	दुःखी
32.	"	पांचवें	"	सन्तानहीन
33.	"	छठे	"	पीडित
34.	"	सातवें	"	नपुंसक
35.	"	आठवें	"	अपघात
36.	"	नवें	"	पापी
37.	"	दसवें	"	भ्रमणशील
38.	"	ग्यारहवें	"	लाभप्रद
39.	"	बारहवें	"	अपव्ययी

विद्वानों को चाहिए कि वे जन्मपत्रिका में उपग्रह कुण्डली बनाकर इनका भी स्थापन कर फलकथन करें तो वे सत्यता के अत्यधिक सन्निकट होंगे।

उदाहरण

पीछे के पृष्ठों में हमने अष्टक वर्ग पर विशद विवेचन प्रस्तुत किया, जो कि फलकथन की प्रामाणिक पद्धति है। हिन्दी में इस प्रकार की पुस्तक का अभाव था, जिसमें अष्टक वर्ग के बारे में पूर्ण विवेचन हो।

पाठकों के लाभार्थ इस परिच्छेद में महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के अष्टक वर्ग दे रहा हूं, जिससे पाठक समझ सकें एवं सत्यता के निकट पहुंच सकें-

पंडित जवाहर लाल नेहरू

जन्म 14 नवम्बर 1889

समय 11-20(पी0 एम0)

जन्म कुण्डली

लग्न	कर्क
सूर्य	वृश्चिक
चंद्र	कर्क
मंगल	कन्या
बुध	तुला
गुरु	धनु
शुक्र	तुला
शनि	सिंह
राहु	मिथुन
केतु	धनु

अष्टक वर्ग

सूर्य-6, 6, 5, 3, 4, 7, 3, 2, 5, 0, 3, 4

चंद्र-5, 5, 5, 5, 3, 4, 4, 2, 6, 6, 3, 1

मंगल-4, 5, 2, 2, 4, 6, 2, 2, 4, 1, 2, 5

बुध–5, 6, 4, 5, 5, 4, 7, 3, 4, 1, 5, 4

गुरु–2, 3, 5, 7, 5, 3, 5, 5, 6, 4, 6

शुक्र–2, 5, 5, 5, 6, 4, 6, 5, 3, 2, 5, 4

शनि–2, 5, 4, 3, 4, 5, 3, 3, 4, 2, 2, 2

सर्वाष्टक–26, 35, 30, 30, 31, 33, 30, 22, 32, 18, 24, 26

ऊपर अंक राशि अनुसार है। उदाहरण सूर्याष्टक वर्ग में मेष राशि में 6 रेखाएं, वृष में 6, मिथुन में 4, कर्क में 3 आदि समझनी चाहिए।

स्वामी विवेकानन्द

जन्म 12 जनवरी 1863

समय 6–33(ए0 एम0)

जन्मकुंडली

लग्न	मकर
सू0 बु0 शु0	मकर
मं0	मेष
के0	वृष
च0 श0	कन्या
गु0	तुलर
रा0	वृश्चिक

अष्टक वर्ग

सूर्य–3, 4, 5, 5, 2, 4, 5, 5, 4, 2, 5, 4

चंद्र–3, 5, 3, 6, 4, 5, 5, 5, 1, 4, 4, 4

मंगल–2, 5, 4, 8, 2, 3, 3, 5, 3, 1, 3, 4

बुध–4, 7, 4, 4, 2, 6, 5, 4, 6, 4, 3, 5

गुरु–5, 6, 3, 4, 4, 7, 6, 2, 7, 5, 3

शुक्र–4, 5, 4, 4, 6, 4, 3, 5, 5, 4, 4, 4

शनि-1, 1, 3, 3, 4, 4, 3, 5, 3, 3, 6, 3

सर्वाष्टक-22, 33, 26, 30, 24, 30, 31, 35, 24, 25, 30, 26

हेनरी फोर्ड

(विश्व के प्रमुख उद्योगपति)

जन्म-30-7-1863

समय-2-00(पी0 एम0)

जन्म कुण्डली

लग्न	वृश्चिक
राहु	वृश्चिक
चंद्र	मकर
केतु	वृष
सू0 बु0	कर्क
मंगल	सिंह
गु0 शु0 श0	कन्या

अष्टक वर्ग

सूर्य-5, 5, 4, 3, 4, 4, 2, 3, 5, 6

चंद्र-5, 4, 4, 5, 2, 5, 3, 4, 4, 7, 3, 3

मंगल-4, 4, 4, 3, 4, 5, 0, 5, 4, 1, 3, 3

बुध-7, 5, 3, 4, 4, 5, 3, 6, 5, 1, 4, 4

गुरु-4, 6, 3, 6, 5, 5, 4, 6, 3, 3, 6, 5

शुक्र-5, 6, 6, 5, 1, 4, 2, 5, 6, 6, 3, 3

शनि-2, 3, 6, 5, 4, 1, 2, 3, 2, 5, 6, 2

सर्वाष्टक-33, 33, 30, 31, 24, 29, 18, 32, 25, 26, 30, 26

नक्षत्र

भविष्य कथन में नक्षत्रों का प्रभाव भी देखना पड़ता है। प्रत्येक नक्षत्र का अपना प्रभाव होता है। राशि की अपेक्षा नक्षत्र के द्वारा अधिक सटीक भविष्य कथन किया जा सकता है। राशियां तो समूह से बनती हैं। यदाकदा नक्षत्रानुसार नक्षत्र के एक या दो चरण अन्य राशि में भी मिल जाया करते हैं। अतएव उस राशि का भविष्य कथन रह जाता है। नक्षत्र के द्वारा कथन ठीक रहता है।

किस नक्षत्र का देवता कौन है और किस नक्षत्र में कौन-कौन अक्षर हैं। यह तालिका इस प्रकार है-

नक्षत्र	देवता	चरणाक्षर
अश्विनी	केतु	चू चे चो ला
भरणी	शुक्र	ली लू ले लो
कृतिका	सूर्य	आ ई ऊ ए
रोहिणी	चंद्र	लो वा वी यू
मृगशिरा	मंगल	वे वो का की
आर्द्रा	राहु	कू ध ड छ
पुनर्वसु	शुक्र	के को हा ही
पुष्य	शनि	हू हे हो हा
आश्लेषा	बुध	डी डू डे डो
मघा	केतु	भा भी यू ये
पूर्वाफाल्गुनी	शुक्र	टे टो पा पी
उत्तराफाल्गुनी	सूर्य	णू ण ण ह
हस्न	चंद्र	पे पो रा री
चित्रा	मंगल	रू रे रो वा
स्वाती	राहु	बी बू वे वो
विशाखा	गुरु	ना नी नू ने
अनुराधा	शनि	ना नी नु ने

श्लेषा	बुध	ना या यी यू
मूल	केतु	ये यो भा भी
पूर्वाषाढ़ा	शुक्र	यू ध धा ड़ा
उत्तराषाढ़ा	सूर्य	भे भो जा जी
श्रवण	चंद्र	खी खू खे खो
घनिष्ठा	मंगल	गा गी गू गे
शतभिषा	राहु	गो सा सी भू
पूर्व भाद्रपद	गुरु	से सो दा दी
उत्तर भाद्रपद	शनि	इ थ झ भ
रेवती	बुध	डे डो चा ची

राशियों के नक्षत्र और चरण इस प्रकार हैं-

राशि	नक्षत्र	चरण	नक्षत्र	चरण	नक्षत्र	चरण
मेष	अश्विनी	4	भरणी	4	कृतिका	1
वृष	कृतिका	3	रोहिणी	4	मृगा	2
मिथुन	मृग	2	आर्द्रा	4	पुनर्वस	3
कर्क	पुनर्वसु	1	पुष्य	4	आश्लेखा	4
सिंह	मघा	4	पूर्वाफाल्गुनी	4	उत्तरफाल्गुनी	1
कन्या	उत्तरफाल्गुनी	3	हस्त	4	चित्रा	2
तुला	चित्रा	3	स्वाती	4	विशाखा	3
वृश्चिक	विशाखा	1	अनुराधा	4	ज्येष्ठा	4
धनु	मूल	4	पूर्वाषाढ़ा	4	उत्तर आषाढ़	1
मकर	उत्तराषाढ़ा	3	श्रवण	4	घनिष्ठा	2
कुंभ	घनिष्ठा	2	शतभिषा	4	पूर्वभाद्रपद	3
मीन	पूर्वभाद्रपद	1	उत्तराभाद्रपद	4	रेवती	4

राशि स्पष्ट चक्र इस प्रकार है।

राशि	अक्षर
मेष	चू चे चो ला ली तु ले लो आ
वृष	ई ऊ ए ओ वा वी वू वे वो
मिथुन	का की कू ध ड़ छ के कां हा

कर्क	ही हू हं हां डा डी ड् डे डा
सिंह	भा भी मू मं को टा टी टू टे
कन्या	टो पा पी यू ष ण ठ पे पो
तुला	रा री रू रे रो ती ती तू ते
वृश्चिक	तो ना नी नू ने चे या यी यू
धनु	ये यो भा भी यू धा का गा ये
मकर	ओ जा अी खी खं खू खा गा गी
कुम्भ	गू गे गो सा सी पू से सो दा
मीन	दी दू थ फ भ दे दो चा ची

राशियों के देवता इस प्रकार हैं–

मंगल–मेष, वृश्चिक। शुक्र–वृषभ, तुला। बुध–मिथुन, कन्या। चंद्रमा–कर्क। सूर्य–सिंह। गुरु–धनु, मीन। शनि–मकर, कुंभ।

शरीर में राशियों का निवास इस प्रकार है–

मेष	मस्तक
वृष	मुख
मिथुन	हृदय
कर्क	वक्षस्थल
सिंह	उदर
कन्या	कटि
तुला	नाभि
वृश्चिक	लिंग
धनु	कंधा
मकर	घुटना
कुंभ	पिंडली
मीन	पैर

नक्षत्रों की मनुष्य में स्थिति इस प्रकार है–

अश्विनी	पैरों के ऊपरी भाग में
चरणी	पैरों के तलुवे में

कृतिका	सिर में
रोहिणी	कपाल पर
मृगशिरा	भौंहों में
आर्द्रा	आंखों में
पुनर्वसु	नाक
पुष्य	चेहरे पर
आश्लेषा	कानों में
मघा	होठों में
पूर्वा फाल्गुनी	दाहिने हाथ में
उत्तरा फाल्गुनी	बांयें हाथ में
हस्त	अंगुलियों में
चित्रा	ग्रीवा में
स्वाति	सीने में
विशाखा	छाती में
अनुराधा	उदर में
ज्येष्ठा	आमाशय में
मूल	कोष्ठ में
पूर्वाषाढ़ा	पीठ में
उत्तराषाढ़ा	रीढ़ में
श्रवण	कमर में
घनिष्ठा	गुदा में
शतभिष्ठा	दाहिनी जंघा में
पूर्वाभाद्रपद	बायीं जंघा में
उत्तराभाद्रपद	पिंडली में
रेवती	टखने

जिस नक्षत्र में जो भी जातक जन्म लेता है उस नक्षत्र से सम्बन्धित उसका अंग सक्रिय रहता है। उदाहरणार्थ मघा नक्षत्र का जन्म जातक कानूनी होगा। आश्लेषा का जन्म कान का कच्चा,

चुगुलखोर, शतभिषा पूर्वाभाद्रपद यायावर एक जगह टिकने वाला न होगा। नक्षत्र से संबंधित शरीर सक्रिय होगा।

राशि के द्वारा चरणाक्षर, चरणाक्षर के द्वारा नक्षत्र जानकर और भी सटीक भविष्य कथन किया जा सकता है। नक्षत्रों के गुणों के अनुसार मानव स्वभाव भी होगा।

सात्विक	तामस	राजसी
पुनर्वसु	अश्विनी	कृतिका
विशाखा	मघा	उत्तराफाल्गुनी
पूर्वाभाद्रपद	मूल	उत्तराषाढ़ा
आश्लेषा	आर्द्रा	रोहिणी
ज्येष्ठा	स्वाति	हस्त
रेवती	शतभिषा	श्रवण
	मृगशिरा	भरणी
	चित्रा	पूर्वा फाल्गुनी
	घनिष्ठा	पूर्वाषाढ़ा
	पुष्य	
	अनुराधा	
	उत्तराभाद्रपद	

नक्षत्रानुसार मनुष्य का स्वभाव भी होता है। अतएव जातक की सही दशा का ज्ञान करने के लिए उसके नक्षत्र को जानना आवश्यक है।

नक्षत्र एक दूसरे से अपना सम्बन्ध भी रखते हैं। उनकी परस्पर दृष्टि का भी एक दूसरे पर प्रभाव पड़ता है। उसका विवरण इस प्रकार है–

नक्षत्र	वह नक्षत्र जिनकी पूर्ण दृष्टि पड़ती है।
अश्विनी	स्वाति, विशखा
भरणी	अनुराधा, ज्येष्ठा
कृत्तिका	मूल, पूर्वाषाढ़ा
रोहिणी	उत्तराषाढ़ा, श्रवण

मृगशिरा	घनिष्ठा, शतभिषा, हस्त, उत्तराषाढ़ा, भरणी
भाद्रा	पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा
पुनर्वसु	श्रवन, घनिष्ठा, ज्येष्ठा, रेवती
पुष्य	शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद
आश्लेषा	उतराभाद्रपद
मघा	शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद
पूर्वाफाल्गुनी	उत्त्श्रभाद्रपद, रेवती
उतराफाल्गुनी	अश्वनी, चरणी
हस्त	कृतिका,रोहिणी
चित्रा	मृगाशिरा, आर्द्रा
स्वाती	पुनर्वस, पुष्य
विशाखा	आश्लेखा, मृघा
अनुराधा	पूर्वाफाल्गुनी
ज्येष्ठा	उत्तराफाल्गुनी, श्रवण
मूल	घनिष्ठा, शतभिषा
पूर्वाषाढ़	पूर्वाभाद्रपद
उत्तराषाढ़ा	उत्तराभाद्रपद
श्रवण	रेवती, अश्विनी, चरणी
घनिष्ठा	कृतिका, रोहिणी
शतभिषा	मृगाशिरा, आद्रा
पूर्वाभाद्रपद	पुनर्वसु, पुष्य
उत्तराभाद्रपद	आश्लेषा, मद्या
रेवती	पूर्वाषाढ़ा

जातक के मुख्य नक्षत्र पर इन नक्षत्रों की सीधी पड़ने वाली दृष्टि का भी विवेचन करना आवश्यक है। नक्षत्रों के लिंग का भी मनुष्य के पारिवारिक जीवन पर प्रभाव पड़ता है। नक्षत्रों के लिंग इस प्रकार हैं–

पुल्लिग	स्त्री लिंग	नपुंसक लिंग
अश्विनी	भरणी, कृतिका	मृगशिरा
पुनर्वस	रोहिणी, भार्द्रा	मूल
पुष्य	आश्लेखा, मघा	शतभिषा
हस्त	पूर्वाफाल्गुनी, चित्रा	
अनुराधा	स्वाति, विशाखा	
श्रवण	ज्येष्ठा, पूर्वाषाढ़ा	
पूर्वाभाद्रपद	उत्तराषाढ़ा, घनिष्ठा	
उत्तराभाद्रपद	रेवती	

नक्षत्रों का चरणाधिपत्य इस प्रकार है-

	चरण	डिग्री प्रारम्भ	डिग्री अन्त	स्वामी
अश्विनी	1.	00–00	3–20	मंगल, केतु, केतु
	2	2–20	6–40	सूर्य
	3	6–40	10–00	राहू
	4	10–00	13–20	शनि
भरणी	1	13–20	16–40	मंगल, शुक्र, शुक्र
	2	16–40	20–00	चंद्र
	3	20–00	23–20	राहू
	4	23–20	26–40	शनि
कृतिका	1	26–40	30–00	मंगल, सूर्य, सूर्य
	2	30–00	33–20	शुक्र राहू
	3	33–20	36–40	शनि
	4	36–40	40–00	बुध
राहिणी	1	40–00	43–20	शुक्र, चंद्र, चंद्र
	2	43–20	46–40	राहू
	3	46–20	50–00	शनि
	4	50–00	53–20	केतु
मृगशिरा	1	53–20	56–40	शुक्र, मंगल, मंगल
	2	56–40	60–00	बुध
	3	60–00	63–20	बुध गुरु
	4	63–20	66–40	शुक्र
आर्द्रा	1	66–40	70–00	बुध, राहु, राहु

	2	70-00	73-20	गुरु
	3	73-20	73-40	बुध
	4	73-40	80-00	शुक्र
पुनर्वस	1	80-00	83-20	बुध, बुध, गुरु
	2	83-20	86-40	शनि
	3	86-40	90-00	चंद्र, गुरु, चंद्र
	4	90-00	90-20	शनि, शनि
पुष्य	1	96-20	96-40	चंद्र, शनि, शनि
	2	96-40	103-20	बुध
	3	100-00	103-20	शुक्र
	4	103-20	106-40	राहू
आश्लेखा	1	106-40	110-00	चन्द्र, बुध, बुध
	2	110-00	113-20	शक्र
	3	113-20	116-40	
	4	116-40	120-00	गुरु
मघा	1	120-00	123-20	सूर्य, केतु, कतु
	2	123-20	126-40	सूर्य
	3	126-40	130-00	राहू
	4	130-00	133-20	शनि
पूर्वाफाल्गुनी	1	133-20	136-40	सूर्य, शुक्र, शुक्र
	2	136-40	140-00	राहू
	3	140-00	143-20	
	4	143-20	146-40	शनि
उत्तराफाल्गुनी	1	146-40	150-00	सूर्य, सूर्य, सूर्य
	2	150-00	153-20	बुध, शनि
	3	153-20	153-40	शनि
	4	153-40	160-00	बुध बुध
हस्त	1	160-00	163-20	बुध, चंद्र, चंद्र
	2	163-20	166-40	राहू
	3	166-40	170-00	शनि
	4	170-00	173-20	केतु
चित्रा	1	173-20	176-40	बुध, मंगल, मंगल
	2	176-40	180-00	बुध
	3	180-00	183-20	शुक्र
	4	183-20	18-40	शुक्र शुक्र

स्वाती	1	186–40	190–00	शुक्र, राहु, राहु
	2	190–00	196–20	गुरु
	3	196–20	196–40	बुध
	4	169–40	200–00	शुक्र
विशखा	1	200–00	203–20	शुक्र, गुरु, गुरु
	2	203–20	206–40	शनि
	3	206–40	210–00	शुक्र
	4	210–00	213–20	मंगल वंद्र
अनुराधा	1	213–20	216–40	मंगल, शनि, शनि
	2	216–40	220–00	बुध
	3	220–00	223–20	शुक्र
	4	223–20	226–40	राहु
ज्येष्ठा	1	226–40	230–00	मंगल, बुध, शनि
	2	230–00	233–20	केतु
	3	233–20	236–40	शुक्र
	4	236–40	243–20	बुध, केतु, केतु
मूल	1	280–00	243–20	बुधं, केतु, केतु
	2	243–20	246–40	गुरु शनि
	3	246–40	250–00	राहू
	4	250–00	253–20	गुरु, शनि
पूर्वाषाढ़ा	1	253–20	256–40	गुरु, शुक्र, शुक्र
	2	256–40	260–00	चंद्र
	3	260–90	263–20	राहू
	4	263–20	266–40	शनि
उत्तराषाढ़ा	1	266–40	200–00	गुरु, सूर्य, सूर्य
	2	200–00	273–20	शनि, राहु
	3	273–20	276–40	शनि
	4	276–40	280–00	बुध
श्रवण	1	280–00	283–30	शनि, चंद्र, चंद्र
	2	283–20	286–40	राहु
	3	286–40	290–00	शनि
	4	290–00	293–20	केतु
घनिष्ठा	1	293–20	296–40	शनि, मंगल, मंगल
	2	296–40	300–00	गुरु
	3	300–00	303–20	बुध

	4	303–20	306–40	शुक्र
शतभिषा	1	306–40	310–00	शनि, राहु, राहु
	2	310–00	313–20	गुरु
	3	313–20	316–40	बुध
	4	316–40	320–00	शुक्र
पूर्वाभापद	1	320–00	323–20	शनि, गुरु, गुरु
	2	323–20	326–40	शनि
	3	326–40	30–00	शुक्र
	4	330–00	333–20	गुरु चंद्र
उत्तराभाद्रपद	1	333–20	336–40	गुरु, शनि, शनि
	2	336–40	343–20	शुक्र
	3	340–00	343–20	
	4	343–20	346–40	राहु
रेवती	1	346–40	350–00	गुरु, बुध, बुध
	2	350–00	353–20	शुक्र
	3	353–00	356–40	मंगल
	4	356–40	360–00	गुरु गुरु

इस सारणी के द्वारा जातक का भविष्य अंक गणना कर और भी सूक्ष्म रूप से देखा जा सकता है। अतएव नक्षत्र, चरण, लिंगश नक्षत्र के चरण पर स्थापित ग्रह इन सबका विवेचन कर बहुत सटीक भविष्य कथन किया जा सकता है। अंक गणना द्वारा राशियों का विवरण फल इस प्रकार है।

राशि	शुभ समय	घातक समय	निवारण
मेष	9, 18, 27 प्रत्येक माह की तारीख तिथियां,तृतीया द्वादशी, दिन मंगलवार प्रहर–3 काम दिशा पूर्व मित्र मिथुन,कन्या, मीन।	1, 16, 11 प्रत्येक माह की तिथियां,–चतुर्थी,षष्ठी दिन विशेषरूप से कार्तिक माह के पहला शत्रु क़र्क,वृश्चिक।	मंगल का जाप करें।
वृषभ	6,15,24,प्रत्येक माह की तारीख तिथियां,षष्ठी द्वादशी,दिन शुक्रवार तीसरा प्रहर लाभ दिशा उत्तर मित्र कन्या, मकर।	1,10,15 प्रत्येक माह की तिथियां, पूर्णिमा, अमावस्या वार– मार्गशीर्ष के शनिवार,प्रहर चौथा, शत्रु–सिंह,धनु,मेष।	शुक्र का जाप करें।
मिथुन	5,14,23 प्रत्येक माह की तारीखें,तिथियां पंचमी, चतुर्दशी। दिन बुधवार, पहला प्रहर, लाभ दिशा उत्तर।	1,7,12 तारीखें।आषाढ़ माह का प्रत्येक सोमवार तीसरा प्रहर। शत्रु–कन्या या मकर।	बुध का जाप करें।

कर्क	2. 10, 20, 19 तारीखें। तिथियां 2 11 लाभ दिशा -ईशान मित्र-वृश्चिक मीन।	पौष माह का प्रत्येक बुधवार पहला प्रहर 2, 7, 12 तारीखें शत्रु-वृष, धनु, कुंभ।	सोमवार का व्रत रखें।
सिंह	1,10,19,28, प्रत्येक माह की तारीख। 1,10,15 तिथियां रविवार शुभ, तीसरा प्रहर दिशा उत्तर मित्र-धनु, मेष।	3,8,13 तारीखें ज्येष्ठ माह का प्रत्येक शनिवार पहला प्रहर शत्रु-वृश्चिक,मकर,मीन।	सूर्य का जाप करें।
कन्या	5,14,23 प्रत्येक माह की तारीख, 3,12 तिथियां दिन बुधवार, पहला प्रहर दिशा-पूर्व मित्र-मकर, वृषभ।	5,10,15 तारीख। भाद्रपद का प्रत्येक शनिवार पहला प्रहर शत्रु-मेष,धनु,कुम्भ।	गणेश पूजन करें।
तुला	प्रत्येक माह की 6,15,24 तारीख,3,6,9,12,15 सम तिथियां शक्रवार का दिन दूसरा तीसरा प्रहर तथा पूर्व दिशा शुभ मित्र-वृश्चिक, कुम्भ, मिथुन।	4,9,10 तारीख माघ माह का प्रत्येक गुरुवार, चौथा प्रहर शत्रु-मकर, कुम्भ,वृषभ।	महालक्ष्मी का पूजन करें।
वृश्चिक	प्रत्येक माह की 9,18,27 तारीख, तिथियां 3,6,9,12 शुभ दिन, गुरुवार सोमवार चौथा	1,6,11 अशुभ अश्वित माह का प्रत्येक शुक्रवार पहला प्रहर शत्रु-कुम्भ,मेष,मिथुन।	शिव पूजन करें।

	प्रहर दिशा पश्चिम उत्तर, मित्र-मिथुन, कर्क।		
धनु	3,12,21,30 प्रत्येक माह की तारीख शुक्रवार चौथा प्रहर दिशा,उत्तर मित्र-मेष,सिंह।	3,18,13 तारीखें। श्रावण माह का शुक्रवार पहला प्रहर शत्रु-मीन, वृष,कर्क।	गुरु पूजन करें।
मकर	प्रत्येक माह की 8,17,27 तारीख,तिथियां, 4,8,11 शनिवार चौथा प्रहर दिशा पश्चिम मित्र-मिथुन,तुला।	1,8,12 तारीखें। चैत्र का प्रत्येक गुरुवार तीसरा प्रहर शत्रु-वृष, कर्क।	शनि पूजन।
कुम्भ	प्रत्येक माह की 8,17,27 तारीख,तिथि 4,8,11,12 शनिवार चौथा प्रहर दिशा पश्चिम। मित्र -वृष,कन्या।	4,9,14 तारीखें वैशाख का प्रत्येक मंगलवार चौथा प्रहर शत्रु-वृष,मेष।	नृसिंह पूजन।
मीन	प्रत्येक माह की 3,12,21,30,3, 6,9,12,15 तिथियां,शुभ दिन गुरुवार,तीसरा प्रहर दिशा पूर्व। मित्र-कर्क, वृश्चिक।	6,10,15 तारीख फाल्गुन का प्रत्येक शुक्रवार चौथा प्रहर शत्रु—सिंह, मिथुन, तुला।	जगदम्बा का पूजन करें।
	अपने सारे कार्य इन शुभ समय पर करें। किसी प्रकार का विघ्न न होगा।	अशुभ समय का ध्यान रखें। नुकसान से अपने को बचा सकते हैं।	मूर्तिपूजन तथा उपवास दोनों कर सकतें

नक्षत्रानुसार फल

1. **अश्विनी**–जातक आभूषण प्रिय, सौंदर्य प्रेमी होता हैं। सुन्दर रख रखाव वाला,सुघड़ लोक मित्रता युक्त,स्थूलकाय पर प्राय क्षीण, विद्वान, स्वकार्य दक्ष, चतुर धन धान्य ऐश्वर्य से सुखी,विनयी, सर्वथा सुखी, यशस्वी, माननीय,स्वकार्य दक्ष, पशुवाहन युक्त, मानसिक दृष्टि से स्थिर, व्यावहार कुशल पर यदा.कदा विश्वासघाती, अधैयेयवान, दया व करूणा युक्त, चापलूस व उच्चधिकारियों के कृपा पात्र, किसी विघवा द्वारा धन भी प्राप्त करता हैं।

2. **भरणी**–जातक अगं भगं, विकलागं, क्रूर, अनेक स्त्रियों के सगं भोग करने वाला, रमणप्रिय, क्रूर, दुष्ट, कृतध्न वाचाल, निष्ठुर, स्वार्थ में लिप्त, विजयी, सत्यवादी, रोग.सहित चतुर सुखी भाग्यवादी एवं भाग्य भरोसे रहने वाला, धनवान, सुपुत्रवान, भोजनादि प्रिय, परदेशवासी, रोगों की प्रबलता नहीं होती, विचारो में यदा कदा अस्थिरता बनी रहती हैं।

3. **कृतिका**–आवश्यकता से अधिक भोजन करने वाला, परदाररत, भोग प्रिय, तेजस्वी, प्रसिद्ध माननीय, सुन्दर, भव्य द्रष्ब्व्य जीवन मूर्खता रहित, किसी विशेष विद्या के जानकार, आशवादी कृपण क्रोधी एवं छिद्रान्वेषी, शत्रुओं से पीड़ित, ख्यातिवान, स्त्रियों के सगं बैठने वाला, सुन्दर गोल मुख वाला होगा।

4. **रोहणी**–पवित्रता युक्त, सभ्य एवं मिष्ठभाषी, दढ़ प्रतिज्ञ, स्वरूपवान, छिद्रान्वेषी, कृषकाय, बुद्धिमान, पर स्त्रीगामी कामासक्त स्वकार्य दक्ष भोगाी, धनी, श्रेष्ठ स्मरण शक्ति युक्त, सदैव कार्य संलग्न, कारीगर, बुद्धिमान, नेत्र बडे व ललाट चौडा होगा।

12. उत्तरा फाल्गुनी–सर्व जनपिय्र, विद्या व बुद्धि द्वारा धन लाभ प्राप्त करेंग। भोग पिय्र, धनी, सुन्दर, माननीय, बुद्धिमान, काम संतप्त, मधुर भाषी व सत्संगति पिय्र, कलाकुशल उन्नति की अभिरूचि रखने वाले, काव्य प्रेमी व काव्य प्रणेता, धन सन्तान, भूमि-वाहन भृत्य से सुखी रहेंगे।

13. हस्त–जातक उत्साही, ढीठ, निर्दयी, चोर, मद्यपी काम

संतप्त तथा जातक विद्वानों का प्रेमी, धनी, प्रभावशाली व्यक्तित्व, सुन्दर नेत्र एंव मुख नौकर-व्यापारी या किसी विशेष कारीगरी पूर्ण कार्य से खूब लाभ होगा।

14. **चित्रा**–सुन्दरता प्रेमी, सुन्दर वस्त्र-सुगंधादि से सुखी, जातक अपने मत को गुप्त रखने वाले, चतुर शीलवान, धन-धान्य सम्पन्न, प्रतिष्ठित, परस्त्रीगामह, सुन्दर नेत्र युक्त चित्रकारी या अद्‌भुत कला को जानने वाला, बहुमूल्य वस्तूओं का विक्रता, लेखक या गणितज्ञ, औषधिक्रय-विक्रय से धनोपार्जन करेगा।

15. **स्वाति**–जातक जितेन्द्रिय, लज्जालुक्षमाशील, कष्ट सहिष्णु वाणिज्य-व्यापार में व्यस्त रहने वाला, दयालु, धामिक क्रिया-कलापों में भाग लेने वाला, प्रियभाषी, भोगासक्त धनवान, देव-गुरु अथित पूजक, ईश्वर भक्त परन्तॅ म्नछ बुद्धि तथा अपने ही घर में रहने का इच्छुक रहेगा।

16. **विशेषा**–दूसरों को संकट में डालने वाला, दूसरों को संतप्त करने वाला, लोभी, वाक्‌पट, गर्वित, क्रोधी, शत्रु विजयी, स्त्री वशीभुत सुन्दर व कांतियुक्त, सुन्दर दांतयुक्त, परदेश में रहने का अभिलार्षी, क्रय-विक्रय में दक्ष, प्रसिद्ध होकर भी कलह प्रिय तथा शुद्ध प्रेमी होगा।

17. **अनुराधा**–धन-धान्य सम्पन्न, वाल्यावस्था में परदेश में रहने वाला, भ्रमणशील अतिप्रिय भाषी सुखी, पूज्य यशस्वी, शक्तिशाली, राजद्वार से अनेगृहीत, देखने में सामान्य, दृढदेह तथा हास्यप्रिय व आप लम्बे समय तक भूख सहन नहीं कर सकता।

18. **ज्येष्ठा**–अत्यधिक क्रोधी परन्तु सन्तोष रूपी धनयुक्त कोई मद्य-मांस-मछली आदि का इन पर प्रभाव डालना कठिन् होता है।

25. **पूर्वाभाद्रपद**–मानसिक रूप से दुखी, परेशान, चतुर, धनवानपरन्तु कृपन स्त्रियों के वशीभूत, बोलने में ढीठ धूंत परन्तु कोयल हृदय, निर्बली और अच्छी मनोवृति वाले पर कभी-कभी अपनी मनोवृति विरूद्ध भी र्काय कर बैठते हैं।

26. **उत्तराभाद्रपद**–उचित भाषण करने वाले, सुसंगतयुक्त,

शत्रुविजयी, धार्मिक वक्ता, सुशील उदर, विद्वान, धन-धान्य सम्पन्न, सदैव कार्य संलग्न, सुकर्म में सहयोग कारक, सुजनों से मानवीय परन्तु कभी-कभी भयंकर क्रोध रहता है।

7. रेवती–सर्वांग पुष्ट, साहसी, सर्वप्रिय, धनी, प्रसिद्ध, कामातुर, प्रेमी, प्रेमनिमग्न सुन्दर, चतुर, सलाहकार, पुत्र मित्र परिवार से सुखी, चिर स्थाई धन-लक्ष्मी योग, कुशाग्र बुद्धि, विद्वान, सद्विचार युक्त, सुन्दर देह का स्वामी होता है।

जन्म दिन, फल विवेचन

रविवार–यदि आपका जन्म दिन रविवार को हुआ है तो आप लम्बे कद होगा तथा सिर गोल तथा छोटा होगा, तथा शरीर का रंग उजला रहेगा। जातक निभर्य, साहसी, उदार, अहंकारी, घोर स्वाभिमानी तथा पूर्ण र्धम भीरू, देशभम्त, स्पष्टवादी, विश्वस्त तथा महा भाग्यशाली रहेंगे। आप नेतृत्व तथा शासन कार्य में दक्ष तथा प्रशासनिक कार्य में दक्ष होंगे। आपकी प्रकृति विनोद-प्रिय, स्वभाव हंसमुख तथा आपका जीवन जन-सामान्य के लिए सुखर्वधक रहेगा। जीवन में भी उलझनें आती हैं परंन्तु उनका समाधान स्वंय ढूंढ लेंगे तथा कष्टों से पार पा लेंगे। जीवन में महत्वकांक्षा बढ़ी-चढ़ी रहेगी, यश की इच्छा भी विशेष रहेगी और यश मिलता भी है, परन्तु अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए ऊंचा निचा कोई भी कार्य कर सकते हैं। इन्द्रिय विग्रह में रत तथा इन्द्रियों की नियंन्त्रण में रखेंगे। शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। जन सामान्य को सहज ही में अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं।

सोमवार–सोमवार के दिन जन्म लेने वाले व्यक्ति कदके ठिगने, रंग गेहुंआ, चेहरा गोल, सिर बड़ा, आखें बड़ी तथा सिना चौड़ा व हाथ-पांव आदि शरीरिक अंग सुन्दर व मांसल होते हैं। व्यक्तिगत आकर्षक होगा तथा लोग सहज में ही आपकी ओर आकर्षित होते हैं। स्भावतः शिष्टभाषी, साहसी, दयालु, परोपकारी, विनम्र, चंचल तथा मनमोहक प्रकृति के होंगे। प्रेम प्रणय के मामले में धारणायें सदैं बदलती रहेंगी तथा प्रायः सदैव असफल भी रहते हैं। इतने पर भी गहरे प्रेमी व रोमांटिक होंगे। प्रकृति

जिज्ञासु तथा यात्रा का विशष शोक रहेगा तथा यात्रायें भाग्योदयकारी रहेंगी तीवन में जल-यात्रा व हवाई यात्राये भी होंगी।

स्थिरता व दृढ़ता का अभाव तथा भावुकता के कारण प्रायः लचीले व अस्थिर रहेंगे। कुटुम्ब, परिवार, जाति समाज के प्रति आपके हृदय में विशेष स्थान रहेगा। घर-परिवार से भी विशेष स्नेह रखेंगे। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का भाव प्रधान रहेगा। इस दिन उत्पन्न महिलायें श्रेष्ठ रमणी, उत्तम माता, कुशल ग्रहणी व स्वपन्न दृष्टा, रोमांटिक, संवेदनशील भावुक तथा अपनी सन्तान से विशष प्रेम रहेगा। प्रकृति चंचल रहेगी। अनावश्यक शक्ति का आप जीवन्न में प्रदर्शन करती रहेंगी तथा चरित्र प्रायः ढुलमुल रहेगा। सौन्दर्य एंव व्यक्तित्व आकर्षक तथा उत्तम रहेगा।

मंगलवार–मंगलवार के दिन जन्म लेने वाले व्यक्ति शरीर से कमजोर, लम्बी गर्दन, उभरे हुए गाल तथा घुंघराले बालों वाले होंगे शरीर का रंग सांवलापन लिए हुए होगा। सामने के दांत सुदृढ़ होंगे। आपका मस्तिष्क बड़ातीव्र होगा, युद्ध प्रिय एंव पूर्ण साहसी होंगे। प्रकृति लड़ाकू होगी। हर प्रकार के खतरे का सामना तन-मन से कर सकते हैं। सब मिलाकर निरन्तर आगे बढ़ते चले जाते हैं। सब मिलाकर निरन्तर आगे बढ़ते चले जाते हैं। सब मिलाकर स्वतन्त्रता प्रेमी, श्रेष्ठ सलाहकार, उत्तरदायित्व पदों का निर्वाह करने वाले धीर,वीर, गम्भीर, हठीएंव क्रोधी रहेंगे। निष्कपट हृदय तथा शिष्टाचार के निर्वाह में प्रवीण होंगे। अपने प्रेम तथा प्रणय का गली प्रकार निर्वाह करने वाले जीवन म अनेक कठिनाइयों का सामना करते रहना पड़ेगा। मंगल के दिन जन्म लेने वाली स्त्रियां असहिष्णु, स्वार्थी, चिड़चिड़े स्वभव की होंगी।

बुधवार–इस दिनमें जन्म लेने वाले पुरूष सामान्यतः सामान्य रूप के, ठिगने तथा फुर्तीले, होंगे।

रहन सहन उच्चस्तरीय तथा आजीवन सुखी जीवन व्यतीत करेंगे। हर कार्य जो आप करेंगे वह उच्चस्तरीय होगा तथा बहुत बड़े उज्नादक व उपभोकता बनकर उभरेंगे। प्रकृति सौंदर्य तथा ललित कलाओं, साहित्य, संगीत, चित्रकारी आदि से विशेष अनुराग व ममत्व होता है। आप अच्छे प्रशासक, लेखक, संपादक,

नेता,जज, वकील, चांसलर, नियंत्रक तथा निर्देशक होते हैं। समाज में मान-सम्मान इज्जत प्रतिष्ठा यश प्राप्त होता है तथा सफल नेतृत्व करते हैं। गुरुवार के दिन जन्म लेने वाले जिन व्यक्तियों का ललाट तथा मस्तक छोटा होता है। वे लोग आडम्बर प्रिय, बकवास करने वाले तथा श्रेष्ठ प्रबन्धक होते हैं। ये लोग दूसरों को सहज में ही अपने व्यक्तितत्व से प्राभावित कर सकते हैं। वे स्त्रियां जिनका जन्म गुरुवार को हो वे दयालु चरित्रवान, ईमानदार, उदार, कृपालु आकर्षक व्यक्तितत्व, सदगुण ग्रहक तथा आकर्षक होती हैं।

शुक्रवार–शुक्रवार के दिन जन्म लेने वाले व्यक्ति दुर्बल, कृशकाय, मजबूत स्कंध व गर्दन तथा शक्ति युक्त होंगे। शरीर का रगं गेहुंआ मस्तक बड़ा काले व घुंघराले बाल होंगे। तेज व प्रखर बुद्धि वाले, सौंदर्य प्रेमी, डींग मारने वाले, वाचाल प्रसन्न चित्त स्वच्छन्द प्रकृति के सफाई प्रेमी, हास्य व्यंग्य युक्त व विनोदी स्वाभाव के मूर्ति प्रेमी जीव होंगे। ये लोग दूसरों के झगड़ों को निपटाने में सिद्धहस्त तथा अच्छे ईमानदार, उत्तम सलाहकार कहे जा सकते हैं।

साहित्य,संगी नाटक, अन्यान्य ललित कलाओं दस्तकारी के प्रेमी तथा उक्त विषयों के स्वयं जानकार होते हैं। भवन निर्माण कला के विशेषज्ञ उत्तम, डिजायनर, सफल व्यापारी, धन-धान्य सम्पन्न, उत्तम गृहस्थ वाक्पटु, स्वाकार्य दक्ष, विनम्र व निरन्तर सफलता की सीढ़ियां चढ़ने चले जाते हैं। दूसरों की सहायता करने में हर समय आगे रहते हैं। यद्यपि अपने स्वार्थ की पूर्ति हेतु सदैव जागरूक बने रहते हैं।

सांकेतिक शब्द

प्रायः पंचांग ज्योतिष आदि लेखन में सांकेतिक शब्दों का उल्लेख होता है। इनका विवरण इस प्रकार हैं।

सोम (सो.)	सूर्य (सू.)
मगंल (मं.)	चंद्र (चं)
बुध (बु.)	मंगल (मं)

गुरु (गु.)	बुध (बु.)
शुक्र (श.)	गुरु (गु.)
शनि (श.)	शुक्र (श.)
रवि (र.)	शनि (श.)
	राहू (रा.)
	केतु (के.)

नक्षत्रों के संकेत इस प्रकार हैं–

अश्विनी	अ.
भरणी	च.
कृतिका	कृ.
रोहिणी	रो.
मृगशिरा	सृ.
आर्द्रा	आ.
पुनर्वस	पुन.
पुष्य	पु.
आश्लेषा	ऽलेशा.
मघा	म.
पूर्वाफाल्गुनी	पू.फा.
उत्तरा फाल्गुनी	उ.फा.
हस्त	ह.
चित्रा	चि.
स्वाति	स्वा.
विशाखा	वि.
अनुराधा	ऽनु.
ज्येष्ठा	ज्ये.
मूल	मू.
पूर्वाषाढ़ा	पू.षा.
उत्तराषाढ़ा	उ.षा.

श्रवण	श्र.
धनिष्ठा	ध.
शतभिषा	शत.
पूर्वाभाद्रपद	पू.भा.
उत्तराभाद्रपद	उ.भा.
रेवती	रे.

संज्ञक नक्षत्र

नक्षत्रों के समूह से एक नक्षत्र कहलाते हैं। इनकी युति भी भविष्य कथन में काम आती हैं। वह इस प्रकार हैं–

पंचक संज्ञक

धन्ष्ठिा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, रेवती।

मूल संज्ञक

ज्येष्ठा, आश्लेषा, रेवती, मघा, मूल, अश्विनी।

ध्रुव संज्ञक

उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, रोहिणी।

चर संज्ञक

स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, घनिष्ठा, शतभिषा।

मिश्र संज्ञक

विशाखा, कृतिका।

लघु संज्ञक

हस्त, अश्विनी, पुष्प

मैत्र संज्ञक

मृगशिरा, चित्रा, रेवती, अनुराधा।

दारूण संज्ञक

मूल, ज्येष्ठा, आश्लेषा, भाद्रा।

अधोमुख संज्ञक

आश्लेषा, विशाखा, मूल, कृतिका, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, मघा।

ऊर्ध्वमुख संज्ञक

आद्रा, पुष्य,श्रवण, घनिष्ठा, शतभिषा।

विर्थक मुख संज्ञक

अनुराधा, हस्त, पुनर्वसु, ज्येष्ठा, स्वाती, अश्विनी।

दग्ध संज्ञक

भरणी रविवार	चित्रा सोमवार
उत्तराषाढ़ा मंगलवार	घनिष्ठा बुधवार
रेवती शनिवार	ज्येष्ठा शुक्रवार

निम्नांकित महीनों में सामने लिखे नक्षत्र गणना में नहीं आते हैं—

चैत्र	अश्विनी, रोहिणी।
वैशाख	स्वाती, चित्रा।
ज्येष्ठ	उत्तराषाढ़ा, पुष्य।
आषाढ़	घनिष्ठा, पूर्वाफाल्गुनी।
श्रावण	उत्तराषाढ़ा, श्रवण।
भाद्रपद	शतभिषा, रेवती।
आाश्विन	पूर्वाभाद्रपद।
कार्तिक	कृषिका, मघा।
मार्गशीर्ष	चित्रा, विशाखा।
पौष	भाद्रा, अश्विनी, हस्त।
माह	श्रवण, मूल।
फाल्गुन	ज्येष्ठा, भरणी।

हमारे प्रेरणा साहित्य सम्बन्धी अन्य प्रकाशन

स्वेट मार्डन

832 सुखी जीवन
833 संकल्प जीवन
806 सुख का आधार मेहनत
487 व्यक्तित्व का विकास
488 आप क्या नहीं कर सकते
475 भागो नहीं, दुनिया को बदलो
476 उठो महान बनो
438 उन्नति कैसे करें
439 अपने को पहचानो
440 अलौकिक शक्तियाँ
392 चिन्ता हटाओ सुख पाओ
371 जीना सीखो
372 आगे बढ़ो
373 सफलता की कुंजी
374 आरोग्य की कुंजी
375 करोड़पति कैसे बनें?
400 जो चाहें सो पायें
401 आत्मविश्वास का चमत्कार
775 ज़िंदगी जीने के लिए

हमारे हास्य व्यंग्य एवं चुटकुले सम्बन्धी प्रकाशन

हास्य व्यंग्य

604 भानुमति का पिटारा अशोक अंजुम
734 हास्य व्यंग्य में डूबे 136 अजूबे
799 खुल्लम खुल्ला (हास्य व्यंग्य कविताएं)

चुटकुले

613	चटपटे चुटकुले	अशोक
361	रंगीन चुटकुले	
692	मजेदार चुटकुले	तरुण कु. सिंह
693	सर्वोत्तम चुटकुले	"
694	पति-पत्नी के जोक्स	"
695	बच्चों के जोक्स	"
696	अपटूडेट जोक्स	"
739	मिडनाईट जोक्स	"
819	सबरंग चुटकुले	"
820	प्रेमी-प्रेमिकाओं के जोक्स	आबिद रिज़वी

भारतीय अंक ज्योतिष और अष्टक वर्ग

हम बारिश का आगमन नहीं रोक सकते, मगर हम चाहें और यदि हमें पता हो तो बारिश से भीगने से बच सकते हैं। ज्योतिष का कार्य इसी प्रकार आने वाले सौभाग्य और दुर्भाग्य का पता लगा लेना है- और इसमें अष्टक वर्ग एक महत्त्वपूर्ण, सरल और सहज पद्धति है। इस पद्धति पर भारत के शीर्षस्थ उच्चकोटि के ज्योतिष विद्वान डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली ने जनसाधारण के लिये यह सरल और सहज पुस्तक लिखी है, जिसे पढ़कर साधारण से साधारण पाठक भी अपने सौभाग्य की जानकारी प्राप्त कर सकता है।

मूल्य : 50/-

एकमात्र वितरक

साहनी पब्लिकेशन

E-mail : sahni@sahnipublications.com
Website : www.sahnipublications.com